बङ्गाल, बिहार, उड़ीसा प्रान्तके—

प्राचीन जैन स्मारक
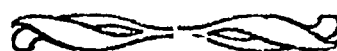
जिसको—

सर्कारी गेजेटियरोंसे स्व० जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारीजी
सीतलप्रसादजी ऑनरेरी सम्पादक जैनमित्र
सूरतने संग्रह किया।

प्रकाशकः—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
मालिक, दि० जैन पुस्तकालय—गांधीचौक, सूरत।
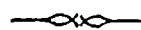
वीर-नि० संवत् २४७७

दूसरीवार] मूल्य-एक रुपया। [प्रति ५००.

प्रथमावृत्तिकी प्रस्तावना।

इस बातकी बहुत बड़ी आवश्यकता है कि जैनियोंके प्राचीन स्मारकोंके इतिहासका संग्रह किया जाय। सर्कारी पुरातत्व विभागने जैन स्मारकोंकी थोड़ी बहुत खोज करके उसका वर्णन ज़िलेके गेजेटियरोंमें दिया है। भाई बैजनाथ सरावगी (सेठ जोखीराम मूंगराज नं० १९० सूतापट्टी कलकत्ता) की प्रेरणासे हमने सन् १९२२ की वर्षात कलकत्तामें विताई और इम्पीरियल लाईब्रेरीमें बैठकर बंगाल, बिहार, उड़ीसाके गेजेटियरोंसे जैन स्मारकोंका वर्णन चुनकर उनको हिन्दीमें इसीलिये लिख दिया है, कि जो विवरण प्रगट है उसको जानकर जैन लोग कुछ अधिक खोज करें व प्रसिद्ध स्मारकोंकी रक्षा तथा विनय करें। हरएक इतिहास वे धर्मप्रेमीको इस पुस्तकको पढ़कर लाभ उठाना चाहिये और विशेप खोज करके विशेष विवरण प्रकाश करना चाहिये। हमने यदि कहीं संग्रह करने व उलथा करनेमें भूल की हो तो विचारशील भाई क्षमा करते हुए हमें सूचित कर अनुग्रहीत करेंगे।

देहली, ता० १२-१-२३. } ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद। ऑ० सम्पादक "जैनमित्र", सूरत।

निवेदन।

परम पूज्य जैनधर्मभूषण स्व० ब्रह्मचारीजी सीतलप्रसादजी प्राचीन दि० जैन साहित्य, पुरातत्त्व, खोज व अनेक संस्कृत, प्राकृत दि० जैन ग्रन्थोंके अनुवाद व टीका करके व उनको भेंट स्वरूप या अल्प मूल्यमें प्रकट करवा गये हैं यह आपकी सेवा तो चिरकाल तक भुलाई नहीं जा सकती।

इस प्रकार आपने श्री धर्मप्रेमी दानवीर सेठ बैजनाथजी श्रावगी कलकत्ताकी प्रेरणा व सहायतासे बंगाल, बिहार और उडीसा प्रान्तके प्राचीन जैन स्मारकोंकी खोज सरकारी गेझेटियरोंसे संग्रह करके वीर सं० २४४९ में (२८ वर्ष पहले) कलकत्तासे उसे प्रकट करवाया था, जो आज वर्षोंसे नहीं मिलता है और जैन स्मारक खोजियों द्वारा मांग तो आती ही रहती है. अतः उसे हमने श्री सेठ बैजनाथजी सरावगी कलकत्ताकी प्रेरणासे इस मंहगीमें भी पुनः छपवाकर प्रकट किया है।

बगाल, बिहार, उड़ीसा प्रान्तमें इन २८ वर्षोंमें कई सुधार हुए हैं, सराकों (जैन श्रावकों) की उन्नतिके लिये कई प्रचारक भेजे गये व कई पाठशालाएँ खुलीं व श्वेतांबर जैन समाज द्वारा तो वहां सराकोंमें जैन धर्म प्रचारका अच्छा कार्य हुआ व हो रहा हैं जिसके लिये श्वेतांबर जैन समाज धन्यवादके पात्र है। और दिगम्बर जैन समाजकी धर्मप्रचारक संस्थाओंसे निवेदन है कि वे भी वहां सराक जातिमें जैनधर्म प्रचारका कार्य पुनः चालू करें।

सूरत, रक्षाबंधन दिन }
वीर सं० २४७७ } निवेदकः—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया।

विषय-सूची ।

—ब्र० ब्र० सीतलप्रसादजीकृत—

बङ्गाल बिहार उड़ीसाके

प्राचीन जैन स्मारक।

जैनियोंके इस अवसर्पिणीकालमें अपने आत्माको पवित्र कर अन्य आत्माओंको संसार—समुद्रसे पार होनेका मार्ग दिखानेवाले चौवीस तीर्थंकर एक दूसरेसे बहुत कालका अन्तर देकर इस भरत क्षेत्रके आर्य्य खण्डमें हुए हैं—उनमेंसे अंतिम दो श्री पार्श्वनाथ और श्री महावीर बहुत प्रसिद्ध हुए हैं। जिनका जन्म क्रमसे बनारस और कुण्ड ग्राम (विहार) में हुआ है परन्तु जिनकी तपस्या और ध्यान तथा जीवनमुक्त अवस्थामें विहार इस विहार बङ्गाल और उड़ीसा प्रांतमें अधिकर हुआ है। तथा इन दोनों तीर्थंकरोंने इसी प्रांतमें हजारीबाग जिलेके श्री सम्मेदशिखर पर्वतसे और विहारके श्री पावापुर स्थानसे निर्वाण प्राप्त किया है। अनुमान २८०० वर्ष पहले श्री पार्श्वनाथ अपने उपदेशसे इस प्रांतको पवित्र कर रहे थे। उनके २५० वर्ष पीछे श्री महावीर स्वामीका उपदेश प्रसरित हुआ। जिस प्रांतमें इन निकट-वर्ती तीर्थंकरोंका अधिक विहार हुआ उस प्रांतमें जैनियोंके प्राचीन स्मारक बहुत होसक्ते हैं। सरकारके पुरातत्त्व विभागने कुछ स्मारकोंका पता लगाया है। यद्यपि अभी बहुतसे स्मारक मानवीय खोजकी राह देख रहे हैं। इस प्रांतके जिलोंके अलग २ गजेटियर अर्थात् वर्णन पुस्तकाकार मुद्रित है, उन्हींको पढ़कर जिस २ जिलेमें जो जो स्मारक मालूम हुए हैं उन्हींका दिग्दर्शन नीचे किया जाता है—

(१)

पटना जिला।

(गजेटियर छपा सन् १९०७)

इस जिलेकी चौहद्दी इस भांति है—उत्तरमें गङ्गानदी सारन मुजफ्फरपुर और दरभंगासे जुदा करती हुई, पूर्वमें मुङ्गेर, दक्षिणमें गया, पश्चिममें शाहाबाद। २६७९ वर्गमील भूमि है।

पटना जिलेके इतिहासमें दिया हुआ है कि **राजग्रहीका** इतिहास बहुत ही प्राचीन है—जिसका पूर्व इतिहास पौराणिक कथाओंमें गर्भित है। जहांसे इतिहासका प्रारम्भ होता है वहांसे हम इस राजग्रहीको शैशुनाग वंशके राजाओं द्वारा शासित पाते हैं। इस वंशका पांचवां राजा बिम्बसार हुआ है।

(नोट—यह बिम्बसार राजा श्रेणिकका दूसरा नाम है) सन् ईसवीके ६०० वर्ष पूर्वमें इसीने राजग्रहीके नगरको फिरसे बनाया था—इसीके समयमें श्री महावीर वर्द्धमानने जैनधर्मका प्रचार किया—इन महावीरस्वामीके मुख्य सिद्धांतोंमें एक सिद्धांत यह था कि साधुओंको बिलकुल नग्न रहना चाहिये। महावीरस्वामीने वैसाली (वर्त्तमान बसाढ) को त्यागकर ४२ वर्षतक विहार किया, अधिकतर उत्तर और दक्षिण बिहारमें भ्रमण किया।

(नोट—वैशाली श्री महावीरस्वामीकी जन्म नगरी इंग्रेज इतिहासकारोंने मानी है)। तथा सन् ई० के ४९० वर्ष पहिले पावापुरीसे निर्वाण पाया।

श्री महावीरस्वामीके मतके अनुसार चलनेवाले साधु निर्ग्रन्थके

नामसे जाने जाते थे। जिसने सर्व सामाजिक बंधन तोड़ दिये हैं उसे निर्ग्रंथ कहते हैं। ये ही साधु सर्व भारतमें फैल गए और जिन कहलाने लगे। श्री महावीरस्वामीको आत्मविजयी होनेसे जिन कहते थे।

बिम्बसारका पुत्र अजातशत्रु था इसने अपने पिताको मार कर राज्य किया था।

(नोट—जैन पुराणोंमें अजातशत्रुको कुणिक कहते हैं। इस कुणिकने अपने पिताको बंदीखानेमें डाल दिया था। एक दिन वह दयावान हो पिताको निकालने आया था। दूरसे पुत्रको आता देखकर वह यह शायद अधिक कष्ट दे—आर्ति उपजावे इससे स्वयं मर जाना चाहिए ऐसा विचार कर उसके आनेके पहिले ही श्रेणिक अर्थात् बिम्बसारने अपघात कर लिया। इस अजातशत्रुने पाटली पुत्र (पटना) का किला बनवाया। अजातशत्रुका पोता उदय था जो सन् ई० से ४३४ वर्ष पहले हुआ है। इसने पटना नगरकी नीव डाली और कुसुमपुर, पुण्यपुर और पाटलीपुत्र ये स्थान स्थापित किये। यह पटना नगर मगध देशकी ही नहीं किन्तु सर्व भारतकी मुख्य राजधानी होगया।

यह शिशुनागवंश सन् ई०से ४९० वर्ष पूर्व मिट गया। तब मगध नंद राजाओंके हाथमें आगया, नंदोंसे युद्धकर राजा चंद्रगुप्त मौर्यने सन् ई० से ३२१ वर्ष पाटलीपुत्रपर अपना अधिकार कर लिया।

(नोट—यह वही चन्द्रगुप्त है जिसके गुरु श्री भद्रबाहु श्रुतकेवली थे तथा जो जैनधर्मका गाढ़ श्रद्धावान था, व जिसने मुनि दीक्षा ली और मुनि प्रभाचन्द्र नाम पाया) यह बड़ा प्रतापी राजा था—सर्व भारतमें इसका राज्य था—बङ्गालकी खाड़ीसे अरब समुद्र

मन्दिर, हाट, तथा परोपकारी कार्योंकी सम्हाल भी म्यूनिसिपिलिटी करती थी। इस समयमें जैनधर्म सर्व भारतमें फैल रहा था। अनुमान सन् ई० के ३१० वर्ष पूर्व मगध देशमें भारी दुष्काल पड़ा था तब आचार्य भद्रबाहु करनाटक देशको चले गए और जो जैन मुनि मगध देशमें रहे उनका आधिपत्य स्थूलभद्रने किया। भद्रबाहुकी अनुपस्थितिमें दुष्कालके अन्तमें पाटलीपुत्रमें एक बड़ी सभा हुई और उस समय जैनियोंके ११ अंग व १४ पूर्व एकत्र किये गये।

(नोट)—श्वेताम्बर जैनोंका कहना है कि इस समय अंगोंको एकत्र किया गया तथा वे यह भी कहते हैं कि महावीर निर्वाणके ९०० वर्ष पीछे गुजरातके वलभीपुरमें सभा एकत्र हुई, तब देवर्द्धिगणके द्वारा अंग एकत्र किये गये। वर्तमानमें जो आचारांग आदि नामके ग्रन्थ श्वेताम्बर मतमें पाये जाते हैं वे मूल ग्रन्थ नहीं है, क्योंकि उस मूल आचारांगके १८००० पद थे। जिस एक पदके कुछ अधिक ५१ करोड़ श्लोक होते हैं। वर्तमान प्रचलित आचारांगमें तो बहुत थोड़े श्लोक हैं इसलिये श्वेताम्बर यतियोंने देवार्द्धिगणके समयमें यातो पूर्व संग्रहीतको काट छांट कर अपने मतके अनुसार ठीक किया होगा, या उसही समय सम्मति करके ग्रन्थोंका संकलन किया गया होगा और नाम अंगादिके इसीलिये दिये कि ये ही असली अंग माने जावें, सो ऐसा करना उचित न था। दिगम्बर जैन मतमें अनेक ग्रन्थ हैं जो अंगोंके कथनके अनुकूल हैं परन्तु उनका नाम दूसरा ही दिया कि किसीको भ्रममें न डाला जावे। मूल अंगोंका पूर्ण ज्ञान पुस्तकाकार नहीं पाया जाता है।

मौर्य्य वंश राजा अशोकके पीछे निर्बल पड़ गया। तथा सन् ई० से १५७ वर्ष पूर्व कलिङ्ग देशका जैन राजा **खारवेल** बहुत प्रसिद्ध हुआ। इसने पाटलीपुत्रपर भी चढ़ाई की और उस समय जो **सुंग महाराज** राज्य करते थे,उनको संधि करनेके लिये बाध्य किया। चौथी शताब्दीमें पटनाका राज्य गुप्त वंशके हाथमें था। इसी वंशमें चन्द्रगुप्त प्रथम हुआ है। उसका पुत्र समुद्रगुप्त सन् ई० ३२६ सं० ३७५ तक राज्य करता था।

चीन यात्री **फाहियान** सन् ई० ४०५ से ४११ तक इस देशमें रहा। वह कहता है "मध्य भारतमें मगधका नगर (पटना) सबसे बड़ा नगर है। यहांके लोग धनवान और उन्नतिशील हैं। वे लोग धर्म व परोपकारके साधनमें एक दूसरेके साथ ईर्षा करते थे। न्यायका साम्राज्य है। सर्व ही बड़े पंथोंपर यात्रियोंके लिये धर्मशालाएँ बनी हैं। दानकी संस्थाएं अनेक है। इस मध्य देशके धनवान और सभ्य गृहस्थोंने नगरके भीतर अनाथ घर और अस्पताल बना रक्खे है जहां सब देशोंके अनाथ, दरिद्री, वृद्ध और रोगी ठहर सकते हैं। उनको सर्व तरहकी मदद बिना कुछ लिये दयाभावसे दी जाती है। वैद्य उनकी चिकित्सा करते हैं और उनके सुखके लिए भोजन, पान औषधि आदि जो वस्तु चाहिये उसका प्रबन्ध किया जाता है।"

छठी शताब्दीके पीछे मध्य बङ्गालका राजा **सशांक** हुआ। यह बौद्ध मतका कट्टर शत्रु था। इसके पीछे सन् ई० ६०० और ६४८ में राजा **हर्षवर्द्धन** अथवा शिलादित्यने उत्तर भारतमें राज्य किया—इसने भी बौद्ध धर्मका विरोध किया।

पटनाके प्रसिद्ध जैन स्मारक।

आगमकुआं—यह पटनामें है। इस कुएँके पास **सुदर्शन सेठके** निर्वाणका मन्दिर है उसके लिए जैन पुजारी कहते हैं कि पाटली-पुत्रके राजाने इस भयानक कुएँमें जो पहले अग्निका भट्ठा था सुदर्शन सेठको डलवा दिया था परन्तु सेठजी बिना किसी बाधाके बच गए थे।

नोट—जैन पुराणोंमें सुदर्शन सेठकी कथा इस तरह प्रसिद्ध है कि यह पटनाके एक प्रसिद्ध सेठकी गायोंको चराने वाला ग्वाल था। एक शीतऋतुकी रात्रिको जब वह बनसे लौटता था मार्गमें एक निर्ग्रन्थ (नग्न) साधुको तप करते देखा—शायद तीव्रशीतकी बाधासे यह कष्ट न पावे इस दया भावसे पूर्ण हो उसने गायोंको पहुचा दिया और उन मुनि महाराजके चारों ओर लकड़ी जलाकर रात भर पड़ा रहा। सवेरे मुनि महाराजने इस ग्वालको उपदेश किया कि हमारे लिये अग्नि जलानेकी जरूरत नहीं थी, तथा दयावान मुनिने धर्मका उपदेश दिया, दया धर्म सिखाया व जैनोंका णमोकार मंत्र सिखाया, और आज्ञा की कि हरएक कार्यके प्रारंभमें इसको पढ़ाकर। उस ग्वालने मुनि वचनोंको अमूल्य समझ हृदयमें धारण किया और इसी तरह वर्तन करने लगा। मरण समय भी मंत्रका स्मरण किया और भाव सरल रक्खे जिससे मर कर उसी सेठके **सुदर्शन** नामका पुत्र हुआ। यह बड़ा विद्यावान व धर्मात्मा हुआ। स्वस्त्री संतोष व्रत पालता था। नगरकी रानीने आसक्त हो एक रात्रिको जब यह प्रोषधका उपवास किये बनमें ध्यान कर रहे थे, अपनी दासियों द्वारा महलमें उठा मंगाया। अनेक कुचेष्टाएं किये जाने पर भी सेठने शील भावको नहीं त्यागा। पत्थरवत् निश्चल रह

ब्रह्मचर्य्य व्रतको निवाहा। रानी जब असमर्थ हो गई तब क्रोध करके राजाको कहला भेजा कि सुदर्शन मेरी लज्जा लेनेको आया है। राजाने विचार किये विना ही मारनेका दंड दिया, कर्मचारियोंने जैसेही अग्निके भट्टेमें या अन्य रीतिसे मारनेका उद्यम किया—उसी समय निरपराध शीलवान सेठकी रक्षार्थ देवताओंने आकर सेठको सिंहासनपर विठाकर बहुत सम्मान किया। सेठने गृहत्याग मुनिव्रत धारे और पटने ही से मोक्ष धाम पाया। उनका निर्वाणस्थान गुलज़ारबागमे स्टेशनके पास बना है जहां हजारों जैन पूजाके अर्थ जाते हैं। ब्र० नेमिदत्त कृत संस्कृत आराधना कोशमें सेठ सुदर्शनका जन्म चम्पा नगरमें लिखा है संभव हो चम्पा ही जन्म नगरी हो परन्तु निर्वाण पटनेमें हुआ इसमें सन्देह नहीं है।

पावापुरी—यह प्रयायपुरीका अपभ्रंश है। विहार ग्रामसे आठ मील है। यहीं श्रीवर्द्धमान भगवानने मोक्ष प्राप्त की है। तालाबके मध्य जिन मन्दिरमें निर्वाणस्थल है। यहां सर्व जैन क्षेत्रोंकी भांति किसी जीवका बध नहीं किया जाता है। इस पवित्र झीलमें कोई मछली आदि जन्तु मारा नहीं जाता है। जब मछलिया मर जाती हैं उनके शरीरको चतुराईसे बाहर निकाल करके गाड़ दिया जाता है। यहाके पुजारी आज भी २४०० वर्ष पीछे श्री महावीरके गुणानुवाद गाते हैं।

बड़गांव—राजग्रहीसे उत्तर ७ मील और विहारसे दक्षिण पश्चिम ६ मील—यहां १००० वर्ष हुए बौद्धोंका बड़ा मठ व बड़ी विद्याशाला नालन्द नामकी थी जहां १०००० दश हजार साधु

रहते थे। खुदानेसे १६०० फुट लम्बा व ४०० फुट चौडा ऊजड़ चिह्न मिला है जिससे विद्यार्थियोंका निवास व पठन निश्चित है। यहींसे सन् ७४७ में पद्मसंभव साधु तिब्बत गया। इसने वहां लामा मतका प्रचार किया। लामा मत बौद्धका एक भेद है। यहां एक जैन मंदिर है जो नवीन रचित है परन्तु इसमें मूर्तियां व पत्थर बहुत प्राचीन हैं। इसमें शान्तिनाथस्वामीकी मूर्त्ति है। इसकी कारीगरी बहुत प्राचीन है। यह छठी शताब्दीमें बना था परन्तु इसका जीर्णोद्धार ३५० वर्ष हुए साविगराम शाहने कराया था। इस बडगावमें बहुत बडे २ टीले है, जिनमें ८ टीले मुख्य हैं, वहां सूरज पोखर तालाब है तथा इंद्रपोखर तालाब है (देखो बंगालके प्राचीन स्मारक सन् १८९५) See Ancient Monument Bengal 1895.

राजगिरी—पञ्च पहाडोंकी मध्यकी घाटीमें एक स्तूपके खण्ड भाग मिलते है। यह अब एक ईटोंका टीला है। अनुमान २० फुट ऊँचा है जिसके ऊपर एक छोटा जैन मन्दिर है जिसको मनिआर मठ कहते है। यह सन् १७८० में बना था। यहां जैनियोंकी दो प्रसिद्ध गुफाएं हैं जिनके नाम सप्तपान्नी या सप्तपर्ण गुफा तथा सोनभद्र गुफा है। हालमें डाक्टर ष्टीनने इस प्रसिद्ध गुफाका मार्ग नीचे प्रकार बताया है। यह गुफा वैभार गिरिकी उत्तर तरफ एक जैन मन्दिरके नीचे है। "इन मन्दिरोंमें जानेवाली सडक पर चढ़कर मैं पहले उस प्रसिद्ध खंडस्थान पर पहुंचा जिसको कनिंघम साहबने जरासिन्धकी बैठक लिखा है। इसको "Piplo stone cell" पिप्लो पाषाणकी कोठरी भी कहते हैं। यह सडक जैन मन्दिरोंकी

तरफ वैभारकी उत्तर पूर्वीय हद्दके पास होकर गई है । बीचमें बहुतसे स्थानों पर प्राचीन इमारतोंके चिह्न हैं । ये जैन मन्दिर यद्यपि आधुनिक बनावटके हैं तथापि जिन चबूतरों पर ये बने हैं वे प्राचीन बने मालूम होते हैं । तथा सातवीं शताब्दीमें चीन यात्री हुइनसांग आया था, वह लिखता है कि **पीपलो या वैभार गिरीके ऊपर निर्ग्रंथ साधु देखे गए,** यह पर्वत जैनियोंके लिये नवीन पवित्र नहीं है किन्तु प्राचीन पवित्र है । ये गुफाऍं श्री आदिनाथजीके मन्दिरके पास है यह मंदिर नीचेसे जाते हुए चौथे नम्बर पर है । द्वारपर १२ फुट है १० फुट आगे जाकर १६ फुट चौड़ा है । ये दोनों गुफाऍं बहुत प्राचीन हैं । इनमें एक गुफा पर शिलालेख है जो तीसरी शताब्दीका है जिससे प्रगट है कि मुनि वैरदेवके समयमें ये गुफायें जैन साधुओंके लिये निर्मित थीं जो निर्वाणके लिये साधन करते थे । राजगृही जैनियोंका तीर्थ है जो बहुत संख्यामें यहां आते हैं । वैभारगिरि पर पांच जैन मन्दिर हैं जिनमें एकमें किसी जैन तीर्थंकरकी चरण पादुकायें हैं । मध्यमकालके प्राचीन जैन मंदिर और भी हैं जिनमें बहुतसी जैन प्रतिमाएँ हैं किन्तु उनकी पूजाके लिये अब जैन लोग नहीं जाते हैं । इस वैभार गिरीके नीचे सात पानीके कुण्ड हैं जिनके नाम ये है—गंगा यमुना, अनंतऋषि, सप्तऋषि, ब्रह्मकुण्ड, काश्यपऋषि, व्यासकुण्ड, और मारकण्ड कुण्ड । विपुल गिरीके नीचे ६ कुण्ड हैं जिनके नाम ये हैं—सीता कुण्ड, सूरज कुण्ड, रामकुण्ड, गणेशकुण्ड, चन्द्रमाकुण्ड, और शृंगीऋषि कुण्ड । राजगृहीके सम्बन्धमें "बंगालके प्राचीन स्मारक" नामकी पुस्तकमें लिखा है कि प्राचीन राजगिरीमें ५ पर्वत हैं । वैभारगिरी, रत्नगिरी, सोनगिरि, उदयगिरि और विपुलगिरि,

इन सबों पर प्राचीन पाषाणोंके जैन मन्दिर निर्मित हैं। घाटोके मध्यमें एक स्तूप है जिसपर एक छोटा जैन मन्दिर है जिसको मनियार कुश्न या मनियार मठ कहते हैं (See Monuments of Bengal No 7 (of 1895.) भारतकी गुफाओंकी पुस्तकमें लिखा है कि राजगिरीमें जरासिंधकी बैठक और सोनभद्र गुफा है। यह गुफा मौर्य्यवंशसे सम्बन्ध रखती है जिस वंशने सन् ई० के ३१६ वर्ष पूर्वसे १८० वर्ष पूर्वतक राज किया था। दूसरी सप्त पर्ण गुफा है। (See Cave Temples of India by Furgussan and Burgess 1880)—

आरकिलाजिकल सरवे इण्डिया रिपोर्ट सन् १९०५–६ से इस भांति विदित हुआ है–"सन् १९०४ में यहां खुदाई की गई।

भारतमें सबसे प्राचीन प्रसिद्ध नगर राजग्रह है जिसके खण्डित स्थान मिलते हैं। यह पुराना नगर ३०, ४० मीलके मध्यमें है। राजगिरि ग्रामसे दक्षिणमें फल्गूनक पश्चिममें बैभारगिरिसे लेकर पूर्वमें गिरियक तक चला गया है। यष्टवनकी घटी और गिरियकके प्राचीन स्थानोंकी जांच होनी बाकी है। कुशागारपुर नामके प्राचीन नगरकी भीतें मौजूद हैं।

(नोट–पहले राजग्रहीको कुशागारपुर भी कहते होंगे) यहां कोटके भीतोंकी लम्बी २ दीवाले हैं। प्राचीन राजग्रहीकी ये भीतें इतिहास कालके पूर्वकी हैं भारतमें जितनी प्राचीन वस्तुएँ मिली हैं उन सबसे अधिक प्राचीन हैं–(These are the pre-historic walls of old Rajgiri the earliest remains that we know of in India) इन भीतोंके आगेके भाग बड़े-बड़े

सादे पत्थरोंसे बने हैं जो ५ फुट लम्बे हैं। ये कोटकी भीतें बान गङ्गाके पूर्व और पश्चिममें सबसे अधिक ऊंची है जहां इनकी ऊंचाई ११ से १२ फुट तक है। सोनगिरके शेष भागपर और वैभारगिरि बिपुलगिरि और रत्नगिरि पर ये भीतें बहुत टूट गई हैं और ७ या ८ फुटसे अधिक ऊँची नहीं हैं। इनकी मामूली मोटाई १७॥ फुटकी है। भीतरी दीवालें भी हैं तथा बाहरी भीतें वैभारगिरिसे सोनगिरि, रत्नगिरिसे छातागिरि, तथा छातागिरिसे नकवेकी पहाडी तक हैं। उदयगिरिसे बडे कोटकी भीत शुरू होती है जो कि पहाडोंके दक्षिणसे पूर्वीय हद्द तक चली गई है। इन भीतोंके बाहर निकले हुए गुम्बज आश्चर्यकारी हैं। इनके बनानेमें बडी शक्ति लगी होगी। ऐसे १७ गुम्बज देखे गये हैं जिनमें सात बानगङ्गा घाटीकी तरफ ४ प्राचीन नगरके पश्चिममें तीन पूर्वमें हैं तथा ४ उत्तर द्वारपर हैं। एक विपुलगिरिपर उत्तर द्वारपर है ५ वैभारगिरि पर हैं। इनमेंसे एक ४ मन्दिरोंमेंसे अन्तके मंदिरसे १५० कदम पर है, और एक सप्तपर्ण गुफाके सामनेके मंदिरसे ३०० कदमपर है। ऊपर जानेको सीढियां भी बनी है। देखनेके काममें आने योग्य भिन्न गुम्बज और हैं उनमेंसे दो बैभारगिरि पर हैं, एक उष्ण कुंडोंके ऊपर और दूसरा पिप्पल पाषाण गृह और चोटीके जैन मंदिरोंके मध्यमें है। यह गृह २६ फुट ऊंचा है। ८१॥ फुट उत्तरसे दक्षिण और ७८ फुट पूर्वसे पश्चिम है (इसीको जरासिन्धकी बैठक कहते हैं)। ४ ऐसे गुम्बज विपुलगिरि पर तथा एक रत्नगिरिकी पूर्वीय चोटीपर है।

गृद्धकूटगिरि—यह पांचों पहाड़ियोंसे ऊंची है। यहां राजा बिम्बसार (श्रेणिक) की बनाई सडक है जो १० कदम चौडी है। इसके द्वारा सुगमतासे जंगल होकर गृद्धकूट पर्वतपर पहुंच सकते हैं। इसमें कोई

सन्देह नहीं कि ऐतिहासिक कालके पूर्व यहां एक कोट था जो उदय-गिरिकी चोटीसे घाटी होकर छायागिरिकी चोटी तक गया था। यहां दो स्तूप हैं। दोनों ८० फुट चौड़े हैं। इनकी परीक्षा की गई तो १० या १२ शताब्दीकी १९ खण्डित मूर्तियोंके भाग मिले। नकवेकी पहाड़ीसे गृद्धकूटकी चोटी तक १॥ मीलमें बहुतसे प्राचीन पाषाणके घरोंके खण्डित भाग हैं।

करण्डवेनु वन—पिप्पल पाषाण गृह-प्राचीन नगरकी उत्तर तरफ यह एक बांसका बन है। कहते है कि बिम्बसार (श्रेणिक) ने बुद्धको भेट किया था। उत्तरीय हद्दकी तरफ डिबरियोंका एक बड़ा टीला है जो २७ फुट ऊंचा और ७७० फुटके घेरमें है। इसके ऊपर एक मुसलमान फकीरका स्थान था। कुछ खुदाई करनेसे एक कमरा ९ स्तूप तथा मूर्तियं मिलीं जो देखनेमें बुद्ध मतकी मालूम होती हैं। एक दूसरा टीला ३१ फुट ऊँचा है। १२ फुटकी गहराईमें हमको मौर्य्य कालकी ईंटोंकी दीवालें मिलीं। मध्यकालकी जैन मूर्तिके खण्ड भाग भी ईंटोंके कामके नीचे मिले जिससे प्रगट होता है कि पुरानी ईंटे पिछले घरके बनानेमें लगी होंगी—यद्यपि यह बात भी अच्छी तरह सम्भव है कि सबसे प्राचीन कालकी इमारतें इसी स्थान पर होंगी।

सप्तपर्णी गुफा—श्री आदिनाथजीके मन्दिरके नीचे वैभार गिरीकी चट्टानी भागमें दो गुफाएं हैं—वे एक दूसरेसे ५० फुट हटके हैं। सोनभद्र गुफा पहली है। इस गुफामें जानेके द्वारकी दाहिनी तरफ एक शिला-लेख तीसरी वा चौथी 'शताब्दीका है ऐसा उसके अक्षरोंसे प्रगट है। इसमें दो लाइन हैं।

प्राचीन जैन शिलालेख तीसरी शताब्दी

निर्वाणलाभाय तपस्वि योग्ये, शुभेगुहेऽर्हत्प्रतिमाप्रतिष्ठे ।
आचार्य्यरत्नम् मुयि वैरदेव, विमुक्तये कारय दीर्घतेज ॥

अर्थ—निर्वाणकी प्राप्तिके लिये तपस्वियोंके योग्य और श्री अर्हन्तकी प्रतिमासे प्रतिष्ठित शुभ गुफामें मुनि वैरदेवको मुक्तिके लिये परम तेजस्वी आचार्य पद रूपी रत्न प्राप्त हुआ ।

भावार्थ—मुनिसंघने मुनि वैरदेवको आचार्य स्थापित किया । यह जैन गुफा है। इसका प्रमाण यह है कि एक छोटी नग्न मूर्तिका नीचेका भाग जो कि निःसन्देह किसी जैन तीर्थङ्करकी मूर्तिका है इस शिला-लेखके पास एक चट्टानमें खुदा हुआ अब भी देखा जा सकता है ।

It is a Jain cave, proof—the lower half of a small naked male-figure doubtless an image of one of the Jaina Tirthankars still can be seen cut out of the rock to the inscription

नवीन राजग्रही—यहां एक टीला १०० फुट चौड़ाईका खोदा गया जिसमें एक सिक्का मिला है जिसमें गोल मोहर है और गुप्त कालके अक्षरोंमें 'जिन रक्षितस्य" लिखा है—नोट (यह अवश्य जैन राजा या गृहस्थका सिक्का है) तथा मस्तक रहित ध्यानमुद्राकी पद्मासन साधुकी मूर्ति मिली है ।

मनियारमठ—प्राचीन राजग्रहीके मैदानके पास एक टीला है उसके ऊपर एक छोटासा मन्दिर है। यहां भण्डारगृह माना जाता है—हिन्दू लोग इसको मनिकार मानके पूजते है जबकि जैन लोगोंने

शालिभद्रका मंदिर स्थापित किया है—और वह कहते हैं कि यहां शालिभद्रने अपना भण्डार एक कुएँके भीतर गाड़ दिया था—हम जब इस स्थानको खुदवा रहे थे तब कई जैन यात्रियोंने कहा कि वे इस स्थानको अपने शास्त्रोंके आधारसे दीर्घकालका जानते हैं। यह प्राचीन मंदिर उसके नीचेके भागकी मूर्त्तियोंसे गुप्त राजाओंके समयका सन् ३५० और ५०० के मध्यका मालूम होता है। इस मनियारके उत्तर पूर्व एक पाषाणकी बड़ी मूर्तिका आसन है इसपर केवल चरण रह गये है—इसपर कुछ अक्षर है जो प्राचीन कुशान लिपिके हैं—यह मथुराकी मूर्तियोंसे मिलता है और उसी समयका है।

नोट—राजग्रह एक बड़ा प्राचीन नगर है। जैन शास्त्रोंसे पता चलता है कि इस कालमें होनेवाले चौवीस तीर्थङ्करोंमेंसे श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थङ्करका जन्म यहीं हुआ था। यह क्षत्रिय वर्णमें हरिवंशके भीतर राजा सुमंत और रानी श्यामाके पुत्र थे। राज्य भोगके पीछे साधु हो श्रीसम्मेदशिखरसे निर्वाण प्राप्त हुए थे। श्रीमुनिसुव्रतनाथके निर्वाण हो जानेके पीछे और श्री नमिनाथके जन्म होनेके मध्यकालमें श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण अयोध्यामें हुए हैं। पांडुओंके समयमें यह नगरी जरासंघकी राजधानी थी। फिर श्री महावीरस्वामीके समयमें इस नगरीका वर्णन हम श्री महावीर चरित्र और श्री श्रेणिक चरित्रमें पाते हैं। महाराज उपश्रेणिकके पुत्र राजा श्रेणिक जिनका नाम बिम्बसार बौद्ध ग्रन्थोंमें है बहुत प्रसिद्ध राजा इस नगरीके होगए हैं—इनके कुलमें जैन धर्मका पालन था—कुमार अवस्थामें देशाटन करते हुए श्रेणिकको बौद्ध साधुओंके सम्बन्धसे बौद्ध धर्मका श्रद्धान होगया।

फिर विवाह होनेके पीछे बहुत काल राज्य करने तक यह बौद्ध धर्मका अनुयायी रहा । पीछे अपनी रानी चेलनाके उपदेशसे श्रेणिकने बौद्ध धर्मकी श्रद्धा छोडकर जैनधर्म पालना स्वीकार किया तब यह श्री महावीरस्वामीके शिष्य मुख्य श्रावकोंमें परिगणित हुआ—इसने प्राचीन राजग्रहीकी और भी शोभा बढाई । यह श्रेणिक अपने पुत्र कुणिक-द्वारा त्रासित होकर अपघातसे मरकर प्रथम नर्क गए हैं और आगामी उत्सर्पिणीकालमें जो चौबीस तीर्थङ्कर होंगे उनमें श्रेणिकका जीव **पद्मनाभ** नामका प्रथम तीर्थंकर होगा । अबसे अनुमान ८२००० ब्यासी हजार पीछे पद्मनाभ तीर्थंकर मोक्ष प्राप्त करेंगे ।

ऊपरके वर्णनसे प्रगट है कि यह प्राचीन जैन राजाओंका वास था । तथा यहां दिगम्बर नग्न जैन ऋषियोंका निवास था ।

यदि कोई ज्ञानवान जैनी पता लगावे तो राजग्रहीके पहाडोंके आसपास और भी प्राचीन चिह्न मिल सकते हैं। ऊपरकथित शिलालेखसे तीसरी शताब्दीमें जैन आचार्योंका अस्तित्व इस स्थानपर सिद्ध है।

कलकत्ता म्यूजियममें एक मूर्त्ति—बिहारसे एक ऐसी मूर्त्ति पाई गई जिसमें वृक्षके नीचे इन्द्र इन्द्राणी या माता-पिता बैठे हैं गोदमें बालक है—ऊपर उसके ध्यानाकार श्रीऋषभदेव पद्मासन विराजमान हैं। सबसे नीचे ६ मनुष्योंके आकार हैं—अखण्डित है। नं० ४२१८ है, ऐसी ही मूर्त्ति हमने मानभूमिके पंचास्थानमें देखी है जो एक वृक्षके नीचे रक्खी है ।

(२)

मुजफ्फरपुर जिला।

(गजटियर छपा १९०७)

इस जिलेकी चौहद्दी इस भांति है.—उत्तरमें नैपाल, दक्षिणमें पटना, पूर्वमें दरभङ्गा, पश्चिममें सारन और चम्पारन। ३०० वर्गमील भूमि है।

इतिहास—प्रसिद्ध महाराजा जनकका राज तिरहुतमें था जिसकी राजधानी मिथिला थी। इसको शायद जनकपुर कहते हैं, जोकि मुजफ्फरपुरकी हद्दसे उत्तर पूर्व तरफ कुछ दूर है। यहांपर सीतामढ़ी है जो सीताके जन्मके कारण प्रसिद्ध है। विदेह था जनकके वंशके पीछे वृज्जियन लोग अधिकारी हुए जिनकी राजधानी मिथिलासे बदलकर वैसाली होगई, जिस वैसालीको अब बसाढ़ कहते हैं। वृज्जियोंमें ८ आधीन जातियां शामिल थीं। उन्हींमें लिच्छवी लोग बहुत ही उपयोगी थे। सन् ईसवीसे ४९० वर्ष पहले लिच्छवीकी राजधानी वैसालीको (श्रेणिकके पुत्र कुणिक बनाम) अजातशत्रुने अपने अधिकारमें किया, वह तिरहुतका स्वामी हो गया। भारतीय इतिहासके आरम्भमें ही हम मुजफ्फरपुरको बलवान लिच्छवी जातिका घर पाते हैं जिनकी राजधानी वैसालीका सुन्दर नगर था। यहां ६ ठी शताब्दी पहले धार्मिक उत्साह बहुत भारी था जिसमें गंगा घाटीके निवासियोंका मन उसी ओर आकर्षित था। वैसालीका सम्बन्ध बुद्ध और महावीरकी शिक्षासे बहुत रहता है। बौद्धके समान महावीर बनाम वर्द्धमान भी उच्च राजकीय घरानेके थे। श्री पार्श्वनाथने जो धर्म बताया था उसी सिद्धांतको इन्होंने चलाया। श्री महावीरके

पिताका नाम सिद्धार्थ था जो क्षत्रियोंके नाथवंशमें जन्मे थे, तथा जो वैसालीके उन्नतिशील नगरके चारों तरफ कोल्लागमें बसते थे। इसलिये कहीं-कहीं महावीर स्वामीको त्रिमालिया या वैसालीका निवास कहते हैं। बौद्धोंकी पुस्तकोंमें महावीरस्वामीको नातपुत्त या क्षत्रियोंकी नाथ जातिका पुत्र लिखा है। वैशालीके तीन भाग थे जिनको वैशाली कुण्ड ग्राम और वनियागाम कहते थे इनमें क्रमसे ब्राह्मण क्षत्री और बनिये रहते थे। वर्तमानमें इन तीनों स्थानोंको क्रमसे बसाढ़; वसुकुण्ड और बनिया ग्राम कहते हैं। इस समय यहां इस प्रकारका राजा था कि क्षत्रिय जातिके मुखियाओंकी सभा कुल प्रबंध करती थी जिनका सभापति वाइसराय तथा सेनापति होता था।

राजा सिद्धार्थका विवाह महाराज चेटककी पुत्री (त्रिशला) के साथ हुआ, इनसे एक महापुरुष श्री महावीरका जन्म हुआ—जो ३० वर्षतक घरमें रहे, फिर यह साधु होगये। कोल्लागमें नाथवंशने चैत्य स्थापित किया था जिसको द्वीपतास कहते थे जो निःसंदेह आजकलके चैत्योंके समान होगा, जिसमें एक उपवन मन्दिर तथा साधुओंके लिये कई निषीधिकाएं (बैठनेके कमरे) होते है। यह द्वीपतास पार्श्वनाथके सिद्धांतके माननेवाले साधुओंके लिये था। और श्री महावीर साधु पद धारणकर इसीमें संयुक्त हुए, किन्तु पार्श्वनाथका चरित्र महावीरस्वामीको संतोषित न कर सका—महावीर स्वामीका सिद्धांत था कि साधुको बिलकुल नग्न रहना चाहिये—एक वर्ष पीछे महावीरस्वामीने कपड़ा छोड़ दिया, और नग्न अवस्थामें उत्तर दक्षिण विहारमें भ्रमण किया (नोट—यहां लेखकने जो कुछ लिखा है वह

श्वेताम्बर जैनोंके कथनके अनुसार लिखा है जो उन्होंने कल्पसूत्र और आचारांग सूत्रमें लिखा है। श्वेताम्बर लोग ऐसा कहते हैं कि श्री पार्श्वनाथ स्वामीका सिद्धांत था कि साधुओंको वस्त्र पहनना चाहिये, श्री महावीरस्वामीने इस बातको पसन्द न करके नग्न रहना ठीक समझा—इस कथनसे श्वेताम्बर जैनोंका यह प्रयोजन है कि वे दिगम्बर जैनोंसे प्राचीन समझे जावें—परन्तु यह कथन जबतक प्रमाणित न हो जाय विश्वासके योग्य नहीं है। बौद्धोंकी पुस्तकें बहुत पुरानी मिलती हैं, उनमें गौतम बुद्ध और श्री महावीरस्वामीके समयके साधुओंका वर्णन है। किसी भी बौद्ध ग्रन्थमें वस्त्र सहित जैन साधुका वर्णन नहीं मिलता है किन्तु निर्ग्रंथ नग्न जैन साधुओंका वर्णन मिलता है तथा बुद्धने अपने शिष्योंको यह शिक्षा दी है कि नग्न जैन साधु होना नहीं। यदि श्रीपार्श्वनाथके शिष्य वस्त्र सहित जैन साधु होते तो वे अवश्य श्री महावीरस्वामीके समयमें पाये जाते, क्योंकि श्रीपार्श्वनाथजीसे २५० वर्ष पीछेही श्री महावीरस्वामी हुए हैं। इसके सिवाय जो जो प्राचीन प्रतिमायें यत्रतत्र खोदनेसे मिली हैं व गुफाओंमें अंकित हैं वे सब वस्त्र चिह्न रहित नग्न दिगम्बर हैं—तथा श्री पार्श्वनाथजीकी कोई भी प्राचीन मूर्ति कहीं भी वस्त्र सहित नहीं मिलती है, किन्तु नग्न मिलती है, इससे यह बात प्रमाणसे सिद्ध नहीं होती कि महावीरस्वामीसे पहले वस्त्रधारी जैन साधु होते थे। जैनधर्म निर्ग्रन्थ साधुओंको ही साधु कहता है, इसलिये पार्श्वनाथजी भी नग्न साधु थे तथा उनके शिष्यगण भी सब नग्न थे। महावीरस्वामी और पार्श्वनाथस्वामीका बाहरी चिह्न बिलकुल एक था।)

अपने जीवनके ४२ वर्षतक महावीरस्वामीने विहार किया। उनके शिष्य बहुतसे साधु हुए जिनको निर्ग्रन्थ कहते हैं—अर्थात् जिन्होंने सब सामाजिक बन्धन तोड़ डाले हैं—उनका निर्वाण सन् ई० से ४९० वर्ष पूर्व हुआ है। इनके माननेवालोंको जैन कहते हैं।

चीनयात्री हुइनसांगने जो सन् ई० ६३५ में यहां आया था इस वैसाली राज्यका वर्णन दिया है कि इस राज्यका घेरा करीब १,००० मील था, आबोहवा सुहावनी तथा अनुकूल थी, लोगोंका आचरण पवित्र और श्रेष्ठ था और वे लोग धर्मको प्यार करते थे और विद्याकी बहुत ही अधिक प्रतिष्ठा करते थे। जैनी बहुत संख्यामें थे सो श्री महावीरस्वामीके जन्मस्थानमें होना ही चाहिये।

वसाढ़—हाजीपुर जिलेके उत्तर पश्चिम कोनेमें एक ग्राम है। यह हाजीपुरसे २० मील है। इसीको प्राचीन वैसाली समझा जाता है। यह वैसाली लिच्छवियोंकी बलिष्ठ जातिकी राज्यधानी थी। यह अवश्य श्री महावीरस्वामीकी जन्मभूमि है। यहां एक बड़ा टीला है, राजा विशालका किला है यहां खुदाई करनेसे १०० मोहरें मिली हैं। यह बात यहां ध्यानमें लेने योग्य है कि इनमेंसे दो मोहरोंपर तिरभुक्तेका नाम आया है जोकि तिरहुतका प्राचीन नाम है। कोल्हुआ पर जो वसाढ़से उत्तर पश्चिम ३ मील है बहुतसे प्राचीन स्थान है। एक पाषाणका स्तम्भ है जिसपर सिंह बना है। एक खण्डित स्तूप है। प्राचीन सरोवर है। प्राचीन मकानोंके कुछ चिह्न हैं। कई मीलोंतक बहुत अधिक खण्डित स्थान सब देशमें फैले पड़े हैं।

जर्नल रायल एसियाटिक सोसायटी सन् १९०२ में वैसाली पर एक लेख है। उसमें नीचेका वर्णन दिया है—

"यह वैसाली दीघाघाट रेलवे स्टेशनसे उत्तरकी तरफ है। जैन कहावतोंके अनुसार वैसाली देशमें तीन जिले शामिल थे। खास वैसाली, कुण्ड गाम, और बनिया ग्राम। इसके सिवाय कोल्लाग प्रांत। वैसाली खास विशालगढ़ तथा उसके पासके विना खोजे हुए दूसरे बहुतसे खण्डित स्थानोंको समझा जाता है। वर्त्तमान बनिया ग्राम वास्तवमें प्राचीन बनियागाम है। इस गाममें बहुतसे बडे २ टीले हैं। १० वर्ष हुए वहां खुदाई करनेपर इस ग्रामसे पश्चिममें ५०० गज जाकर जमीनसे ८ फुटके अनुमान खोदने पर दो जैन तीर्थंकरोंकी मूर्त्तियां मिलीं उनमेंसे एक पद्मासन और एक खड्गासन थी।"

(नोट—ये मूर्त्तियां अब कहां हैं सो उनका पता नहीं।)

बनियागाम खास जैनियोंके तीर्थङ्कर श्री महावीर स्वामीका स्थान था और इन मूर्त्तियोंके निकलनेसे तो यह बात प्रमाणित हो जाती है कि बौद्धोंके पहलेका यहांका इतिहास व जैनियोंका क्या सम्बन्ध रहा है? जिसके लिये इस स्थानपर खास ध्यान देना चाहिये था जो करीब २ बिलकुल भुला दिया गया है।

कुल्हुश नामके सरोवरके निकट जो गाम है उसीको कोल्लगप्रांत कहते हैं। इसके पूर्वीय तरफ एक बड़ा टीला है।

कनिंघम साहबके समयमें जैन इतिहास और प्राचीन स्मारकोंकी तरफ विद्वानोंका ध्यान नहीं खिंचा था। (नोट—इसका कारण यही था कि पहले सर्वसाधारण जैनधर्मको बौद्ध धर्मकी एक शाखा समझते

थे । इसलिये जो कुछ ध्यान था सो बौद्धोंके स्मारकोंपर था) और जैनधर्मकी उन्नतिका वर्णन जाननेके लिये वैसालीके स्मारक जो लाभ दे सकते थे उसे काममें न लिया गया ।

मैं समझता हूं कोल्हुआ गाम वनिया गामके उत्तर पूर्व और वैसाली (वसाढ़) और बखीराके मध्यमें है। यदि बनियागाम और कोल्हुआके स्थानोंकी जांच की जावे तो जैन इतिहासके जाननेका बहुतसा मसाला निकले । आशा करता हूं कि जैन और बौद्ध स्मारक मिले हुए मिलेंगे और उनके पहचाननेमें बडी कठिनता पडेगी । क्योंकि जैन और बौद्ध दोनोंने एकसे ही स्तूप तोरण द्वार बनाये और अधिकतर एकसे ही चिह्न अङ्कित किये ।

यहां एक स्तूप केसरियाके पास है जिसको राजसेन चक्रवर्तीका कहते हैं । विशालगढ़के उत्तर पश्चिम २ मीलपर अशोक खम्भा जिसपर सिंह है अभी भी खडा है जो ४४ फुट ऊँचा है ।

आरकिलाजिकल सर्वे इण्डियारिपोर्ट १९०३–४ से इस भांति मालूम हुआ कि यहां इस वर्ष वसाढ़में खुदाई की गई, तब बहुतसे वर्तन और मोहरें मिलीं, एक मोहरपर चरण चिह्न हैं जो किसी जैन तीर्थंकरकी पादुकायें होंगी May be taken as Padukas of some Jain Tirthankar इन मोहरोंके चिह्नके देखनेसे तथा शिलालेखोंके नामोंसे तथा मोहरोंपर जो मङ्गल यन्त्र हैं उनसे हमें यह फल प्रगट होता है कि ये मोहरें ब्राह्मण और जैन धर्मके माननेवालोंकी हैं, किन्तु बौद्धोंकी नहीं हैं । इन मोहरोंपर चरण पादुकाएं हैं, कलश है, त्रिशूल है । यही चिह्न कटकमें खण्डगिरि पर्वतकी हाथीगुफाके राजा खारवेलके शिलालेखमें हैं—

आर० सर्वे इण्डिया रिपोर्ट सन् १९१३-१४ से मालूम हुआ कि बसाढ़में फिर खुदाई की गई, जिसमें बहुतसी मोहरें निकलीं। यहां ८०० मोहरोंपर क्या क्या लेख है सो सब दिया हुआ है। एक पर है "भट्टारक महाराजाधिराज" वह मोहर सन् २०० के अनुमानकी है। एकपर है "कुलिक घनस्य" अर्थात् घन व्यापारीका है। नं० ८०० की मोहरपर है "वैसाली, अनु संयानक टकारे" इसका भाव है-टकारे थानेकी पुलिस वैसाली। यह मोहर सन् ई०से पहले मौर्य्योंके समयकी है। नमूनेके तौरपर कुछ मोहरोंके लेख दिये जाते हैं—

५५—नाग सरमस्य

६१—बुधकल्य

६६—हस्तदेवस्य

नं० ६१—संघदत्त

१६४—कुजनूत्रस्य

१६७—श्राम्रबल

१७८—भद्रदासस्य

१९३—कनकस्य

२२६—राज्ञाधर्मेश्वरस्य

२२७—भद्ररक्षितस्य

२३२—सार्वदासस्य

२४८—'राज्ञो महाक्षत्रपस्य स्वामीरुद्र सिंहस्य-दुहितु राज्ञा महाक्षत्रपस्य स्वामी रुद्रसेनस्य भगिनी या महादेव्या प्रभुद्र मायाः।

२७१ (ब) नागसिंह

२७४ (ब) पादुका गौमिस्वामी

२७७ (ब) प्रकाशनंदी

३२० (ब) भश्वसेन

३२१ (ब) ईसान दासस्य

नोट—इस न० २७४में बिलकुल स्पष्ट रूपसे गौतम स्वामीकी पादुकाएं लिखा है—गोमि स्वामिका ही अपभ्रंश गौतमस्वामी मालूम होता है। तथा इन मोहरोंमें जो राजाओं व सेठोंके नाम हैं इनमें अवश्य जैनत्व झलकता है। इन कुल नामोंको ध्यानमें लेकर यदि जैन पुराण ग्रन्थोंसे मिलान किया जाय तो बहुत कुछ नाम मिल सकेंगे।

यह वैसाली (वसाढ) कुण्ड ग्राम व बनिया ग्राम वास्तवमें बहुत प्रसिद्ध स्थान मालूम होते हैं, जहां जैन धर्मका प्रभाव बहुत दीर्घकाल तक रहा होगा।

मुजफ्फरपुरका जिला अवश्य प्राचीनकालमें विदेहमें शामिल होगा। राजा जनकका स्थान दरभङ्गाके निकट है। राजा जनककी पुत्रीको वैदेही भी कहते हैं क्योंकि विदेहमें उसका जन्म हुआ है।

दिगम्बर जैनोंमें अशग कविकृत महावीरचरित्र है यह अशग कवि सम्वत ९१० में हुए हैं। उन्होंने १७ वें सर्गमें विदेह देशके कुण्डपुर नगरमें श्री महावीर स्वामीका जन्म हुआ लिखा है, अनुमान १४०० संवतमें प्रसिद्ध श्रीसकलकीर्त्ति आचार्य कृत महावीरपुराणमें भी विदेह क्षेत्रके कुण्डपुरमें जन्म होना लिखा है। कुण्डग्राम व कुण्डपुर एक ही बात है। इससे यह सिद्ध होता है कि इसी वैसालीमें जो

कुण्डग्राम है यही **श्री महावीरस्वामीका जन्म स्थान है।** वहां पर जैन तीर्थङ्करोंकी मूर्तियोंके भी निकलनेसे यह बात प्रगट है। आजकल जैन लोग बड़ागांवमें जो पटना जिलेमें बिहारके पास है कुण्डलपुरको मानके वहीं जन्म स्थानके लिये पूजा करने जाते हैं परन्तु मुजफ्फरपुर जिलेके इस स्थानको जानते ही नहीं हैं। इस माने हुए कुण्डलपुरसे पावापुरी ५–६ मील है–जन्म स्थानके अति निकट निर्वाण होना संभव नहीं होता–इससे बहुत अधिक निश्चय यही होता है कि भगवान महावीरका जन्म स्थान इस जिलेमें है। अब हम जैनी भाइयोंको चाहिये कि गेजटियरकी रिपोर्टको लेकर उस खास स्थान पर जावें जहांसे मूर्तियें व सिक्के निकलना लिखा है और जो टीले जांचे नहीं गए उनको खुदा कर जांचना चाहिये तो सम्भव है कि श्री महावीरस्वामी व उनके पूर्व समयके प्राचीन स्मारक बहुतसे मिल जावें। जैनियोंको पूर्ण निश्चय कर इस कुण्ड ग्राममें ही जन्म स्थान मानके जन्मक्षेत्र प्रसिद्ध करना चाहिये और यहां श्री जिन मंदिरजी स्थापित करना चाहिये तथा यात्रियोंको दर्शनार्थ जाना चाहिये। भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीको इस विषय पर पूर्ण ध्यान देना चाहिये। यह बड़े खेदकी बात है कि हम अपने अंतिम तीर्थङ्करके जन्मस्थानको भी भूले हुए हैं।

वैसालीका राजा चेटक था जिसकी सात कन्याएं थीं जिनमेंसे एक कन्या सबसे बड़ी श्री महावीर स्वामीके पिता राजा सिद्धार्थको विवाही गई जिसका नाम त्रिशला था। दूसरी कन्या मृगावती वत्सदेशमें कौशांबी पुरीके नाथवंशी राजा नाथके साथ, तीसरी सुप्रभाका विवाह सूर्य वंशीय दशार्ण देशमें। हेरकच्छपुरके स्वामी दशरथके साथ, तथा

चौथी प्रभावतीका विवाह कच्छ देशके रोसकपुरके स्वामी महाराज महातुके साथ तथा छठी चेलनाका राजा श्रेणिकके साथ। ज्येष्ठा और चन्दना कुमार अवस्थामें दीक्षित हो गईं। श्री शुभचन्द्र कृत श्रेणिक-चरित्रसे मालूम होता है कि सिन्धु देशमें विशालापुरीके राजा चेटक थे। यदि यह कोई सिन्धु देश पञ्जाबकी तरह हो तौ भी सम्भव हो सक्ता है—यदि इस विसालीको ही राजा चेटकका नगर माना जाय तौ भी असंभव नहीं है। यह उस बड़े विसाली देशका अधिपति होगा तथा कुण्ड ग्रामका राजा सिद्धार्थ होगा, इस बातका ठीक—ठीक पता लगाना उचित है।

---

(३)

दरभङ्गा जिला।

(गजेटियर छपा सन् १९०७)

दरभङ्गाकी चौहाद्दी इस प्रकार है-उत्तरमें नेपाल, दक्षिणमें गङ्गाजी और मुङ्गेर, पूर्वमें भागलपुर, पश्चिममें मुज़फ्फरपुर। यहां ३६६५. वर्गमील स्थान है।

छठी शताब्दी सन् ई० से पहले यह जिला श्री महावीर वर्द्धमानका घर था। बसाढ़ (मुजफ्फरपुर) में जो खुदाई सन् १९०३–४ में हुई है उससे इसकी चौथी पांचवी शताब्दि तकका इतिहास प्रगट है। अफसरोंकी मोहरें मिली हैं जो राजाओंके द्वारा जिलेके प्रबन्धकोंके पत्रोंपर दी जाती थीं। इनमें कुछ ऐसे प्रबन्धकोंका वर्णन है जो तिरभुक्तिके अधिकारी थे। सन् ९३५ ई० में हुइन-

सांग चीन यात्री यहां आया था, वह इस तिरहुत देशके सम्बन्धमें नीचे लिखे भांति कहता है—

"तिरहुत देशमें वह स्थान गर्भित है जिसमें वैसाली देश दक्षिणमें और वृज्जियोंकी राजधानी उत्तरमें है। वैसाली देशका घेरा १००० मील है। आबोहवा अनुकूल और पाचक है। लोगोंका चाल चलन पवित्र और सत्व है। लोग धर्मको प्यार करते हैं तथा विद्याकी बहुत कदर करते हैं। जमीन अच्छी उपजाऊ है। वैसालीके उत्तर पूर्व वृज्जियोंका राज ८०० मीलके घेरेमें है। राजधानी चिन्सुरा वर्तमान जनकपुर ऊजड़ है। निवासी बौद्ध धर्म नहीं पालते हैं। यहां बौद्ध धर्म घट रहा है। साधु और गृहस्थ साथ रहते हैं। यहां सैकड़ों बौद्धोंके मठके अवशेष हैं किन्तु केवल ३ या ४ में कुछ साधु रहते हैं—जैन लोग बहुत हैं॥"

मल्लिनगर—दरभङ्गासे पूसाको जाते हुए सड़क पर छोटी गंडक नदीके उत्तरीय तटपर ग्राम है। यहां १ महादेवजीका मंदिर भी है।

नोट—क्योंकि मिथिला नगरीमें श्री मल्लिनाथ स्वामी १९ वें तीर्थङ्करका जन्म हुआ था, इससे बहुत सम्भव है कि यह नगर उनहींके नामसे बसा हो। यहांपर खोज करनी चाहिये, शायद कुछ जैन धर्मके स्मारक मिल जावें।

मिथिला—यह एक प्राचीन नाम उस प्रदेशको दिया गया है जिसमें चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभङ्गा तथा मुङ्गेर, भागलपुर, पुरनिया और नैपालके भाग गर्भित हैं।

सौरठ—मधुबनीसे उत्तर पश्चिम ८ मील। यहां दो बड़े टीले

हैं तथा प्राचीन टूटे मकान एक मील तक चारों ओर छितरे पड़े हैं। गांववाले कहते हैं कि यहां प्राचीन नगरके अवशेष हैं।

नोट—मिथिला नगर इसी दरभङ्गाके भीतर होना चाहिये—इस मिथिला नगरमें श्री मल्लिनाथ १९ वें तथा श्री नमिनाथ २१ वें तीर्थङ्करका जन्म हुआ है। आजकल हम जैन लोग अपने पूज्य तीर्थ-ङ्करोंके कई स्मारकोंको भूल गए हैं। हमको यह चाहिये कि हम चौवीसों तीर्थङ्करोंकी जन्मभूमियों पर भक्ति करें, खेद है हमें श्री मल्लि और नमि भगवानकी जन्मभूमिका पता नहीं है। यदि दरभङ्गाके खण्डहरोंको देखा जाय तो जैन चिह्न भी मिलें। जैन चिह्न न मिलने पर भी हमको इन दोनों तीर्थङ्करोंके स्मारक इस मिथिला प्रदेशमें स्थापित करने चाहिये।

---

(४)

चम्पारन जिला।

(गजेटियर छपा सन् १९०७)

इस जिलेकी चौहद्दी इस भांति है—उत्तरमें नेपाल, दक्षिणमें मुजफ्फरपुर और सारन, पूर्वमें मुजफ्फरपुर तथा पश्चिममें गोरखपुर। इसका प्रमाण ३५३१ वर्ग मील है।

इतिहास यहांका यह है कि प्राचीन विदेशके राजकीय शासनके पीछे यहां विज्जरियोंका प्रजाकीय शासन हुआ तथा मध्य शक्ति मिथिलासे वैसाली चली गई—ये वृज्जियन लोग बहुत करके शायद सीथियाके आक्रमणकार हों। इनका राज दक्षिणमें गंगा तथा उत्तरमें

हिमालय तक था। इन्होंने कई जातियोंकी एक सभा बना रक्खी थी जिनमें सबसे बलिष्ट लिच्छवियोंकी जाति थी। जिनके हाथमें वह प्रदेश था जिसको अब तिरहुत कहते है। सन् ई०के पहले छठी शताब्दीके अन्त होते होते इस जातिकी शासनशक्ति मगध देशकी उन्नतिशील शक्तिसे भिड गई, जिस मगधकी हद्दमें वर्तमानमें पटना और गया जिले हैं। इस मगधके राजा अजातशत्रुने अपना शासन बढ़ा कर लिच्छवियों पर कर लिया वैसाली ले लिया गया तब अजातशत्रु तिरहुतका स्वामी हो गया।

यहां नन्दनगढ़में एक बडा टीला है। यहां एक चांदीका सिक्का मिला है जो सिकन्दरसे पहले समयका अर्थात् १००० वर्ष पहले सन् ई० से है। चौथी सदीमें यह देश मौर्योंके हाथमें आ गया।

सिमराओं—पुर्नैलिया कोठीसे ५ मील। न यहां पर प्राचीन मिथिला नगरीके चिह्न अब तक मिलते हैं। अन्य प्राचीन स्मारक मोतीहारीसे ५ मील पूर्व नोनाचर पर, पिवरी रेलवे ष्टेशनके पास सीता कुण्ड तथा वेवीदन पर तथा सोहरियाके पास बावन गढ़ी पर हैं—

नोट—इन स्थानोंकी भी अच्छी तरह जांच करनी चाहिये। शायद यही मिथिला नगरी हो जहां श्री मल्लिनाथ और नमिनाथका जन्म हुआ हैं। यह स्थान और दरभङ्गा जिलेके मल्लि नगर और सोरठ एक सीधमें हैं। ६० मीलके बीचमें होंगे, ऐसा नकशेसे विदित होता है। इन सब स्थानोंकी पूरी पूरी जांच होनी चाहिये।

---

(५)

भागलपुर जिला।

(गजेटियर छपा सन् १९११)

इस जिलेकी चौहद्दी इस प्रकार है—

उत्तरमें नैपाल, पूर्वमें पुरनिया, दक्षिणमें संथल परगना, पश्चिममें दरभङ्गा और मुंगेर, इसमें ४२२६ वर्गमील स्थान है।

मन्दार हील—यहां पहाड़के शिखरका स्थान जैनियोंके द्वारा अब भी बड़ी प्रतिष्ठाका रूप माना जाता है। Still held with great veneration by the Jains आरकिलोजिकल सर्वे इण्डिया जिल्द ८ वी में बेगलर साहबने भी लिखा है—The structure belongs to Srawaks or Jains and one of the rooms contain a Charan कि पहाड़के ऊपरकी रचना श्रावक या जैनियोंकी है और एक कमरेमें चरण हैं।

नोट—वास्तवमें यह पर्वत परम पवित्र है क्योंकि श्री गुणभद्राचार्य रचित उत्तर पुराणके अनुसार श्री वासुपूज्यनाथ बारहवें तीर्थंकरका निर्वाण स्थान यही मन्दार पर्वत है)

बौंसी—भागलपुरमें बौंसी नगर बहुत प्रसिद्ध था। यहां ५२ बाजार, ५३ गली और ८८ तालाब थे।

करणगढ़—भागलपुरके निकट एक पहाड़ी है। इसके सम्बन्धमें लिखा है कि चम्पाके राजकुमार करण आदि बहुत करके जैन धर्मके माननेवाले थे क्योंकि श्री वासुपूज्यका जन्म भी यहीं हुआ है तथा इस धर्मके स्मारक भी आसपास मिले हैं। Ancient monuments

Bengal 1895 बङ्गालके प्राचीन स्मारक सन् १८९५ में लिखा है कि—करणगढ़में जो किलेके खण्डित स्थान हैं वे बौद्धोंके पहलेके किसी प्राचीन किलेको प्रगट करते हैं। किलेके पश्चिम तरफ जैनके तथा महादेवके मंदिर हैं जिन दोनोंमें प्राचीन पत्थर हैं। इस स्थानकी खुदाई होनी चाहिये। (It is a field for reploration)

नोट—यहांपर तलाश करनेसे अवश्य जैन मूर्तियां प्राप्त होंगी। कुछ खुदाई करानेकी जरूरत है।

पथार घाटी हिल—गंगाके तटपर एक पहाडी है। उत्तरकी तरफ पहाडमें ७०० या ८०० शताब्दीकी चित्रकारी है। इस पहाडीको **चौरासी मुनि** कहते हैं—इस पहाडमें ४ या ५ गुफाएं भी हैं।

नोट—इस स्थानकी जांच अच्छी तरह होनी चाहिये।

जुंगीरा—यहां पहाडी चट्टानों पर शिलालेख हैं। इनमें हिन्दू, बौद्ध व जैन तीर्थङ्करोंके चिह्न हैं। इसकी जाच होनी चाहिये।

---

(६)

शाहबाद जिला।

(गजेटियर छपा १९०६)

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें गाजीपुर, सारन, दक्षिणमें पूर्व पटना और बिहार, दक्षिणमें लोहरडगा, पश्चिममें मिरजापुर, उत्तर पश्चिम बनारस और गाजीपुर। यहां ४३७२ वर्गमील स्थान है। यहां आरामें जैनियोंके वहुत मन्दिर हैं तथा धनुपुरामें भी जैन मंदिर हैं। सन् १८९५ के छपे बङ्गालके प्राचीन स्मारक ग्रन्थमें लिखा है कि ये मन्दिर सन् ई० १८४५ में बने थे। सन् १८५७ के गदरके

समय १५० सिपाहियोंने कप्तान डनबर और मेजर ऐयर Captain Dunbar and major Eyre के साथ इस मन्दिरमें दीनापुरसे आरा आते हुए मुकाम किया था।

मसाढ़–आरासे ६ मील–यह प्राचीन स्थान है। चीन यात्री हुइनसांगने इस स्थानको महासोलो या महासार लिखा है–यहां श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर है जिसमें आठ जैन मूर्तियां हैं इनमेंसे ७ पर ५०० वर्षके प्राचीन शिलालेख हैं। इनमेंसे एकपर सन् १३८६ ई० है जबकि मारवाडके कुछ राठौर जैनियोंने गांवमें बसकर प्रतिष्ठा कराई। श्री पार्श्वनाथकी मूर्ति है उसपर सन् ई. १८१९का लेख है कि कारुश देश पर राज्य करनेवाले इंग्रेजोंके राज्यमें आराम नगरके बाबू शङ्करलालने प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई। आराका प्राचीन नाम आराम नगर है।

सन् १८९४ के बङ्गालके प्राचीन स्मारक पुस्तकमें नीचे लिखे स्थानका हाल भी दिया है जिसका पता लगाना चाहिये——

(नं० १२६) देव वोनारक मंदिर–इसमें चार स्तम्भ हैं। इनमें एक शिलालेख है उस पर संवत १५२ है। तथा लेख है कि आदित्तसेन देवके पर परपोते जीवित गुप्तने वरुणवासी भट्टारकके लिये यह मन्दिर बनवाया (नोट–यहांपर भट्टारकके लिये बनाया ऐसा न होकर उनके समय या उपदेशसे बनाया गया ऐसा चाहिये) यह खास मन्दिर कहा जाता है कि राजा वरुण और उनके दो भाई करणजीत और चतुर्भुजने बनवाए-वर्त्तमानमें मन्दिरके भीतर विष्णुकी मूर्ति है।

नोट:–यह जैनियोंका बड़ा प्राचीन स्थान मालूम होता है। इसकी जांच अच्छी तरह होनी चाहिये।

(७)

गया जिला।

(गजेटियर छपा १९०६)

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—

उत्तरमें पटना, दक्षिण पूर्वमें पालामऊ हजारीबाग, पूर्वमें मुंगेर तथा पश्चिममें शाहाबाद है—इसमें ४७१२ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—जो इतिहास गयाका दिया है वह सब पटनाके इतिहाससे मिलता है—यह गया मगध देशमें शामिल था। विशेष इतना कि सन् ई० के १८५ वर्ष पूर्व मौर्य्यवंशी राजाके सेनापति पुष्पमित्रने अपने स्वामीको मारकर राज्य किया। फिर सन १५७ वर्ष पूर्व राजा खारवेलने मगधको जीत लिया। फिर सन् ३३० ई० में यहां गुप्त वंशका राज्य था। इस गया जिलेमें बौद्धोंके स्मारक बहुत हैं। **ब्रह्मजनी पहाडी**—४५० फुट ऊँची—गयाके पास—इसके शिखरपर एक मंदिर है इसके भीतर बांई तरफ एक छोटी जैन मूर्ति श्रीसंभवनाथजी जैनियोंके तीसरे तीर्थङ्करकी है—इस पर घोडेका चिह्न बना है—ऐसा कनिंघम साहबने देखकर लिखा है।

पचार पहाडी—रफीगंजसे दक्षिण पूर्व दो मीलपर है। इस पहाडीपर खास ध्यान देनेके योग्य एक गुफा पहाडीकी दक्षिण तरफ आधी दूर जाकर है। द्वारके सामने एक दालान भाग पत्थरके स्तम्भों पर है। तथा गुफाके भीतर श्री पार्श्वनाथस्वामीकी मूर्त्ति है तथा अन्य छोटी मूर्त्तियां भी हैं। ये सब प्रगट रूपसे जैनियोंकी हैं।

(८)

हजारीबाग जिला।

(गजेटियर छपा सन् १९१७.)

चौहद्दी यहांकी इस प्रकार है—

उत्तरमें गया और मुंगेर, दक्षिणमें रांची, पूर्वमें संथल परगना और मानभूमि, पश्चिममें रांची और गया। यहां स्थान ६९८८ वर्गमील है। यहांका इतिहास कुछ जानने योग्य नहीं है। जैनके प्राचीन स्मारक नीचे लिखे भांति हैं—

श्री पार्श्वनाथ पहाड या सम्मेद शिखर पर्वत—यह पर्वत ४४८१ फुट ऊँचा है। पहाडतक आनेकी सडक पहले थी। उत्तर पश्चिमसे आनेवाले पटना और नवादासे खडगदिहा होकर इस सडकसे पालगंज आते थे। तथा दक्षिण और पूर्वके यात्री उस सड़कसे आते थे जो मानभूमिके जैपुर स्थानसे चलकर नवागढ़ होती हुई पालगंजको जाती है। ये सडकें सन् १७७० से पहले काममें आती थीं, (नोट—इससे यह सिद्ध है कि इस पर्वतराजपर यात्री सदाहीसे आते रहे हैं। जो पहाडपर मंदिर है उनमें सबसे पुरानी तारीख १७६५ हैं। सन् १७८० में एक फौजी सडक बनारस तक बनाई गई तब यात्रियोंको इस पर्वतके दर्शन उस मार्गसे भी होने लगे।

सन् १८२७ की यात्राका हाल इस तरहपर दिया है उसका कुछ सार यह है:—जल मंदिरके संबंधमें लिखा है कि इसके कोनोंपर चार छोटे कमरे थे। उनमेंसे दो खाली थे। तथा दोमें हरएकमें सत्रह सत्रह जैन मूर्त्तियां थीं। तथा जो घुमटिया बनी हैं वे

दृढ़ ईंटोंकी हैं जिनकी ऊँचाई व आकार भिन्न भिन्न हैं । (नोट मालूम होता कि सङ्गमर्मर पाषाणकी घुमटियां पीछेसे उन्हीं स्थानोंपर बनी हैं) तथा जल मंदिरमें ५ बड़ी सुन्दर मूर्त्तियां जैन तीर्थङ्करोंकी हैं । मध्यमें श्री पार्श्वनाथकी है ।

कुलुहा पहाड़—हन्टरगंजसे दक्षिण पश्चिम ६ मीलपर यह १५७५ फुट ऊँचा है । यहां जैनियोंके खण्डित मन्दिर हैं । जैन लोग इस पर्वतको श्री शीतलनाथ तीर्थंकरका जन्मस्थान मानकर पूजते हैं और १५० वर्ष पहले बराबर आते रहते थे । यह आश्चार्यकी बात है कि अब यह पर्वत मामूली जैनियोंको बिल्कुल मालूम नहीं है ।

नोट—हमने इस पर्वतके दर्शन किये हैं । यह पर्वत बहुत मनोज्ञ है । पहाड़के ऊपर बड़ा सरोवर है, उसके तटपर कई मन्दिरोंके भाग हैं, कई प्रतिमायें अखण्डित भी हैं । एक पार्श्वनाथस्वामीकी विशाल मूर्ति काले पाषाणकी बहुत मनोहर है । संवत् १४०० के अनुमान प्रतिष्ठित प्रतिमायें भी मिलती हैं । एक ऊंची चोटीपर चरण चिह्न अंकित हैं । तथा इस चोटीके नीचे पहाड़ी पर १० प्रतिमायें खड्गासन १० पद्मासन कोरी हुई हैं । पहाड़भरमें सब प्रतिमायें दिगम्बर जैन हैं । यहांसे ५—६ मीलपर भद्दलपुर ग्राम भी है । इससे इसमें कोई शंका नहीं रहती है कि यह स्थान तथा यह पर्वत श्री शीतलनाथ भगवानके गर्भ जन्म तथा तप कल्याणकका स्थान है । जैनियोंको चाहिये कि यहांके मन्दिरोंको ठीक कराके यात्रा करना प्रारम्भ करदें । यह बड़े खेदकी बात है कि १५० वर्ष पहले जब जाते थे तब अब क्यों जाना बन्द कर दिया गया ।

सन् १८९५ के प्राचीन स्मारक बंगालसे जो स्थान प्रगट हैं वे ये है—

(१) सतगवां—यहां बहुतसे खंडित मंदिर हैं। सकरी नदीके आरपार ३ मील उत्तर पहाड़ीपर बहुतसे शिलालेख हैं। तथा प्राचीन स्थान हैं। यहां खोज होने व खुदाईकी जरूरत है।

(२) कुन्द किला—यहां कुन्दके प्राचीन राजाओंके किले हैं। यहां भी खोज होनेकी जरूरत है। नकशोंसे मालूम होता है कि यह स्थान हन्टरगंजसे ३०—३२ मील होगा।

---

(९)

मानभूम जिला।

(गजेटियर छपा १९११)

यह मानभूम छोटा नागपुरके पूर्वीय भागमें है। ४१४७ वर्ग मील जगह है जिसमें सन् १९०१ में १३,०१,३६४ आदमी थे। इसकी चौहद्दी इस तरह है—उत्तरमें हजारीबाग और संथल परगना; पूर्वमें वर्द्धमान, बांकुरा और मिदनापुर, दक्षिणमें सिंहभूम और पूर्वमें रांची और हजारीबाग। इसमें बराकर, दामोदर और सुवर्णरेखा तीन प्रसिद्ध नदियें है। इस जिलेमें श्रावकोंकी संख्या जिनको अब सराक कहते है १०४९६ है। इनके सम्बन्धमें मानभूम गजेटियर जिसको एच कूपलैण्ड साहबने बनाया था, व जो सन् १९११में छपा है, जो हाल दिया है व जो इनका महत्व व इनके प्राचीन मंदिरोंके शेष भागोंका वर्णन लिखा है उसका सार पाठकोंके ज्ञानके लिये दिया

जाता है। अब भी ये लोग पक्के शाकाहारी हैं, मांसाहारसे विरोध करते हैं, हिंसासे परहेज करते हैं। गूलर आदि कीड़ेवाले फलोंको नहीं खाते। दिनमें खाना अच्छा समझते हैं। कुलदेवता श्री पार्श्वनाथको कहते हैं। यद्यपि जैन धर्मका उपदेश न मिलनेसे यह जैनधर्मको बिलकुल भूल गए हैं तथापि श्रावकोंके संस्कार मौजूद हैं।

सफा ४८।

सातवीं सदीमें चीन यात्री हुईनसांगने अपनी यात्रामें एक प्रांतका वर्णन किया है जिसके दक्षिणमें उडीसा, उत्तरमें मगध या बिहार, पूर्वमें चम्पा (भागलपुर और वर्द्धमान) पश्चिममें केलोन सफलन या किरणसुवर्ण है, जो सुवर्ण-रेखा नदीके कारणसे कहा जाता है। इस प्रांतकी राजधानी कनिंघम साहबने बराभूम परगनेमें बड़ा बाजारको व हेवेटने पानकुमके पास डालमीको बताई है, जहां प्राचीन खण्डित मकान अब भी मौजूद हैं। बेगलर साहब डालमीसे १० मील उत्तर पश्चिम साफारनको राजधानी बताते हैं। ये दोनों ही स्थान सुवर्ण-रेखा नदीपर हैं। कहीं न कहीं इस कलिंग राज्यका मुख्य स्थान होगा। उस समय वहां **शशांक** राजा राज्य करता था, जो बौद्धोंको बहुत कष्ट-दायक था। डालमी और दूसरे स्थानों पर आसपास जो खण्डित मकान हैं उनका वर्णन आगे किया गया है। डालमीमें ब्राह्मणोंका चिह्न बहुत दिखता है किन्तु वहां जैन या बौद्धोंके भी बहुत चिह्न हैं, जिससे यह प्रगट होता है कि ब्राह्मणोंके पहले यहां जैन या बौद्धोंकी बहुत वस्ती होगी। आसपासके स्थानों पर जैन चिह्न बहुत अच्छी तरह प्रगट हैं. तथा इस जिलेके दूसरे भागोंमें बहुत प्राचीन स्थान हैं।

कुछमें बिलकुल जैनियोंके है, कुछमें प्राचीन जैनियोंके साथ ब्राह्मणोंके मिले हुए हैं। यह सिद्धान्त निकाला जाता है कि तामलुक (ताम्रलिप्त) जो पूर्वमें एक बहुत प्राचीन उपयोगी स्थान है और पटना, गया, राजग्रही और बनारस (जो उत्तर पश्चिममें हैं) के मध्यमें बराबर आगे जानेका रास्ता था। इस जिलेमें वह मार्ग तामलुकसे पटने तक घटाल, विशनपुर, चातना (बाकुडामें), रघुनाथपुर, तेलकुपी, झरिया, राजोली (गया) और राजगृह होकर है। इनमें व इनके मार्गके अन्य स्थानों पर प्राचीन स्थान हैं। मानभूममें तेलकुपी पर जहां दामोदर नदी जाती है बहुत अधिक खण्डित मकान हैं। खासकर ब्राह्मणोंके किन्तु थोड़ेसे जैनोंके है। ऐसे ही खंडहर पालगंजके पास हैं, जहां बराकर नदी जाती है। कहावत चली आती है कि तेलकुपीके मन्दिर व्यापारियोंके हैं, न राजा न साधुओंके हैं, और इसका चिह्न यह है कि इस जगह एक बड़ा व्यापारिक स्थान है जहां दामोदर नदी अब भी है जो बर-सातमें यात्री और व्यापारियोंको बहुत विघ्न करती है।

दूसरा बड़ा मार्ग इस जिलेमें होकर बहुत सीधा बनारस तक चला गया है। इस मार्गमें बहुत अधिक खण्डित मकान जैन और ब्राह्मणोंके पाखवीर, बुद्धपुर और मान बाजारके पास व कासई नदीपर दूसरे स्थानों पर हैं। यह मार्ग आगे बड़ाबाजार होकर तथा और आगे पश्चिममें सुवर्ण-रेखा नदीकी तरफ या डालमीके पास गया है। इस नदीके तटपर साफारन और सुइसा पर तथा पश्चिम तटपर डालमी और अन्य निकटके स्थानों पर प्राचीन जैन और ब्राह्मणोंके चिह्न हैं और डालमी एक बहुत बड़ा नगर था ऐसा निःसन्देह प्रगट होता है। आगे

पश्चिममें यह भाग रांची और पालामऊकी तरफ जाता है जहा भी खंडित मकान हैं। बनारस और गयाकी सड़कोंके आरपारके मार्गपर पाकवीर और बुद्धपुरके पास खंडित मकानोंका बड़ा संग्रह है। यहांसे पालगञ्ज तक जो मार्ग है उसमें बलरामपुर, छर्रा (पुरुलियाके पास), पार, चेचौंगढ़ और दामोदर नदीके निकटके ग्रामोंमें तथा कातरसपर खण्डित मकानोंके चिह्न हैं। डालमीसे पालगंज तकका मार्ग अयोध्याकी पहाडीको लांघते हुए बोराम (कासई नदी पर) होकर जाता है जहां भी डालमीके समान उस ही समयके करीबके बहुत खंडित मंदिर हैं। अर्शकर नदी ही जो मध्यमें है वहां भी है जिसकी जांच नहीं हुई है। यह मार्ग दामोदरको चेचौगढ़के पास काटता हुआ कातरस होकर पालगञ्ज गया है।

सफा ५१।

इस जिलेमें एक खास तरहके लोग रहते है जिनको साराक कहते हैं जिनकी संख्या बहुत है। ये लोग मूलमें जैनी हैं तथा इन्हींकी कहावतों व इनके पडोसी भूमिजकी कहावतोंसे ये एक जातिकी संतान हैं, जो भूमिजोंके आनेके समय यहां वसी हुई थी। इनके बड़ोंने पार, छर्रा, बोराम और भूमिजोंके पहले दूसरे स्थानोंपर मन्दिर बनाए थे। वे अब भी सदासे ही एक शांतिमई जाति हैं और जो भूमिजोंके साथ बहुत हेलमेलसे रहते है। इन्हींको कर्नल-हैंल्टन जैन कहते हैं। इसके मतानुसार यह इस जिलेमें सन् ई० से ५०० या ६०० वर्ष पहलेके हैं। इनका चिह्नरूप एक बड़ी मूर्ति है जो अब भी पाकवीरमें भीरमर या २४ वें तीर्थंकरके नामसे पूजी जाती है, जिसके सम्बन्धमें प्रोफेसर सर बिलसन लिखते हैं कि श्री

महावीर स्वामी साधु दशामें वज्रभूमि और शुद्धिभूमिके देशोंपर आए थे। जहां भूमि लोगोंने दुर्वचन कहे, मारा भी, तीर भी चलाये और कुत्ते भी भौंकते छोडे, परन्तु उपसर्गका उन्होंने कुछ ख्याल न किया। वज्रभूमि कर्नल डेलटनके अनुसार भूमिज हैं। वह कहते हैं कि इस लिये यह असंभव नहीं है कि जहां २ महान वीर साधु गये हों वहां उनके सन्मानमें लोगोंने मन्दिर बना दिये हों, जो उनकी शिक्षासे जैन हुए हों या ऐसा हो जैसा कि कहावतोंसे प्रगट है कि वीरने उन स्थानोंपर गमन किया हो जहां जैन पहलेसे ही सम्मेदशिखरके आसपास बसे थे। यह शिखर वह है जहां २५० वर्ष पहले श्री पार्श्वनाथने निर्वाण प्राप्त की थी।

कर्नल डेल्टन और मि० बेगलाके कथनोंको लेकर हमको यह पता चलता है कि बहुत कालतक जैन या सारक लोगोंने भिन्न २ स्थानोंमें शांतिसे अपना वास किया था। जो भूमि लोग यहां श्री वीरके विहारके कुछ दिन पहले जरूर आये होंगे, उन्होंने इन लोगोंको कोई विघ्न नहीं किया। ब्राह्मण और उनके माननेवालोंने सातवीं शताब्दिसे कुछ पहले इन श्रावकोंको अपने प्रभावमें दबा लिया। जो कुछ बचे व उनके धर्ममें नहीं गए वे इन स्थानोंसे दूर जाके रहे जहा उनके भूमिज पडौसियोंने उनको निर्विघ्न रहने दिया। मकानोंके देखनेसे यह सम्भव होता है कि १० वीं सदीमें ब्राह्मणोंका जोर हो गया और १६ वीं शताब्दीके बीचमें कभी भूमिज लोग पश्चिम और उत्तरसे नये आए हुओंकी सहायतासे उन्नतिमें बढे होंगे और उनको (श्रावकोंको) जडमूलसे नष्ट किया होगा।

सफा ८३।

साराकों (श्रावकों) का वर्णन पहले किया गया है कि एक प्राचीन समाजके अवशेष है जो कि बहुतही प्राचीन कालके है। निकटवर्ती जिलोंमें यद्यपि इनकी बहुत संख्या पाई जाती है तथापि मानभूमि इस समाजका खास वास स्थान जरूर है। इनमें रहनेवाले १७३८५ हैं उनमेंसे १०४९६ इस जिलेमें हैं ऐसा मनुष्य गणनासे प्रगट है। मि० गेटकी सेंसस रिपोर्टसे नीचेका आवश्यक हाल लिया गया है।

"यह शब्द साराक निःसंदेह श्रावकसे निकला है जिसका अर्थ संस्कृतमें सुनने वाला है। जैनियोंमें यह शब्द उन गृहस्थोंके लिये आता है जो लौकिक व्यापार करते है और जो यती या साधुओंसे भिन्न हैं, और अब भी इसी प्रकारका समुदाय पाया जाता है जिसको मामूली तौरसे सरावगी जाति कहते हैं। बौद्ध लोग भी इस शब्दको दूसरे प्रकारके साधुके लिये कहते थे जो मठोंमें रहते थे। सर्वोच्च दर्जेके अर्हन् मामूली रीतिसे एकान्त जीवन व्यतीत करते थे, भिक्षासे जीवन विताते थे, केवल कष्टके समय मठोंमें जाते थे। इस श्रावक जातिकी उत्पत्ति ब्रह्म वैवर्तपुराणमें इस प्रकार लिखी है कि एक जुलाहेके साथ कुविन्द या बुननेवाली जातिकी स्त्रीका सम्बन्ध हुआ उससे ये लोग हुए हैं। तौभी इससे इतना दीखता है कि जब यह पुराण बनाया था तब यह वाक्य इसमें लिख दिया गया था, श्रावक लोग बुननेसे अपनी आजीविका करने लगे थे। मि० रैसले कहते हैं कि मानभूमिके श्रावक यद्यपि वे अब हिन्दू हैं, अपने प्राचीन

कालमें जैन होनेकी बात जानते हैं। मानभूम और रांचीसे अब वह वर्णन प्रगट हुआ है कि वे अपनेको पहले अग्रवाल थे ऐसा कहते हैं, जो पार्श्वनाथजीकी भक्ति करते थे और सर्यू नदीके तटके देशमें रहते थे, जो युक्तप्रांतमें गाजीपुरके पास गंगामें मिली है वहां वे व्यापार और सर्राफीका धंधा करते थे। ये यह नहीं बता सकते कि क्यों उन्होंने अपना असली घर छोड़ा, परन्तु वे कहते हैं कि मानभूममें पहले वे ढालभूममें किसी मान राजाके राज्यमें बसे। उनकी जातिकी किसी कन्या पर मानराजाने झगड़ा किया, इससे वे सब मिलकर पाचेतमें बसे। रांचीमें ऐसा विश्वास किया जाता है कि वे पहले पुरीके पास उग्रमें बसे जहांसे पीछे वे छोटा नागपुर गये। बर्दवान और वीरभूममें यह बात चलती है कि वे गुजरातसे आये परन्तु वर्द्मानमें वे पत्थरके मंदिर और घर बनानेके लिये लाये गये थे, जिन मंदिरोंके शेष भाग बराकर नदीके तट पर अब भी दिखलाई देते हैं। वे अपने आप कहते हैं कि उनके बड़े लोग व्यापारी थे, और पार्श्वनाथको पूजते थे। परन्तु अब वीरभूम, बांकुड़ा और मानभूममें वे अपनेको हिन्दू कहते हैं। इस देशके इस भागके श्रावकोंकी सेवा ब्राह्मण करते हैं जो कहीं कहीं पुजारीका काम करनेसे हलके माने जाते हैं, कहीं नहीं। यह बात कही जाती है कि मानभूममें उनका काम ब्राह्मण उस समय तक नहीं करते थे जब तक कि पाचेतके पूर्व राजाने उनको एक पुजारी दे रखा था। इस पुजारीको राजाने उनको इस बातके इनाममें दिया था कि जब देशमें वर्गी या मरहटोंने हमला किया तब एक श्रावकने उस राजाको छिपाकर रक्षा की थी। इनके

७ गोत्र हैं। आदि वा आद्यदेव, धर्मदेव, ऋषीदेव, सांडील्य, काश्यप, अनंत और भारद्वाज। वीरभूममें गौतम और व्यास दो गोत्र तथा रांचीमें वात्सव और जोडे जाते हैं। इनके चार थोक या पोट जाति स्थानकी अपेक्षासे हैं। (१) पांचकोटिया या मानभूमके पांचेत राज्यके निवासी।

(२) नदीपारिया—या श्रावक जो मानभूममें दामोदर नदीके दाहने तटपर रहते हैं।

(३) वीरभूमिया—या वीरभूमिके रहनेवाले।

(४) तमारिया—या रांचीके पर्गनातमारके निवासी।

इनकी पांचवीं पोट जाति जो इनके व्यवसाय पर है अर्थात् सारकी तांती या तांती साराक जो बांकुराके विष्णुपुर भागमें रहती है बुननेका काम करती है और हलकी समझी जाती है। इसके भी चार भाग हैं—आश्विनीतांती, पात्रा, उत्तरकुली और मंदरानी। संथल-परगनेमें जो जातियां हैं उनको फूल सारकी, सिखरिया, कन्दल और सारकी तांती कहते हैं।

ऊपरके कुछ गोत्रोंके सिवाय उनके गोत्रोंके कुछ नाम तथा पशुरक्षामें उनका अतिशय दया भाव जैसा मि० रसलीने कहा है इस बातको बतलाता है कि वे केवल पक्के शाकाहारी ही नहीं हैं किन्तु वे काटनेके शब्दको भी व्यवहार नहीं करते है। पश्चिम बंगाल, मानभूम और राचीके श्रावक और साधारण हिन्दुओंमें जिनके बीचमें ये रहते हैं ऐसा ही कुछ भेद है। रांचीमें श्रावक लोग श्याम चांदको पूजते हैं जिनकी पूजा ब्राह्मण करता है। सब दंड जो जाति अपराधके होते हैं इस देवताकी पूजामें दिये जाते हैं।

इस जिलेमें श्रावक अधिकतर थाना, रघुनाथपुर और पारमें पारा आते हैं। १८६३ में पारके पास झापरामें कर्नल डेलटनने मुलाकात की। वे कहते हैं कि इस जातिका यह अभिमान है कि इनमेंसे कोई भी किसी फौजदारी अपराधमें दंडित नहीं हुआ, और अब भी संभव है कि उनको यही अभिमान है। वे वास्तवमें शांत और नियमसे चलनेवाले हैं। अपने आप और अपने पडोसियोंमें शांतिसे रहते है।

मानभूममें कहां२ अब जैन चिन्ह हैं।

बलरामपुर—पुरुलियासे ३ मील कसाईनदी तट पर (देखो जर्नल ऐसियाटिक सोसाईटी नं० ३५ भाग १ सन् १८६६ सफा १८६) बैजनाथके मन्दिरके प्रकारका एक मन्दिर जो पुराने मंदिरसे बनाया गया इसमें नग्न मूर्तियां अंकित हैं जो कि जैन तीर्थंकरोंकी हैं।

बोरम-गढ—जैपुर रेलवे स्टेशनसे ४ मील दक्षिण। यहां तीन बडे ईंटके व कुछ पत्थरके मंदिरोंके शेष भाग हैं। यहांकी ईंटें १८ से १२ इञ्च तक लंबी व २ इञ्च मोटी हैं। इन तीनोंमें दक्षिणका सबसे बडा शिखर ६० फुट ऊँचा है। ये तीनों मंदिर एक तरहके हैं और निःसन्देह श्रावक या जैनियोंके बनाये कहे जाते हैं। अब इसमें जैन मूर्त्तियां नहीं रहीं। यहांसे दक्षिण १ मीलपर एक हिन्दू मन्दिर है वहां मग्न मूर्तियां लाकर जमा की गई हैं। ये सब नग्न जैन मूर्तियां ईंटोंके मंदिरोंकी हैं।

दारिका—चेचोगढ़के खंडहरोंसे ३ मील दक्षिण पश्चिम। चंदन क्यारीसे बाहर जाकर पहले ग्राममें कृष्ण पाषाणकी जैन मूर्ति है।

पद्मासन व बैलका चिह्न है, पर एक सूखे सरोवरके तटपर है, जो मिदनापुरसे बनारस जाने वाली सडक पर है। यह सड़क चासपारा होकर जाती है (रिपोर्ट बङ्गला)।

छर्रा—पुरुलियासे उत्तर पूर्व ४ मील बहुतपुरमें पत्थरके मन्दिर थे ५ गिर गए हैं इनमेंसे कुछ जैनके थे। जैन मूर्ति गांवमें पडी मिलती हैं। यहांके व पासके कुछ बडे सरोवर श्रावकोंके बनाए हुए है।

डलमा—मानभूममें खास पहाडी जो ३४०७ फुट ऊंची पारशनाथ हिलकी जोडकी है। यहीं सुवर्णरेखा नदी तटपर पुराना नगर डलमी या दयापुर डलमी है (इसका हाल मिलेगा आर्किलोजिकल सरवे इण्डिया रिपोर्ट जिल्द ८ सफा १८६ तथा जर्नल एसियाटिक सोसायटी बङ्गाल १८६६ जिल्द ३५ भाग १में) यहां जैनियोंके खंडहर हैं। एक विक्रमादित्यका किला है। यहां ९ व १० सदीमें जैनियोंकी बहुत वस्ती थी। डलमीसे ६ मील जो पातकुमके वर्तमान राजा हैं, वे अपनी उत्पत्ति विक्रमादित्यसे बताते हैं। डलमीसे उत्तर पश्चिम सफारन है जो हुईनसांगके अनुसार शशांक राजाकी राज्यधानी है। यहां बहुतसे टीले विना जांचे हुए है। इसके पास देवली और सुइसामें प्राचीन जैन वसतीके चिह्न हैं।

डालमीसे उत्तर पश्चिम १० मील देवली गावमें करण वृक्षके नीचे बहुतसे मंदिरोंके चिह्न अब भी मौजूद हैं। वे सब जैनियोंके हैं, सबसे बड़ी मूर्ति आरहनाथकी है। ३ फुट ऊंची है। मस्तकके दोनों ओर ६, ६, नग्न जैन मूर्तियां हैं। यह मंदिर बडा और सुन्दर था। ४ कोनोंपर ४ मंदिर थे, जिनमेंसे दो अब भी मौजूद है। यहांसे

१॥ मील वृक्षके नीचे एक सर्प सहित नग्न जैन मूर्ति है, व दो छोटी और हैं। ईचागढ़के पास देवल टांडमें भी प्राचीन जैन चिह्न हैं।

कतरास गढ़—रेलवे स्टेशनसे १॥ मील कतराससे दक्षिण ८ मील दामोदर नदीके दोनों तटपर चेचगांवगढ़ और तेलोंजामें प्राचीन खंडित मन्दिर हैं जो कि बहुत प्राचीन बौद्ध या जैन धर्मकी स्थिति प्रगट करते हैं। वेलोंजामें नदीके दक्षिण एक बड़ी नग्न जैन मूर्ति है तथा खंडित पत्थरोंपर बहुतसी जैन या बौद्ध मूर्तियां अंकित हैं। यहां बहुत बड़े खंडित स्थान हैं। बड़े छोटे १६ मन्दिर हैं जो आध-मील लम्बाई व पाव मीलकी चौड़ाईमें हैं। इसके सिवाय नदीकी उत्तर तर्फ दो बाजूमें आध मील तक दूसरे मन्दिर हैं व एक बड़ा मन्दिर दक्षिण तटपर है। ये सब बड़ी भारी कारीगरीको प्रगट करते हैं और उदयपुरके ऐसे ही मन्दिरकी कारीगरीसे मिलते हैं (शायद यह ऋषभदेव धुलेवका मन्दिर हो।)

यहां पर शिलालेखमें दो लाइन पढ़ी गई "चिचितागार और श्रावकी रक्षा वन्शीपरा' उनसे भी श्रावकोंके बनाये मंदिर हैं ऐसा प्रगट हैं। वेलूजामें एक नवरत्न मंदिर था जिसको तोड़कर वर्त्तमानका मंदिर बनाया गया है।

पत्रनपुर—वराभूम परगनेका एक गांव जहां बहुतसे मंदिरोंके खण्ड हैं, जिनकी जांच नहीं हुई हैं। यहां राजा विक्रमादित्यका संबंध रहा है। कारीगरी बहुत अच्छी है। एक नमूना अजायबघरमें भेजा गया है जो दो फूट ऊंचा व ६ इञ्च वर्ग नीचे हैं। चारों तरफ तीर्थंकरोंकी मूर्तियां हैं। यहां भी प्राचीनता प्रगट है।

पाकवीर—पञ्चसे २ मील और पुरुलियासे दक्षिण पूर्व २५ मील पर्गना बगलामें जहां बहुतसी मूर्तियां खास कर जैन हैं जिनका पूरा वर्णन बेगलर साहबने आरक्लिाजिकल सार्वे इण्डिया रिपोर्ट जिल्द ८ वों में दिया है, खास ध्यान देने योग्य एक बड़ी मूर्ति श्री वीर २४ वें तीर्थंकरकी है जो भीरमके नामसे पूजी जाती है। यह ७॥ फुट ऊंची खड्गासन है। जहां यह बिराजमान है वहां और भी मूर्तियां है। बैल, सिंह, कमल, बकरा, आदिके चिह्न हैं यहांपर पांच बौद्ध मूर्ति भी मिली हैं जिनमें एक पुरुष व एक स्त्रीकी है। पासमें लार्थोन डुंगरीकी पहाड़ी पर बहुत खंडहर हैं।

बेगलरसाहब आरकिलोजिकल सर्वे जिल्द ८ वीं में कहते हैं कि इसमें सन्देह नहीं कि पाकवीर या पञ्च बड़े प्रसिद्ध स्थान हैं। वीक पारके सब मंदिर जैन और बौद्धोंके है।

पांचेत व पांचकोट—एक पहाड़ी १६०० फुट ऊंची ३ मील तक चली गई है। यहां पांचेत राजाका किला है जो देखने योग्य है।

पार—पुरुलिया और गोविन्दपुरके मध्य एक ग्राम खरगाली और अनारा रेलवे स्टेशनसे ४ मील। यहां भी श्रावकोंके प्राचीन मंदिर हैं तथा यहांके पास झापरा आदिमें भी हैं।

तेलकुपी—दामोदर नदीके दक्षिण तटपर चेलियामा परगनामें ७ मील चेलियामासे। यहां बहुतसे मंदिर बड़ी भारी कारीगरीके हैं। यहां जैन बौद्ध ब्राह्मणोंके (तीनोंके) मंदिर हैं।

कर्नल डैलटनने मानभूममें दौरा किया था, जो एशियाटिक

सोसाइटी बंगाल जर्नल सन् १८६८ नं० ३५ में छपा है। उससे मालूम हुआ कि मानभूमिमें प्राचीन कारीगरीके बहुतसे चिह्न अवशेष हैं जो सबसे प्राचीन हैं और जैसा यहांके लोग कहते हैं वे वास्तवमें उन लोगोंके हैं जिस जातिके लोगोंको सिराव, सिराब, सिराफ या सराबक कहते हैं जो शायद इस भारतके भागमें सबसे पहले बसनेवाले थे। सिंहभूमिके पूर्वीय भागोंमें भी श्रावकोंकी प्राचीन बस्ती प्रसिद्ध है। ये श्रावक नदियोंके तटोंपर आकर बसे। और हम उनके खण्डित मंदिर दामोदर, कसाई तथा अन्य नदियोंके तटों-पर पाते हैं। ये लोग जीव हिंसासे घृणा करते है और सूर्य उदय बिना भोजन नहीं करते हैं तथा ये श्री पार्श्वनाथजीको पूजते हैं। They are represented as having great scruples against taking life They must not eat till they have seen the sun and they venerate Parsnath सन् १८६३ में मैं पुरुलियासे १२ मील झापगमें ठहरा था और कुछ गाववालोंसे मिला था। वे बहुत ही प्रतिष्ठित और बुद्धिवान पुरुष मालूम होते थे। वे अपनेको श्रावण कहते थे तथा वे इस बातका अभिमान करते थे कि इस बृटिश राज्यमें उनमेंसे किसीको अबतक कोई फौजदारी अपराधका दण्ड नहीं मिला है।

कलकत्ता म्यूजियममें मूर्तियां—मानभूम जिलेके पुराने मंदिरोंसे प्राप्त मूर्तियां:-ता० २१ अगस्त १८७७ को वी. वाल साहबसे भेट की। उनका हाल यह है-(१) श्रीशांतिनाथजीकी एक मूर्ति २ फुट ऊंची १ फुट चौडी खड्गासन। मुख कुछ खंडित है। नं० एग, एम १।

(२) श्री ऋषभदेवकी मूर्त्ति खड्गासन २४ तीर्थंकर सहित २ फुट ऊँची अखण्डित नं० एम, एम २ ।

हमारा भ्रमणः—हम मानभूमि जिलेमें प्रतिमाओंको देखनेके लिये गये थे। भाई श्रीराम रांचीवालोंके साथ प्राचीन मूर्तियोंको ढूंढनेके लिये यहांसे २५ मील पाकवीर गए। हमारे साथ भाई लादूराम व एक कोडरमाके भाई और थे।

पाकवीर ।

मानभूम गजटियरसे मालूम करके कि यहां प्राचीन मूर्तियां हैं, हम लोग मोटरपर गए परन्तु ६ मील पहले ही मोटर बिगड़ गई इससे हम लोग पैदल चलकर घातरि गांवमें आए, वहांसे ३ मील पाकवीर जो खेतोंमें होकर जंगलमें था, एक रास्ता बतानेवालेको साथ लेकर शामको पाकवीर पहुचे, वहां देखते हैं तो खेतों व गांवोंके बीचमें एक सरोवरके तट ऊंचाई पर एक बड़े मैदानमें चारों तरफ ४ मन्दिर पत्थरके व ३ इंटोंके टूटे पड़े हैं। ४ के शिखर अपनी प्रभुताको दिखा रहे हैं। इंटोंके मन्दिर टीलेसे बन गये हैं, पत्थरके मंदिर जमीनमें घसे हुए हैं—शिखर ऊपर जमीनके है इन इंटोंके मंदिरके वेदीके वहां १ फूंसके छप्परके नीचे जाकर देखा तो मन प्रसन्न हो गया। श्री बाहुबलीजीकी मूर्तिके समान खड्गसान ५ हाथकी मूर्तिके दर्शन करके वैराग्य छा गया। यह मूर्ति बहुत ही शांत है। अन्य गांववाले भैरो करके पूजते हैं। सिन्दूर व तेल लगाते हैं। इस मूर्तिकी प्रक्षाल करनेको बगलमें खडे होनेको स्थान वैसाही बना है जैसा श्री जैनबद्रीके मन्दिरोंमें व हेलेविड़के मन्दिरोंमें है। इस

मूर्तिके आसपास नीचेकी भांति मूर्तियां और विराजमान थीं। सब जमीनमें पड़ी हुई थीं। १। हाथ पद्म०, २ हाथ पद्म०, १ हाथ खड्ग०, १॥ हाथ ख०, १ हाथ ख०, १ हाथ पद्म०, १ चौमुखी पद्मासन मंदिर २ हाथ, १ प्रतिमा वृक्षके नीचे माता पिता, ऊपर वृक्षके ध्यानस्थ पार्श्वनाथ। एक चौमुखी पट या इन्द्र इन्द्राणी भीतमें रखा है। इन सब प्रतिमाओंके आसन पर सिंह आदिके चिह्न हैं। श्री पार्श्वनाथ व महावीरकी प्रतिमाएँ बहुत ही वैराग्य पूर्ण हैं। वे सब प्रतिमाएं अखण्डित हैं और बहुत अच्छी कारीगरीकी व बहुत प्राचीन अनुमान २००० वर्षकी होंगी। एक पद्मावतीकी मूर्ति १॥ हाथ है। थोड़ी दूर हटके एक दूसरे छप्परके नीचे बहुत ही मनोज्ञ श्री ऋषभदेवकी २॥ हाथ खड्गासन मूर्ति चौबीसी सहित है। १ पद्मावतीके ऊपर पार्श्वनाथ हैं। कुछ खंडित खण्ड हैं। यहांकी प्रतिमाओंके दर्शन करके अपूर्व आनन्द हुआ। वैसे ही कुछ दुःख भी हुआ क्योंकि इन पूज्यनीय दि० जैन प्राचीन मूर्तियोंकी न प्रक्षाल पूजन होती है न पशु आदिसे सुरक्षित हैं। पशु भी भीतर घुसकर प्रतिमाओंके आसपास मलमूत्र कर सक्ते हैं। हम लोगोंने श्रीपतिराय बङ्गाली ब्राह्मण पुजारीको बुलाया जो भैरों मानकर बड़ी मूर्तिकी पूजन करता है। उससे यह चेष्टाकी कि हम लोगोंको इनमेंसे एक दो भी मूर्तियां मिल जावें परन्तु उसने देनेसे इनकार किया तथा यह कहा कि यहां मंदिरोंके टीलोंको खोदनेसे बहुत प्रतिमाएं मिल सक्ती हैं—तुम अपने मजदूर लाकर खुदवा सक्ते हो और लेजा सक्ते हो। रात्रि पड़नेसे हम पाकबीर गाममें इसी पुजारीके घरमें ठहरे। इसने सबको योग्य स्थान

व अन्य आवश्यक सामान देकर बहुत सन्मान किया। पाकवीर यह बड़ा नगर होगा ऐसा दीखता है क्योंकि कई छितरे हुए गांवोंको पाकवीर कहते हैं। इस गांवमें एक मन्दिरके द्वारके स्तम्भ गलीमें पड़े हुए थे उनमें दो खम्भोंमें दो खड़गासन तथा १ बीचकी चौखट जो खम्भोंके ऊपर थी पद्मासन मूर्ति बनी है—उन तीनोंको मार्गसे उठवाके किनारे रखवाया। रात्रिको ठहर सबेरे पानी छानकर इन पूज्यनीय प्रतिमाओंका प्रक्षाल किया। बड़ी मूर्तिपर माथेपर त्रिशूल सिंदूरका बना था उसको साफ करके अच्छी तरह प्रक्षालकी। फिर भी चेष्टाकी कि प्रतिमाएं मिल जावें। परन्तु सफलता न हुई। बड़ी मूर्तिके ऊपर छप्पर टूट जानेसे पानी वर्षाती आता था उसके लिये २) दिये कि छप्पर ठीक कराया जावे। फिर चलकर १ मील पंखा गाममें आए। यहां भाई लादूलालके मुलाकाती एक दुकानदार क्षत्री शाकाहरी रामलाल चक्रवर्ती थे। लादूरामजी सेठ रतनलाल सूरजमल पुरुलियाकी दुकानके मुनीम हैं। इस चक्रवर्ती महाशयने हम लोगोंका बहुत सन्मान किया। एक पवित्र स्थान बताया जहां खिचड़ी बनी और बड़े भारी श्रमके पीछे हमने आहार किया। यहां एक नदीके तटपर एक टीला है जो सड़कसे १ मील है. यहां पर जैन प्रतिमाओंको सुनकर हम लोग देखने गए तो मालूम हुआ कि यहांपर भी जैन मन्दिर था। एक वृक्षके नीचे दि० जैन प्रतिमाएं विराजमान हैं। ४ प्रतिमाओंमेंसे दोको तो खण्डित किया गया है। कहते हैं कि बदमाश चोरोंने खंडित की हैं जिसको जानकर बहुत दुःख हुआ। एकका नीचेका पग मात्र है कमरके ऊपरका भाग नहीं है। एक

खण्डित ३॥ हाथकी मनोज्ञ मूर्ति ऋषभदेवकी है, मस्तक नहीं है इसमें चौवीसी बनी है। अखंडित प्रतिमा श्री ऋषभदेवकी तीन हाथकी खड्गासन चौवीसी बनी है। दूसरा अखण्डित एक पाषाण है जिसमें एक वृक्ष दो हाथका है। इसके ऊपर एक पद्मासन जैन मूर्ति है उसके दोनों तरफ दो इन्द्र हैं। वृक्षके बीचमें एक बालक शाखापर बैठा है नीचे माता पिता बने हैं। माताकी गोदमें बालक है। पिताके जनेऊ है। नीचे आसनमें ७ मनुष्य गृहस्थ बने हैं। यह प्रतिमा किसी तीर्थंङ्करके जन्म कल्याण व तप कल्याणकको सूचित करती है। बड़ी ही ऐतिहासिक हैं। इन दो प्रतिमाओंको इस अविनयके स्थानसे ले जानेके लिये बहुत प्रयत्न किया परन्तु उस समय सफलता न हुई। चक्रवर्तीने कहा कि हम पीछेसे विचार करेंगे। यहां मालूम हुआ कि बुधुपुर जो यहांसे ३-४ मील है वहा व अन्य गावोंमें बहुतसी प्रतिमाएं है जो इधर उधर पड़ी है गांववाले कोई देवी देवता मानकर पूजते हैं। इस पंचागामकी प्रतिमाओंको गामवाले वर्षमें केवल एक दिन पूजते हैं। यदि इन प्रतिमाओंकी रक्षा न की जायगी तो कोई खण्डित कर डालेगा-इसका उपाय किया जाना चाहिये। विहार सर्कार द्वारा ऐसा हुक्म लेना चाहिये कि जहां कहीं पूज्यनीय प्रतिमाएं अविनयमें हों वहांसे मिल जाया करें। ऐसा न होनेसे धर्मकी बड़ी अविनय होती है। यहां मालूम हुआ कि यहांके पुलिस थानेमें एक प्रतिमाजी हैं। वहां जाकर देखा तो १। हाथकी ऊँची खड्गासन श्रीमहावीरस्वामीकी प्रतिमा मैदानमें पड़ी है। थानेदारको कहा तो उसने कहा कि हमारा एक सिपाही पूजाके वास्ते लाया है,

दे नहीं सक्ते। यह भी अखण्डित व पूज्य हैं। यहांसे बैलगाड़ीमें चलकर सुदी ७ को हम लोग पुरुलिया लौटे।

बाडा बाजार।

पूज्यनीय प्रतिमाओंका लाभ—यहांसे तुरत ही श्रीरामजीके साथ हम बलरामपुर गए। यहा सेठ जूथाराम रामप्रतापकी दूकान है। यहां ४—६ जैनी व्यापारी रहते हैं। रुचि कम है इससे चैत्यालय नहीं हो सकता है। यहां आहार करके हम श्रीराम रामलालजीके साथ चलकर ११ मील बाडा बाजार सवेरे आए। अष्टमीके कारण हम यहीं ठहरे। सवेरे ही यहां एक अग्रवाल वैष्णव भाईके घरमें गए। इस समय इस भाईने एक बडी मनोज्ञ २ हाथ ऊँची खडगासन श्री आदिनाथकी चौबीसी सहित प्रतिमाको रख छोडा था, जिसका दर्शन कर बड़ा आनन्द हुआ। इस भाईने सहर्ष प्रतिमा देना स्वीकार किया। यहां एक अंग्रेज रहता है उसने बाडाबाजारके आधे कस्बेको एक राजासे अपने हस्तगत कर लिया है, अपनी जमीदारी जमा ली है। उसकी कोठी चलती है। यह सुनकर कि इस अंग्रेजके बंगलेमें दो प्रतिमाएं हैं हम लोग देखने गए। वहां देखते है तो एक २॥ हाथ दूसरी २ हाथ ऊँची खड्गासन प्रतिमा चौवीसी सहित अविनयसे मैदानमें पड़ी है जिनमें बड़ी बहुत ही मनोज्ञ है तथा छोटीके मुखके उपाङ्ग नहीं दिखते हैं—घिस गये हैं। उन प्रतिमाओंके वास्ते उस बङ्गालीसे बात की जिसके आधीन बंगला था। साहब बाहर गए हुए थे। उस समय बंगालीने दोनों प्रतिमाओंको देना स्वीकार कर लिया। हम लोगोंने तुर्त गाड़ीपर उनको विराजमान किया और

तीसरी प्रतिमा उस अग्रवाल भाईके घरसे ली। तीनों प्रतिमाओं सहित श्रीरामजी रांचीवाले उसी दिन बलरामपुर लौटे। हम उपवासके कारण यहां ठहर गए। यहां २५-३० दुकानें मारवाडियोंकी हैं। काम अच्छा चलता है। भजनाश्रम नामक एक मण्डली वृन्दावनकी है जो भगवतगीताका प्रचार योगसाधनाका अभ्यास, संस्कृत व हिन्दीका प्रचार करती है। इसने १०० स्थानोंमें पाठशालाएं स्थापित करदी हैं। इस बाडाबाजार व बलरामपुरमें पाठशालाओंमें अध्यापक अच्छे सरल-स्वभावी व अपने धर्मके जानकार व वैरागी हैं। बंगाली छात्र भी अच्छी तरह हिन्दी बोलते व पढते हैं व हिन्दीके भजन जिनमें कुछ आध्यात्मिक रस हैं बोलते हैं। यह आश्रम मान्साहारके प्रचारका निषेध करता है, अहिंसा सत्य व ब्रह्मचर्यका प्रचार करता है। बाराबाजारमें कई बंगाली लडके मिले जो इस आश्रममें पढनेसे मांसाहार छोड चुके थे। इन्होंने हिन्दी व धर्मकी खास पुस्तकें छपाई हैं। वृन्दावनसे सम्बन्ध रहता है। यहां रात्रिको बाजारमें सभा करके आत्मोन्नति व अहिंसाका उपदेश दिया। फिर हम आषाढ सुदी ९ को बलरामपुर लौटे।

नीमडी ष्टेशन—दो प्रतिमाओंके दर्शन व भोजन करके तीसरे पहर सेठ जूथारामजीके साथ हम नीमडी ष्टेशनपर आए। यहां भी बाडाबाजारवाले साहबका बङ्गला है। जो स्टेशनसे १॥ मील है। वहां हम देखने गये तो उसके बङ्गलेके हातेमें तीन प्रतिमाएं खडी हैं जिनमें २ जैन व १ बौद्धकी है। जैन प्रतिमाएं उसी नमूनेकी दो हाथ ऊँची श्री आदिनाथ तथा श्री महावीर स्वामीकी हैं, बडी मनोज्ञ है। ये मूर्तियें वहांपर अधिकारी न होनेसे न मिल सकीं। परन्तु जूथारामजीने साहबके दफ्तरसे आज्ञा लेकर प्रतिमाओंके लानेको

कहा। दूसरे दिन १० मीको हम चलकर पुरुलिया लौटे—यहांपर भी सन्ध्याको भाई लेखराजजीके घरपर सब जैनी भाईयोंको जमा किया जो १० के करीब होंगे, श्रावकधर्मका उपदेश दिया। कई भाइयोंने स्वाध्याय व जापका नियम लिया। २ वैष्णव अग्रवालोंने रात्रिको चौमासेमें अन्नाहार त्यागा। यहांसे चलकर कलकत्ता आषाढ़ सुदी ११ ता० ५ जुलाईको आए। ये तीनों मूर्तियां जो बाहाबाजारमें मिली थी रांचीके मंदिरजीमें श्रीरामजी द्वारा पहुंच गई हैं। श्रीरामजीने बड़ा ही परिश्रम किया। उनका प्रेम सराहनीय है—इधर बाहाबाजारके आस पास ग्रामोंमें बहुत प्रतिमाएं मिल सक्ती हैं। किसी भाइको वहां रहकर उद्योग करना चाहिये।

कतरासगढ़—कलकत्तासे मानमल कासलीवाल और पन्नालाल ता० ३० सितम्बर २२ को कतरासरो आठ मील दूर दामोदरपुर गए। वहां प्राचीन जैन मंदिरोंके चिह्न हैं। नदी पारकर बेलुआग्राम गए वहां अनन्तनाथ दुबे जमींदारके घरके सामने एक मन्दिरमें महावीरस्वामीकी मूर्ति देखी चौबीसी बनी थी। पूर्ण अखण्डित नहीं थी। यहांसे १ मील वेलोट ग्राममें ४० घर प्राचीन श्रावकोंके मिले उनको उपदेश देकर धर्ममें स्थिर किया। रमानन्दन मांझीके घरमें एक स्तूपमें अंकित अखण्डित खड्गासन दि० जैन मूर्ति थी उसको एक मकानमें स्थापित कराकर दर्शन पूजा करना बताया। जैन शास्त्र दिये। उनका पढ़ना स्वीकार किया। ये लोग पानी छानकर पीते, उदम्बर फल नहीं खाते व मार्गमें भी जन्तु बचाकर चलते हैं।

यहांसे १॥ मील चेचो ग्राम गए वहां १५-२० जैन मंदिरोंके खण्डहर हैं। मूर्ति न मिली। बेलौटसे ७ मील वाटविनूर ग्राम गए।

यहां विष्णु पाठकके घरमें १ दि० जैन मूर्ति खड्गासन ३ फुट ऊंची चरण रहित देखी। इस घरके पास तीन दि०जैन मंदिरके खण्डहर हैं। यहां सोनेका सिंहासन निकला था। यहां व अन्यत्र खुदानेकी जरूरत है। महाल ग्राममें पन्नालाल छगनलाल सरावगीकी दूकान है। मुनीम पन्नालाल झांझरीने ७ मील वेलौट ग्राम आकर शास्त्र पढना स्वीकार किया। कतरासमें बालाबक्स रामनारायणजीके यहां ठहरनेका स्थान है। इधरके श्रावकोंका हाल इस तरह मालूम हुआ:—

(१) वेलोर ग्राम, पो० चाश, ४० घर, मुखिया रामनाथमांझी, चन्द्रशेखर, वैकुण्ठ मांझी, रामेश्वर मांझी, रखोरी मांझी, हरि मांझी।

(२) कुमारी पो० महुदा १६ घर। मुखिया कंगाल मांझी, दरमो मांझी।

(३) परखतपुर पो० चाश १० घर। मुखिया केसरमंडल, जगत मंडल।

(४) कुमटांड पो० चाश ६ घर। मुखिया वैकुण्ठ झांकी, घोटाई मांझी।

(५) देवग्राम पो० चाश १२ घर। मुखिया विहारी मंडल, काला मांझी।

(६) ऊपरबन्धा पो० चाश ६ घर। मुखिया दुलाल मांझी, गोपी मांझी।

(७) मुहाल पो० मुत्रिडी १६ घर। मुखिया कच्छू मांझी, रुद्रू मांझी।

(८) इंछाक पो० चिलेमा १५० घर। मुखिया काढी मांझी, खांदू मांझी, धीरज मांझी।

(१०)

सिंहभूम जिला।

बङ्गाल गेजेटियर सन् १९१० जिल्द २० से जो पता चला है वह नीचे भांति है—

सिंहपुर छोटानागपुरके दक्षिण पूर्व है। ३८९१ वर्ग मील है व ६१३५७९ मनुष्य हैं। पूर्वमें मिदनापुर, दक्षिणमें मयूरभंज, पश्चिममें गंगपुर और रांची, उत्तरमें रांची और मानभूम हैं।

वामन घाटीसे दो ताम्रपत्र १२०० ई० के निकले हैं जिससे प्रगट है कि मयूरभंजके भंजवंशके राजाओंने बहुतसे ग्राम भेट किये थे। इस वंशके संस्थापक वीरभद्र थे जो १ करोड़ साधुओंके गुरु थे (जर्नल एसि० बङ्गाल) सन् १८७१ स० १६१-६९,) "ये जैन थे" यहां तांबेकी खाने हैं व मकान हैं जिनका काम प्राचीन लोग करते थे। वे लोग श्रावक थे। पहाड़ियोंके ऊपर घाटीमें व घने बङ्गलोंमें व वस्तीमें बहुतसे प्राचीन चिह्न है। यह देश श्रावकोंके हाथमें था। मेजर टिकलने १८४० में लिखा है "सिंहभूम श्रावकोंके हाथमें था जो अब करीब २ नहीं रहे परन्तु तब वे बहुत अधिक थे। उनका असली देश सिखरभूमि और पाञ्चेत कहा जाता है। श्रावकोंको सताकर कोल्हानसे निकाला गया। (जर्नल एसि० १८४० स० ६९६)। कर्नल डेलटनने बङ्गाल एथनोलोजीमें लिखा है। यह बात सब तरफ मानी हुई है कि सिंहभूमका एक भाग ऐसे लोगोंके पास था जिन्होंने अपने प्राचीन स्मारक मानभूम जिलेमें रख छोड़े है और वास्तवमें बहुत प्राचीन लोग थे जिनको-

श्रावक या जैन कहते हैं। कोलहनमें भी बहुतसे सरोवर जिनको हो जातिके लोग सरावक सरोवर कहते हैं।

श्रावक या गृहस्थ जैनोंके जङ्गलोंमें घुसकर तांबेकी खानें खोदीं जिसमें उन्होंने अपनी शक्ति व समय खर्च किया (A. S. B. 1869 P 179-5) क्योंकि मानभूममें जैन मन्दिर १४ वीं व १५ वीं शताब्दी तकके हैं, यह खयाल किया जाता है कि इस समय ये लोग सिंहभूममें आए होंगे।

सिंहभूमके जनियोंके प्राचीन चिह्न।

वेनूसागर-मांजगांवसे उत्तर ७ मील—यहां कई पुराने मन्दिर सातवीं शताब्दीके हैं। यहां एक जैनमूर्ति तथा एक बौद्धमूर्ति है। यहांका सरोवर किशनगढ़के राजा कृष्णके पुत्र राजा वेनूने बनाया था।

कोल्टन—यहांके प्राचीन निवासी श्रावक थे। इन्होंने बहुतसे सरोवर बनाए थे।

रुआम—ढालभूममें एक ग्राम महुलियासे २ मील दक्षिण पश्चिम। यहां कुछ प्राचीन स्थान हैं जिनसे यहां पहले श्रावक लोग रहते थे ऐसा प्रगट होता है।

सिंहभूमिके सम्बन्धमें एक लेखपत्र "शिक्षा" बांकीपुर ता० ४ मई १९२२ में छपा है, जिसमें जैनियोंके सम्बन्धमें जो वर्णन है वह इस भांति है—

"परन्तु हो जाति तथा मुयांको छोड़ अन्य इन जाति समुदायको यहां आकर बसनेका काल तीन शताब्दियोंसे अधिक नहीं निश्चित होता है। एक शताब्दीके पूर्व सिंहभूमिके कई अंशोंमें

और पोड़ा हाटके अन्दर जैन सम्प्रदायकी अधिक वस्ती थी। जिन्हें यहांके आदिम निवासी लोग सोराख (सरावगी) कहते हैं। इनके बनाये इस देशमें अनेक ताल, बान्ध, पोखरा हैं जिन जलाशयोंसे देशस्थ प्रजामण्डलीको इस समय खेती बारीश और दूसरे कामोंका बड़ा उपकार हुआ है। कहीं २ इनके ईटोंके मकानके खण्डहर भी मिलते हैं। इन आचार्योंके पूज्य पत्थरकी खण्डित मूर्तियां भी अनेक जगहोंमें एवं धरतीके भीतर गड़ी हुई मिलती है। अब इस जातिका केवल नाममात्र रह गया है अर्थात् इस जातिके मनुष्य अब कहीं इस जिलेमें नहीं पाये जाते हैं। जैनोंके बनाये जलाशय और कहीं पक्के मकानोंके खण्डहर देखनेसे और देशस्थ लोगोंके कहनेसे बोध होता है कि यहां जैन अधिक दिन और ऐश्वर्यशाली एवं स्वाधीनता-पूर्वक बसते थे। कहीं २ पृथ्वीतलसे गड़े पुराने रुपया, असर्फी तथा कीमती नाना वर्णके पत्थरोंकी माला, सुन्दर चित्रित काचकी फूटी चूड़ियां मिलती हैं, जो प्राचीन समयमें व्यवहृत होती थीं।

नोट—सेठ बैजनाथजी सरावगी रांचीकी प्रेरणासे कि इन प्राचीन श्रावकोंको अपने धर्मकी स्मृति कराई जावे, हम रांची मिती जेठ सुदी ६ ता० १ जूनको आये। भाई बैजनाथजीके पुत्र धर्मचन्द्रका विवाह था जिसका यज्ञोपवित संस्कार हमने अन्य तीन बालकोंके साथ जेठ सुद ७ को कराया। विवाहके अवसरपर बैजनाथजीने इन प्राचीन श्रावकोंको निमंत्रण दिया था। उनमेंसे कुछ भाई आए थे। उनको श्रावक धर्म समझाया गया व पूजा पाठ आदिकी रीति बताई

गई। फिर आषाढ वदी १ ता० १० जूनको सेठ रतनलालजीके साथ मोटरमें खूंटी आए। यह रांचीसे २३ मील है। यहां केशरीमल सुन्दरमलकी दूकान है। यहां ५-७ जैनी हैं। चैत्यालय नहीं था सो मानभूम जिलेसे निकली प्राचीन अखंडित मूर्तिको जिसको हमलोग साथ लेगये थे, केशरीमलजीके घरमें उच्चस्थानपर विराजमान किया गया। इन भाईसाहबको धर्मसे अच्छी प्रीति है। दूसरे दिन यहांसे ७ मील हांसी आए।

हांसी।

यहां मुख्य श्रावक हरखचन्द मांझी, गोपी मांझी, नवीनचन्द्र मांझी आदि हैं। सबको श्रावक धर्मका उपदेश दिया गया और उनका पुराना इतिहास समझाया गया तथा कहा गया कि जब आप श्री पार्श्वनाथको अपना कुलदेवता मानते हैं तब उनकी मूर्तिको विराजमान कर उनकी पूजा कीजिये व नित्य दर्शन कीजिये तथा शास्त्र पढ़िये। भाइयोंने कहा कि बुंडूकी तरफ हमारे बड़े लोग हैं, उधर स्थापित होनेसे हम भी कर लेंगे तथा हम शास्त्र पढ़ेंगे। भाई सुन्दरलालजीने प्रति मंगलको जाकर धर्मचर्चा करना स्वीकार किया। ता० १२ की शामको हम रांची आए।

बुंडू-तमाड़।

ता० १५ जूनको बाबू बैजनाथ सरावगीके साथ एक प्राचीन प्रतिमाको लेकर हम लोग मोटरमें बुंडू २८ मील आए। यहांसे पुन्दा माझी, नन्दलाल मांझी, गोपाल मांझीको साथमें लेकर ९ मील तमाड़ रात्रिको पहुंचे। नदी चढ़ जानेसे मोटर न जा सकी तब पैदल

गए। सामान घोड़ेपर रक्खा। यहां मधुसुदन मांझी, केसव मण्डल आदि भाई मुख्य हैं। १० घर हैं। सब श्रावकोंको जमा करके श्रावक धर्मका उपदेश दिया-कईने मधु खानेका त्याग किया। एक दोने रात्रिको भात खाना त्यागा। शास्त्र पढ़ना स्वीकार किया। प्रतिमाके लिये नौ-डिह ग्रामकी सम्मति मुख्य बताई। हम लोगोंने सुन रक्खा था कि देवलडिह ग्राममें एक प्राचीन जिन मन्दिर है इसलिये पहले वहां ही जाना उचित समझकर रातों ही रात बैलगाडीसे चल दिये।

हुरुंडी, देवलडिह, नवाडीह।

तमाडसे १४ मील चल दोपहरके करीब हुरुंडी आए यहां पीताम्बर मांझीके वहां ठहरे। इन्होंने बड़े प्रेमसे स्वागत किया। यहां भोजन पान करके यहांसे १ मील देवलडीह गए। वहां प्राचीन जिन मन्दिरको देखते ही मन प्रसन्न होगया। भीतर श्री आदि देव या ऋषभदेवकी ४। हाथ ऊंची १॥। हाथ चौडी मनोज्ञ अखंडित मूर्तिके दर्शन कर हमें और सेठ बैजनाथजीको जो आनंद हुआ वह वचनोंसे कहा नहीं जा सकता। मूर्ति बडी ही अतिशय युक्त है। दिल यह चाहता है कि दर्शन करते रहो। दोनों तरफ चमरेन्द्र हैं। इस मूर्तिके सिवाय दो मूर्त्ति और दो दो हाथकी ऊँची अखण्डित विराजमान थीं। एक ऐसी ही मूर्त्ति खंडित थी। इनमें चोतरफ चौबीसी बनी हुई है। मंदिर अति जीर्ण होगया है। शिखर ईटोंका है सो बहुतसी ईटें इधर उधरसे गिर पड़ी है। पत्थरके किवाड़ थे सो नहीं रहे जिससे पशु आदि भी भीतर जाकर अविनय करते हैं। लोग वासुदेवकी मूर्त्ति कहकर पूजते हैं—तेल सिन्दूर चढ़ाते हैं। [illegible]-

हका एक भाग बाहर पड़ा है उसमें मनोज्ञ इन्द्र बने हैं। इस शिखरके चारों तरफ बहुत बड़ा हाता ऊंचा नीचा है इसके खोदनेसे कुछ प्रतिमाएं मिल सकती हैं। यह एक बहुत बड़ा मन्दिर होगा। ईंटोंकी चौड़ाई व प्रतिमाजीके पाषाणके देखनेसे यह मंदिर २००० वर्षसे भी पुराना विदित होता है। यहां श्रावकोंके १५ घर हैं संख्या १०० होगी। मुख्य भाई नन्दलाल मांझी, भीम मांझी, हरू मांझी आदि हैं। इन भाईयोंको समझाया गया कि इस प्रतिमाजीकी सेवा करो तेल सेन्दुर आदिसे चार २ अंगुल मैल चढ गया था जिसको वैजनाथजीने बड़े परिश्रमसे साफ किया। किवाड़ आदि लगनेके लिये ताकीद की गई। इस मंदिरजीके जीर्णोद्धारकी जरूरत है। ५ व ६ हजारमें यह काम हो सकता है। कोई भाई करायेंगे तो बहुत पुण्य लाभ करेंगे।

नवाडिह।

देवलडिहसे १ मील नवाडिह ग्राम है। यह खास वैकुण्ठ मांझी श्रावकका गांव है। यहां ५०–६० घर हैं। संख्या २५० से अधिक होगी। यहां मुखिया वैकुण्ठ मांझी, मुरली मांझी, वनमाली मांझी आदि हैं। इन श्रावकोंमें इधर उधर गृहस्थाचार्य पाये जाते हैं। ये लोग यज्ञोपवीत पहनते हैं, श्री पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा रखते हैं। विवाह जन्म आदिमें प्रतिमाका न्हवन किया जाता है। वे भी श्रावक होते हैं। इनका सम्बन्ध अन्य श्रावकोंसे होता है। अन्य श्रावक अब यज्ञोपवीत नहीं रखते हैं। यहां भी जीवन नामके आचार्य थे उनके यहां पीतलकी छोटी प्रतिमा थी। आसन व नकशा ठीक न था।

अविद्याके कारण यह भी सब विधि भूल गए। यहांके भाइयोंको चैत्यालय स्थापनाके लिये उपदेश दिया गया तब सबने सलाह कर अष्टमीके दिन ८-९ गांवकी कुल पञ्चायतोंको पत्र लिखकर बुलाया। उस दिन सब भाई जमा हुए, हमने और बैजनाथजीने उनका पुराना इतिहास बताकर श्रावक धर्मका कर्तव्य कहा और यह समझाया कि श्रावक गृहस्थ धर्मको कहते हैं। जाति आपकी वैश्य है, क्योंकि शास्त्रमें कहा है कि जो कृषि, वाणिज्य और मसि (लिखने) का कर्म करते हैं उनको वैश्य कहते हैं। श्री पार्श्वनाथजी अपने कुलदेवताका पूजना सब पञ्चायतने ठीक समझा और देवलडिहके मंदिरकी महिमा समझकर आठवें दिन वहां दर्शनको जाना मंजूर किया तथा इस ग्राममें प्रतिमा स्थापन भी स्वीकार किया और ग्रामवालोंने दर्शन करना मंजूर किया। हमने सर्व पञ्चायतको बहुत २ धन्यवाद दिया। दूसरे दिन सवेरे ही जो प्राचीन प्रतिमाजी हम लोग अपने साथ ले गये थे उसे बड़ी भक्तिभावसे योग्य स्थानमें विराजमान कराया तथा अभिषेक और पूजनकी विधि बताई। श्री पार्श्वनाथकी पूजा लिखा दी। सब भाइ-योंके विचार हैं कि शीघ्र ही यहां अलग चैत्यालय बना लिया जाय। यहां सरकारी स्कूलमें एक श्रावक बेनीमाधव मांझी मास्टर है वह बहुत चतुर हैं इनको सब बातें समझा दीं। तड़ाई गांव पोष्ट तमा-ड़में भी संस्कृतके माष्टर राधानाथाचार्य हैं इन्होंने जनसंख्या विवरणमें अपनेको जैन लिखाया था। तड़ाईमें दूसरे माष्टर सेवारामजी हैं। ये सब भाई जैन पुस्तकोंको पढ़ेंगे तो श्रावक धर्मका सब हाल जान जावेंगे। इन सबको पुस्तकें भेजी जावेंगी।

तमाड़-नौडिह।

यहासे चल ता० १८ की रात्रिको तमाड लौटे। दूसरे दिन मधुमूदन मांझीको साथ लेकर यहांसे २ मील हम लोग नौडिह पहुंचे। यहां १७ घर हैं। करीब १२५ जनसंख्या है। यहां वृद्ध गृहस्थाचार्य रहते हैं। इनकी उम्र ६५ वर्षकी होगी नाम हराधन है। इनके बडे क्रमसे जामनाथ, रामदास, बलराम, भृगुराम ऐसे चार पीढीके नाम है। हराधनके भाई व पुत्र है, एकका नाम भृगुराम है—हराधनसे मालूम हुआ कि ये श्रावक लोग सर्युनदीके तट कीकहनीसे आए थे। ये अग्रवाल है, इनके १७ गोत्र हैं। नाम आद्यदेव, ऋषिदेव, सांडिल्य, काश्यप आदि कुछ बताए। इनके यहां एक बैठी एक खडी आसन दो पीतलकी प्रतिमाएं थीं जिनमें अशुद्धि बहुत थी। हमारे सामने पार्श्वनाथका नाम ले आचार्यने अभिषेक किया फिर चन्दन, पुष्प नैवेद्यसे पूजन किया। अविद्याके कारण मंत्र व पाठादि ठीक नहीं रहे। यहा सब भाईयोंको एकत्रकर चैत्यालय स्थापनके लिये कहा गया। सबने स्वीकार किया। स्थान बनानेके लिये चन्दा शुरू हुआ, उसमें दुर्गामाझीने ५०) कुछो माझीने २५) इसीतरह फुटकर लिखा गया। यह ग्राम पहाडके नीचे बसा है। तमाडके भाईयोंने नौडिहमें चैत्यालय स्थापन करनेको स्वयं भी विचार करनेको कहा। मधुसूदन मांझीने हरिवंशपुराण पढ़ना स्वीकार किया तथा श्री पार्श्वनाथजीकी पूजा व णमोकार मन्त्रादि सीख लिये।

बुंडू।

तमाड़से ता० २० जूनको सबेरे चलकर तीसरे पहर बुंडू आए। मार्गमें बेड़ाडिह ग्राममें वृद्ध मगन मांझीने सबका बहुत सत्कार किया। रात्रिको ५ ग्रामोंकी पञ्चायत बुंडू पुन्दरमांझीके घर पर जमा हुई। नन्दलाल मांझी तो पहले ही तमाड़से लौट गए थे परन्तु पुन्दर और गोपाल मांझीने यात्राभर अनेक कष्ट सहकर भी साथ दिया। सब सभाको उपदेश देकर चैत्यालय स्थापनको कहा गया। यहां २१ घर हैं। १२५ जनसंख्या है। मुखिया वृन्दावन मांझी पुरन्दरमांझी है। सबने चौमासे पीछे स्थापनाकी सहमति दी। तथा नवीन स्थान बनानेके लिये चंदा लिखा गया। यहां जोखीराम मूङ्गराजकी दूकान है। भाई बैजनाथजीके भाई मूंगराज यहीं रहते हैं उनको प्रेरणा की गई कि आप यहां शीघ्र चैत्यालय स्थापना कराइये। भाई मूङ्गराजजीने मकान बनवानेमें पूर्ण चेष्टा करनेका वादा किया। हम लोग ता० २०की रातको चलकर ता० २१ की शामको रांची आए।

सम्पादकीय नोट—ऊपर जो सरकारी रिपोर्ट छपी है उससे तथा अपने भ्रमणके अनुभवसे जो बातें हमने मालूम की हैं वे ये हैं—

(१) इनके आदि देव, धर्मदेव, अनन्त, काश्यप आदि गोत्रोंसे पता चलता है कि यह अवश्य अयोध्याके पास सरयू तट निवासी थे तथा श्री ऋषभदेव, अनंतनाथ, धर्मनाथ जो जैनियोंके इस कल्पकालमें हुए प्रथम, चौदहवें और पंद्रहवें तीर्थङ्कर हैं व जिन्होंने श्री अयोध्याजी व उसीके पास रत्नपुरीमें जन्म प्राप्त किया था उन्हींके खास वंशमें

पैदा होने वाले ये बहुत प्राचीन कालके श्रावक हैं। काश्यप गोत्र श्री पार्श्वनाथ तीर्थङ्करका था—श्री पार्श्वनाथ वास्तवमें इन श्रावकोंके पूज्य कुलदेवता है।

(२) कीडे वाले फलोंको ये लोग नहीं खाते जैसे गुलर आदि। इसकी एक कहावत इन लोगोंमें प्रसिद्ध है—

"डोंइ डूमर (गूलर) पोढ़ो छाती
एइ चार नहीं खाए श्रावक जाति"

इनके जैनी होनेका बड़ा भारी प्रमाण यह है, क्योंकि सिवाय जैनियोंके और कहीं भी गूलर खानेकी मनाई नहीं है।

(३) जीवदयाके बडे प्रेमी हैं, रात्रिको खाना अनुचित समझते है। इनके गृहस्थ आचार्य नियमसे रात्रिको भात नहीं खाते हैं।

(४) मानभूममें प्राचीन जिन मंदिर और प्रतिमाएं बहुत हैं। इन प्राचीन श्रावक लोगोंसे हमारा यह कहना है कि आप लोग अपने भूले हुए धर्मको पालो, श्री पार्श्वनाथजीकी पूजा करो, उनकी शांत ध्यानाकार प्रतिमाके दर्शन विना भात न खाओ। ग्राम२ में चैत्यालय करो। उसमें श्री पार्श्वनाथको विराजमान करो, उनका नाम जपो, श्रावक धर्मकी पुस्तकें देखो, आप अपनेको शूद्र मत मानो—आप वैश्य हैं। कृषि कर्म वैश्यका कर्म है। मालूम होता है आप पहले व्यापारादि करते थे, जब खेती करने लगे तब अपनेको नाच समझ लिया और श्री पार्श्वनाथजीकी सेवा पूजा आपने एक आचार्यको सौंप दी और आप दर्शन करना भी भुल गये। परन्तु आप अपनेको

नीच समझते तो आचार्यके साथ सम्बन्ध न करते। आचार्यके धर्म-पालनसे आपका धर्म पालन नहीं हो सकता। जो करेगा वही फल पावेगा। अब आप ठीक मार्ग पर चलिये जिससे आपकी आत्माको इस संसारके दुःखोंसे छुटकारा मिले।

प्यारे दिगम्बर जैनी भाइयो! आपके हजारों भाई आपके तीर्थंकरोंके खास वंशज मानभूमि, सिंहभूमि, रांची आदिमें हैं जिन ग्रामोंका हाल मालूम हुआ है वह नीचे दिया जाता है—आपका धर्म है कि एक २ भाईको एक एक ग्राममें बिठा दें जो इन श्रावकोंको पूजा पाठ बतावें शास्त्र सुनावे—इनका पुनरुद्धार करना महान धर्म है। एक जीवको जब सम्यक् मार्गपर लाना धर्म है तब हजारों जीवोंका कल्याण कितना उपकारक न होगा? इस कार्यमें आप सब भारतके भाई तन मन धनसे कटिबद्ध हो जाइये। यद्यपि ये हिन्दी समझते हैं परन्तु बङ्गला अच्छी जानते हैं। श्रावक धर्मका बङ्गला साहित्य यहां अच्छी तरह प्रचार कीजिये। तथा ५ व ७ हजार रुपये लगाकर देवलडिहके प्राचीन जिनमंदिरजीका जीर्णोद्धार अवश्य करा डालिये।

रांचीके भाई इन लोगोंके उद्धारमें पूर्ण प्रेमी हैं। यहांके भाइयोंने चैत्यालयके लिये २००) नवाडीह और २००) नौडिह तथा १००) देवलडीह मन्दिरमें कपाट आदिके लिये भेज दिये हैं। हम सेठ रतनलालजी और वैजनाथजीको बहुत धन्यवाद देते हैं उन्हींकी चेष्टासे सब पता चला है। यदि उक्त भाई साहब पूर्ण उत्साहवान रहेंगे और निरन्तर उद्योग जारी रखेंगे तो अवश्य इन श्रावकोंका कल्याण होगा।

जिला रांची।

ग्राम	पोष्ट	घर	संख्या
१ बुण्डू	बुण्डू	२१	१२५
२ पागुरा	"	१२	६०
३ वेडाडिह	बुण्डू	१०	६०
४ गुट्टूहातु	"	४	३०
५ तमाड	तमाड	१०	४०
६ नौडिह	"	२०	१२५
७ हुरंडी	"	१२	८०
८ लहाई	"	१०	६०
९ हासा	मूढ़	८	१००
१० माहिल	"	१५	१५०
११ मेराल	खूटी	७	५०
१२ घाघरा	"	२०	२००
१३ पोकला	"	२	१०
१४ वीरमकेले	"	९	५०
१५ डोडमा	तोरपा	१०	२००
१६ कोरला	"	५	२०
१७ कस्मार	"	१०	१००
१८ सुन्दरी	"	१	७
१९ गजगांव	मूढ़	५	२५
२० हाराडिह	बूंढू	३	१२

२१ अहदारू	कूंड़	१	५
२२ चोंकाहातू	,,	२०	१२५
२३ पड़ाडिह	,,	५	२५

जिला मानभूम ।

ग्राम	पो०	घर	संख्या
१ नवाडिह	पातकुम्	५०	२५०
२ रुगड़ी	,,	१४	८०
३ आगसिया	,,	६	३०
४ देवलडिह	,,	१३	७०
५ चिपड़ी	,,	५	३०
६ नन्दूवाड़ा रघुनाथपुर आदरा छे०से ३ मील		२५०	
७ आदरा	आदरा	१५	
८ खजरा	रघुनाथपुर	४०	
९ बेड़ो	रामकनाली	२५	
१० विलतोड़ा	रघुनाथपुर	१२	
११ नूलनूडी	,,	३०	
१२ दुमेठ	,,	१२	
१३ कासीवेड़ा	,,	१२	

(११)

मयूरभंज।

(आरकीलोजिकल सरवे श्रीनगेन्द्रनाथ वसु द्वारा छपी सन् १९११)

यह एक देशी राज्य है—इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें सिंहभूम, दक्षिणमें कटक, पूर्वमें बालासा मिदनापुर, पश्चिममें बोनाई और क्योनूपर राज्य। इसकी राजधानी बारीपदा है जो बंगाल नागपुर रेलवेके रूपसास्टेशनसे करीब ४० मील है। रेलवे सड़क गई है। यहां ४२४३ वर्गमील स्थान है-सन् १९१८ में महाराज पूर्णचन्द्र भञ्जदेव राज्य करते थे।

इस पुस्तकमें जैनियोंके सम्बन्धमें जो लेख हैं उसका सार नीचे प्रमाण हैं—

जैनियोंके २३ वें तीर्थङ्कर श्रीपार्श्वनाथके धर्म तथा उपदेशका असर अङ्ग, बङ्ग और कलिङ्गमें फैला हुआ था। जैन क्षेत्र समास और अन्य जैन पुस्तकोंमें कहा हुआ है कि ताम्रलिप्त छोड़कर श्री पार्श्वनाथ उस स्थान पर आए जिसको कोपक या कोपकटक कहते थे जहां उन्होंने अपनी दीक्षाके बाद पहला पारणा (आहार) धन्यके घरमें किया, इस समयसे यह कोपक धन्यकटक कहलाने लगा और जैनियोंके बहुत ही पवित्र स्थानोंमें एक स्थान माना जाने लगा। इस कोपकटक या कोपकपुरीको बालासर जिलेमें कोपारी नामसे पहचाना जाता है और यह मयूरभंजके तटपर है। नक्शेके देखनेसे प्रगट होता है कि यह Kupari बङ्गाल नागपुर रेलवेके मारकुना स्टेशनसे ३०-३२ मील होगा।

(नोट—यह स्थान ध्यानमें लेने योग्य है।)

(१) बरसईके पास कोसलीके खंडित स्थानोंमें श्रीपार्श्वनाथ की मूर्ति मिली है जिसके दोनों तरफ ४ मूर्तियां हैं २ पद्मासन, २ खड्गासन—मूर्तिके देखनेसे प्रगट होता है कि यह बहुत प्राचीन समयकी है जब कि मयूरभञ्जमें कुसुम्ब क्षत्रियोंका राज्य था। यद्यपि समय बहुत जानेसे किसी कदर मूर्तिकी सुन्दरता कम होगई है तथापि यह मूर्ति इस बातका प्रमाण देती है कि २००० दो हजार वर्ष पहले इस स्थानपर जैन धर्मका प्रभाव था। (इसका फोटो पुस्तकमें दिया है।)

(२) नीलगिरिमें पुण्डाल स्थानमें सोननदीकी रेतीमें एक बड़ी श्री पार्श्वनाथकी मूर्ति मिली है—यह मूर्ति जैनियोंके प्राचीन कारीगरीका सुन्दर नमूना है। यह ४ फूट ६ इंच ऊंची व २ फूट ८ इंच चौड़ी है।

(३) बारिपादामें बुड़ा जगन्नाथका मन्दिर है उसमें श्री पार्श्वनाथजीकी एक पद्मासन सुन्दर मूर्ति देखी जाती है।

जैसे पार्श्वनाथकी मान्यता यहां थी वैसे श्री वर्द्धमान स्वामी या श्री महावीर स्वामी जैनियोंके अंतिम तीर्थंकर भी इस मयूरभंजमें पूजे जाते थे। इनकी पूजाके चिह्न इस प्रकार हैं—

(४) बाजसाईसे ३ मील रानीबन्ध गांवमें श्रीमहावीर-स्वामीकी पूजाके प्रमाण अब भी मिलते हैं।

(५) बालासर नगरसे दक्षिण पूर्व ८ मील भीमपुर ग्राम है बहुतसी प्राचीन मूर्तियां पाई गई हैं जो वर्द्धमान स्वामीकी मालूम

होती हैं—१०—१२ वर्ष हुए भीमपुरमें एक सरोवरको खोदते हुए एक बहुत ही सुन्दर **श्रीमहावीर स्वामीकी** मूर्ति जमीनके नीचे मिली है। इसकी ऊंचाई ५ फुट है। इस मूर्तिके दोनों तरफ २४ चौवीस तीर्थंकरोंकी छोटी २ मूर्तियां हैं। राजा वैकुंठनाथ दे बहादुरने इस मूर्तिको अपने महलके बागमें विराजमान की है। (इसका नकशा पुस्तकमें दिया है। मूर्ति अखण्डित बहुत ही वीतराग स्वरूप है) भीमपुरमें वृक्षके नीचे महावीर स्वामीकी छोटी२ मूर्तियां रक्खी हैं जिनको वहांके लोग दुर्गादेवी आदि कहकर पूजते हैं। यहां पर ऐसा सर्व साधारणको विश्वास है कि जमीनके नीचे अब भी बहुतसी जैन मूर्तियां मिलेंगी।

(६) **भीमपुर**के पास **वर्द्धमानपुर** है वहां भी जैन प्रभावके चिह्न पाए जाते हैं। जैनियोंकी उन्नतिके समयमें भी वे नगर भीमपुर और वर्द्धमानपुरके नामसे जाने जाते थे।

उडीसामें जैनधर्मके प्रभावके और भी प्रमाण मिलते हैं जिससे यहां जैनधर्मका अच्छा विस्तार था ऐसा मालूम होता है।

(७) गत शीतमें हम **कटकसे** उत्तर पूर्व २४ मील कुश्रमंडल परगनेमें ज्ञादेश्वरपुर गाममें गए थे। इस स्थानके खोदनेसे बहुत ही अमूल्य और उपयोगी प्राचीन पदार्थ मिले थे जिनसे प्रमाणित होता था कि यहां जैनियोंका बहुत उन्नतिशील समय हो चुका है। उड़ीसामें जहां२ प्राचीन जैन पदार्थ मिले हैं उनमेंसे ये बहुत बढ़िया कारीगरीके नमूने हैं। इन भूमिसे निकले पदार्थोंमें तीर्थंकरोंकी, गणधरोंकी, पूर्वधरोंकी, श्रावक और श्राविकाओंकी मूर्तियां हैं—इनमें जैन तीर्थ-

करोंकी खड्गासन तथा पद्मासन ध्यानाकार मूर्तियां नग्न हैं। यह एक बहुत सुन्दर (Chlorite) पाषाणकी हैं और २ से ६ फुट तक ऊंची हैं। यदि इस स्थानको अच्छी तरह खोदा जावे तो यह सम्भव है कि बहुतसी मूर्तियां और बहुतसे प्राचीन मंदिरोंके चिह्न मिल सक्ते हैं।

(८) हालमें ही बहुतसी जैन मूर्तियां किच्चिङ्गमें तथा आदिपुरके पास दूसरे स्थानोंमें मिली हैं। आदिपुर मयूरभञ्जकी प्राचीन राज्यधानी थी। हमारी यह सम्मति है कि ये मूर्तियां कुसुम्ब क्षत्रियोंके समयमें निर्माण हुई थीं (२००० से अधिक वर्ष हुए)

ऊपरके स्थानोंका विशेष वर्णन।

कोसली—यह बड़सईसे पूर्व आधी मील है। यहां पहले दो मंदिर थे इनमेंसे एक श्रीपार्श्वनाथजीका था। प्राचीनकालमें जहां यह पार्श्वनाथजीकी एक मूर्ति रक्खी हुई थी वह जगह अप्रैल १९०७ में खोदी गई थी। इस स्थानका पश्चिम भाग ९० फुट तथा पूर्वीय भाग १०२ फुट है। उत्तरीय भाग ५५ फुट तथा दक्षिणीय भाग ८६ फुट है। जो स्थान हालमें खोदा गया है उससे पूरी नीव निकल आई है। प्राचीन जैन मन्दिरजीके आंगनकी जमीनका भाग मिला है। लोग कहते हैं कि मन्दिरजीके खंडहरोंके ऊपर ५-६ फुट गहरी मिट्टी इकट्ठी होगई है। इस मन्दिरके भागकी कारीगरी बहुत सुन्दर तथा बहुत प्राचीन है। मन्दिरके भीतर कमरोंकी छतमें लोहेका सामान लगा हुआ है। खुदाई करनेसे जो यहां लोहेका काम मिला है उससे यह प्रमाणित होता है कि बहुत प्राचीन समयसे मयूरभञ्जके आदमी इस लोहेकी धातुको मकान बनानेके काममें लेना जानते थे।

मट्टीके वर्तनोंके नमूने भी मिले हैं जो प्राचीनकालमें काममें आते थे।

वड़ासाई (वारसई) वारीपदासे १७ मील, परतापुरसे दक्षिण ६ मील—यहां बड़े २ मंदिर खण्डित हैं जो इस ग्रामकी प्राचीन महिमाके नमूने हैं—यहां प्राचीन जैन और बौद्धोंके स्मारक तथा कुछ हिन्दुओंकी भिन्न २ जातियोंके स्मारक मिले है जो इस बातको बतलाते हैं कि यहां किसी समयमें तीनों धर्मोंका प्रभाव था।

पुण्डाल—(सफा ९८) अयोध्या (जो शायद वालासरके पास नकशेसे प्रगट होता है) से उत्तर पश्चिम २ मील यह ग्राम है जहां अब नदीकी खाड़ी है वहां पहले एक मंदिर था। सोननदीके वालूमें कभी २ मन्दिरके पत्थर मिल जाते है। एक मूर्ति मिली है जो ५ फुट ऊँची तथा ३ फुट चौड़ी है। इसके पीछे नाग मण्डल है। यहां इसे अनन्तकी मूर्ति कहते हैं परन्तु यह मूर्ति तेईसवें तीर्थंकर **श्री पार्श्वनाथजी**की है। इस मूर्तिको देखकर यह सिद्ध है कि यहां एक दफे जैनधर्म फैला हुआ था।

वारसोई—(सफा ४६) बड़ासाईमें तालाबके तटपर एक छोटीसी मूर्ति है जिसको चन्द्रसेना कहते है परन्तु इसमें पुष्पदन्त और चन्द्रप्रभुके चिह्न हैं—

रानीबन्ध—बाड़ासाईके पश्चिम ३ मील, इस गांवको रानीबंध माकारिया भी कहते हैं। यहां एक पाषाणका किला तथा १२ सरोवर थे। यहां श्री महावीर स्वामीकी मूर्ति मिली है। पहले यहां श्रावक लोग आते थे और श्री महावीर भगवानकी पूजा करते थे।

डोम गन्धार—सोन नदीके उत्तर तटपर एक बहुत ही प्राचीन स्थान है। यह अयोध्यासे ५ मील तथा मैहोल वन्दी और मयूरभञ्जकी

चौहद्दपर है। यहां श्री पार्श्वनाथजीकी खंडित मूर्ति मिली है। यहां पर एक टीला खोदने लायक है। बहुतसी मूर्तियां जो यहां मिली हैं उससे यह प्रगट होता है कि किसी समय पर यहां बौद्ध, जैन, शैव, शाक्त सब मत एक साथ फैले हुए थे।

भीमपुर—(१०३ सफा) बालासारसे दक्षिण पूर्व ८ मील। यहां ३ हाथ जमीन खोदनेपर श्री वर्द्धमान स्वामीकी मूर्त्ति मिली थी। यह मूर्ति राजा वैकुण्ठनाथ बहादुरके बागमें रक्खी है। गांवके बीचमें २॥ फुट ऊँची दूसरी श्रीवर्द्धमान स्वामीकी मूर्ति है। इस नग्न मूर्तिको गांवके लोग ठकुरानी कहकर पूजते हैं। इस मूर्तिके पास और भी पाषाणकी जैन मूर्तियां हैं तथा एक ध्यानी जिनकी दर्शनीय मूर्ति है।

पांडवाघाट (सफा १०९) भीमपुरसे २॥ मील समुद्रकी तरफ एक पवित्र स्थान है। थोड़े दिन पहले यहांके लोग एक बड़े पाषाणके दर्शन कराते थे जिसमें पाण्डवोंके चरण चिन्ह बने थे यह पत्थर बालूमें अब दब गया है। कुछ काल पहले जैन व्यापारी इन चरणोंके दर्शन करने और पूजने आते थे जिनको वे तीर्थङ्करोंके चरण मानते थे। इससे मालूम होता है कि यह स्थान जैनियोंका बहुत प्राचीन पवित्र स्थान था।

इसी पुस्तकके सफा २४२ में यह उल्लेख है कि इस मयूरभञ्ज राज्यकी स्थापना १२०० वर्ष हुए एक जयसिंहनेकी थी जो राजपूतानाके जैपुरके राजाका सम्बन्धी था। उसके सबसे बड़े पुत्रका नाम आदिसिंह था। इन नामोंसे तथा यहांके मन्दिरोंसे इस राजाका जैनधर्मी होना समझमें आता है।

---

(१२)

पूरी जिला।

(गजेटियर छपा १९०८)

इसकी चौहद्दी इस प्रकार हैं.—

उत्तरमें देशी राज्य बंकी और अथगढ़, पूर्व व उत्तर पूर्वमें कटक जिला, दक्षिण पूर्व और दक्षिणमें बङ्गालकी खाडी, पश्चिममें मदरासका गञ्जाम जिला और रामपुरराज्य। यहां भूमि १४७२ वर्गमील है।

इतिहास—

राजा अशोककी विजयके पहले उडीसा देश कलिङ्गमें शामिल था। अशोकने २६१ वर्ष पूर्व उडीसा और कलिङ्गको अपने राज्यमें मिला लिया। अशोकके लेख धौली पहाड़ीपर हैं। कलिङ्गमें दो शिलालेख है। अशोकके समयमें राज्यके प्रबन्धक तोशालीमें रहते थे। यह स्थान शायद वर्तमान भुवनेश्वरसे निकट है जो धौलीसे और खण्डगिरिकी प्राचीन गुफाओंसे दूर नहीं है। यह बिलकुल निश्चित है कि मौर्य्य राजाओंके समयमें इस जिलेमें बहुतसे जैनी वास करते थे क्योंकि खण्डगिरि और उदयगिरिकी पहाडियां उनके साधुओंके वास योग्य गुफाओंसे चौतरफ भरी हुई हैं। इनमेंसे कुछ गुफाओं पर शिलालेख भी मिले हैं जो मौर्य्य समयकी ब्रह्मीलिपिमें हैं। ये सब गुफाएं जैनियोंके धार्मिक कार्यके लिये बनी मालूम होती हैं तथा सैंकडों वर्षों तक इन गुफाओंको जैन साधुओंने व्यवहार किया है। हाथी गुफामें जो शिलालेख है उससे भी यह बात प्रगट है। इस लेखके प्रारम्भमें ही जैनियोंका साधारण व्यवहार योग्य णमोकार मन्त्र

दिया है तथा स्वर्गपुरी गुफाके शिलालेखसे प्रगट है कि यह गुफा अर्हतोंकी कृपासे देशके राजाकी मुख्य पटरानीने बनवाई थी। हाथी गुफाका शिलालेख ऐतिहासिक वर्णन देनेसे बहुत ही मूल्यवान है। क्योंकि यह लेख प्रगट करता है कि मौर्य्य राज्यके पतन पर कलिङ्ग देशने विरोध किया और यह स्वतन्त्र राज्य होगया। यह लेख जो सन् ई०से पूर्व १५८ या १५३ वर्षका मालूम होता है। राजा खारवेलके जीवनका वर्णन करता है जिनका नाम महामेघवाह भी प्रसिद्ध था।

राजा खारवेलने कलिङ्ग देशको बलवान बनादिया केवल स्वतन्त्र ही नहीं किया किन्तु उसको योग्य कर दिया कि दूसरों पर भी विजय पा सके। क्योंकि इसने मौर्य्य राजाओंकी राजधानी पाटली-पुत्र पर भी हमला किया और राजाको सन्धिके लिये बाध्य करके उसे अपनी आधीनता स्वीकार करादी। इस सैनिक वीरताके वर्णनके सिवाय वह शिलालेख राजाके शुभ कार्योंका भी वर्णन देता है जैसे दान-घरका बनाना, ब्राह्मण और अर्हन्तोंको दान देना, लोगोंको गान भजनके लिये निमन्त्रण देना, स्तम्भ और गुफा आदिका बनाना आदि यह शिलालेख (जिसकी पूरी नकल और उसका उल्था पुस्तकके अन्तमें दिया गया है) इस विश्वासका अच्छा प्रमाण है कि राजा और उसके कुटुम्बके लोग जैनधर्मको मानते थे और इस राजा खारवेलके पीछेके राजा भी प्रगट रूपसे इसी धर्मके माननेवाले थे। इस महाराजा खारवेलकी राजधानी कलिङ्गगढ़ थी। कोई २ इसको भुवनेश्वरके पास बताते हैं, कोई २ इसे समुद्रके निकट कहते हैं तथा जो अब समुद्रकी तरङ्गोंसे बह गई है।

सन् २०० ई०में यहां आन्ध्रोंका राज्य था। ये शायद बौद्धधर्मी हों। चीन यात्री हुईनसांग यहां सन् ई० ६४० में आया था वह यहांका हाल बताता है कि "लोग लम्बे हैं काले रंगके हैं साहसी हैं बहुत कपटी नहीं हैं। सभ्यताकी बुद्धि रखते हैं, ये बौद्ध नहीं हैं, देव मंदिर १०० हैं तथा तीर्थङ्करोंको माननेवाले १०००० दस हजारसे अधिक हैं।"

सफा ८८—

यहां जैनधर्म बहुत सफलतासे फैला हुआ था क्योंकि राजा खारवेल और उसके उत्तराधिकारी जैनधर्मी थे। मौर्य्य राज्यके नष्ट होने पर यह जैनधर्म ११ व १२ शताब्दी तक यहां जारी रहा। अब इस जिलेमें बिलकुल नहीं रहा। परन्तु इस जैनधर्मके चिह्न खंडगिरि और उदयगिरिपर शेष मिलते हैं। ये दोनों पहाड़ियां जैन गुफाओंसे शताब्दी इधर उधर व्याप्त हैं। ये गुफाएं सन् ई०से पूर्व ३री या ४थी शताब्दीमें बनी होंगी। इन गुफाओंमें श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी पूजा श्री महावीर स्वामीकी अपेक्षा प्रचलित मालूम होती है।

पुरीके मुख्य स्थान।

धौली—भुवनेश्वरसे ४ मील दक्षिण पश्चिम दयानदीके दक्षिण तटपर एक ग्राम है। यहां राजा अशोकका शिला लेख है।

तौमाली—धौली पहाडियों तथा कोकरूहाई, गंगुआ और दया नदीके सङ्गमके मध्यमें एक बडा नगर रहा है—खण्डगिरि और भुवनेश्वरसे कुछ दूर है।

खण्डगिरि—खुरदा जिलेमें एक पहाडी भुवनेश्वरसे ३ मील

और राजाने उस कन्याको श्री पार्श्वनाथजीको विवाह दिया। अपने उपदेशके समयमें श्री पार्श्वनाथजीने पौंड्रताम्रलिप्त और नागपुरीमें अपना विवाह किया था, जहां उन्होंने बहुतोंको अपना शिष्य किया और अन्तमें उन्होंने श्री सम्मेदशिखरजीसे निर्वाण प्राप्त किया। मुनियोंकी सूचीमें जैनियोंकी प्राचीन शाखाओंके नाम आते हैं जैसे ताम्रलिप्तिक, पौंड्रवर्द्धनीय—

[नोट–श्वेताम्बर ग्रन्थोंमें पार्श्वनाथजीको विवाह किया ऐसा कहा है परन्तु दिगम्बर ग्रन्थोंमें ऐसा कहा है कि श्री पार्श्वनाथजीने विवाह नहीं किया, कुमार अवस्थामें ही दीक्षा ली। इस लिये इन दृश्योंका मिलान अच्छी तरह करनेकी जरूरत है। इन पर श्वेताम्बर आम्नायानुसार दृश्य नहीं होने चाहिये। क्योंकि इन गुफाओंमें व यहाकी व इस प्रान्तमें मिलनेवाली प्राचीन नग्न दिगम्बर मूर्तियोंसे यहां दिगम्बर आम्नायकी ही प्रसिद्धि मालूम होती है अन्य गुफाओंमें नाम भी दिगम्बर आचार्योंके है तथा दि० मुनि ही इन गुफाओंमें निवास करते थे। इससे गुफाके बनानेवाले जो कुछ अङ्कित कराते वे दिगम्बर ग्रंथोंसे विरुद्ध नहीं करा सक्ते थे। इस रानीगुफाके दृश्योंको अच्छी तरह जांचनेकी जरूरत है तथा जांचके समय दिगम्बराम्नाय कृत पार्श्वपुराण भी साथमें लेना चाहिये।

दूसरी गुफाओंके नाम ये हैं–जय विजय, छोटी हाथी गुफा, अलकापुरी गुफा, मञ्चपुरी गुफा, पनस गुफा, पातालपुरी गुफा।

मञ्चपुरी गुफामें ५ दरवाजे हैं–चौथे द्वार पर एक कारनका शिलालेख है जो इस भांति है—

"स्वरस महाराजस कलिङ्गाधिपतिनो महामेघ वाहन सकूडे पसीरिनो लेनम्" भावार्थः चतुर महाराज कलिङ्ग देशके स्वामी महामेघवाहन या कूडेपसीरीकी गुफा।

इस गुफाके सातवें कमरेमें दूसरा लेख है:—जो इस भांति है—

"कुमार वदुरवस लेनम्" (यह लेख पहलेसे प्राचीन है) अर्थात् कुमार वदुरवकी गुफा—शायद यह कुमार राजा खारवेलके पुत्र हों गेजेटियरवालेने पहले शिलालेखमें चाकद्वीप भी पढा है तथा बड़ी गुफाके लेखमें यह नाम आया है जो कि राजा खारवेलका एक पद था। इस मञ्चपुरी गुफामें ऊपरके खनमें तीसरा लेख है—सो इस तरह पर है—

ला० १—अरहन्त पसादायम् कलिङ्गनम् समनानम लेनं कारितम् राज्ञोलालसकस।

२—हाथी साहसपपोतस धुतुनाकलिङ्ग चक्रवर्तिनो श्रीखारवेलस।

३—आग महिसिना कारितम् (यह लेख हाथीगुफाके लेखके कुछ ही पीछेका है।)

भावार्थ—यह है कि श्री अरहन्तके प्रासाद या मन्दिर एक यह गुफा कलिङ्ग देशके श्रमणों (जैन दि० साधू)के लिये बनाई गई है यह गुफा कलिङ्ग चक्रवर्ती राजा खारवेलकी मुख्य पटरानी द्वारा कराई गई जो राजा लालकसकी पुत्री थी। यह लालकस हथीसहसके पौत्र थे। इस खानको स्वर्गपुरी गुफा कहते हैं।

(नोट—ये लेख Epigraphica India vol. XIII 1915-16 एपि ग्रेफिक इण्डिया सन् १९१५-१६ के सफा १५९ से लिये गए हैं।)

गणेश गुफा—यहां भी कुछ दृश्य हैं शायद ये श्रीपार्श्वनाथके चरित्रसे सम्बन्ध रखते हों।

ध्यानघर और हाथीगुफा-हाथीगुफा ५७ फुटसे २८ फुट है। मुख ११। फुट ऊँचा है। भीतोंपर कुछ शब्द अङ्कित है। प्रगट रूपसे साधुओं या यात्रियोंके नाम हैं। छतकी चट्टानपर १७ लाइनका लेख है। १४ फुटसे ६ फुटकी मापमें है। यही प्रसिद्ध खारवेलका लेख है। (यह अन्तमें दिया हुआ है।)

सर्पगुफा—इसके द्वारकी बांई ओर पहली शताब्दि पूर्वका लेख है। ये दो लाइनका है—

१—कम्मस हलरिव—

२—णय च पसादो—

अर्थात् कम्म और हलरिवनका प्रासाद। इसी सर्प गुफाके द्वार पर वही हाथीगुफाके पास एक लेख है ' चूल समय कोथा जे याय" चूल कर्मनूका अजेय कोठा।

वाघ गुफा—इस पर भी दूसरी शताब्दी पूर्वका लेख है जो इस भांति है—

१—नगर अरचदंस।

२—सभूतनो लेनम्।

अर्थात्—नगर जज सभूतिकी गुफा।

हरिदासगुफा—इस पर लेख इस भांति है—पहली शताब्दी पूर्वका।

चूल कुमस पसातो कथा जे या च।

अर्थात् चूलकुनका प्रासाद और अलेय कोठा।

जैयेश्वर गुफा—मञ्चपुरीकी गुफाके समयका लेख इसी अक्षरोंमें है।

" महामदास बारिणाय ना कियस लेनम् "

अर्थात् महामदकी स्त्री नाकियसकी गुफा।

छोटी हाथी गुफा—इस पर भी अपूर्ण लेख है।

" अगिनच .... सलेनम् "

ये ऊपर लिखित उदयगिरिकी गुफाएं हैं।

आगे खंडगिरिकी मुख्य गुफाओंका वर्णन करते हैं, उत्तरसे शुरू करते हैं—

तत्त्वगुफा नं० १—इसमें चित्र है, तथा उस पर लेख है। यह पहली शताब्दी पूर्वके या पहली शताब्दीके होंगे, इन लेखके ६ लाइनमें इस भांति अक्षर अङ्कित हैं।

ला० १ .... घ ....

२ ....ण त थ द ध न

३ ....ण त थ द ध न

४ ...ण त थ द ध न प फ ब म ... ख

५ ...स ह त थ द ध न प फ व ... प श स ह

६ ......थ......

ये अक्षर बाल मुनिद्वारा लिखित हैं।

तत्त्वगुफा नं० २ पर लेख है।

" पद मुलिकस कुसुमास लेनम् "

कुसुम सेवककी गुफा।

यह सबसे प्राचीन लेख है। खंडगिरिके लेखोंमें (Oldest of all incriptions in Khandgiri.)

इसके आगे—

नवमुनि गुफा—इसके भीतर १० वीं शताब्दीका लेख है जो इस भांति है—

१—" ॐ श्रीमत् उद्योत केशरी देवस्य प्रवर्द्धमाने विजय राज्ये संवत १८।

२—श्रीआर्य्य संघ प्रतिबद्ध ग्रहगुल विनिर्गत देशीगणाचार्य्य श्री कुलचन्द्र।

३—भट्टारकस्य तस्य शिष्य शुभचन्द्रस्य।

इस लेखसे प्रगट है कि उद्योत केशरी देवके उन्नतिशील राज्यके १८ वें वर्षमें श्री शुभचन्द्र आचार्य यहां विराजित थे। जो श्री आर्य्यसंघ गृहकुल देशीगणके आचार्य्य कुलचन्द्र भट्टारकके शिष्य थे।

इसी गुफामें टूटी हुई भींत पर दूसरा शिलालेख इसी समयका है जिसके वाक्य ये हैं—

१—श्रीधर छात्र यह एक भाग है। दूसरे भागमें है—

१—ॐ श्री आचार्य्य कुलचन्द्रस्य तस्य।

२—शिष्य खलु शुभचन्द्रस्य।

३... ... छात्र विजो।

इससे भी शुभचन्द्र आचार्य्यका नाम प्रगट है—इस गुफाके दाहने कमरेमें एक२ फुट ऊँची दश तीर्थंकरोंकी मूर्तियां हैं उनमें

शासनदेवी बनी हुई है। श्रीपार्श्वनाथजीकी दो मूर्तियां हैं जिनके ऊपर सर्प फण मण्डप किये हुए है—उनकी विशेष मान्यता प्रगट है।

इस गुफाके आगे बारह भुजा है इसका बारह भुजा इसलिये है कि बरामदेकी दीवालके बाईं तरफ एक देवीकी मूर्ति है जिसके बारह भुजाएँ है।

(नोट—यह जिनशासनकी प्रतिमूर्ति मालूम होती है क्योंकि जिनवाणीमें आचाराङ्ग आदि बारह अङ्ग होते हैं।)

बरामदेसे होकर तीन द्वारवाले लम्बे कमरेमें जाना होता है। ये द्वार अब गिर गए हैं। छतकी रक्षा अब दो नए स्तम्भ देकर की गई है। भीतोंपर पद्मासन तीर्थंकरकी मूर्तियां देवी सहित अङ्कित हैं, पीछेकी तरफ श्री पार्श्वनाथकी बड़ी खड्गासन मूर्ति है जिस पर ७ फणका मण्डप है इसपर देवीका चिह्न अङ्कित नहीं है—इन सब मूर्तियोंके भिन्न २ चिह्न दिये हुए हैं तथा ये ८ से ७॥ इञ्च तककी ऊंची हैं जबकि श्री पार्श्वनाथजीकी २ फुट ७॥ इञ्च ऊंची है—

इसीके पास दक्षिणमें—

त्रिसूल गुफा है—जिसका कमरा २२ फुट लम्बा ७ फुट चौड़ा व ८ फुट ऊंचा है। इसमें भी २४ तीर्थंकरोंकी मूर्तियां अङ्कित हैं इन्होंमें ७ फण मण्डप सहित श्री पार्श्वनाथजीकी खड्गासन मूर्ति तथा अन्तमें श्री महावीर स्वामीकी मूर्ति है। इस २४ तीर्थंकरोंके समुदायमें भी श्री पार्श्वनाथजीको श्री महावीर स्वामीके पहले न देकर मध्यमें विराजित किया है। (नोट—इससे यह सिद्ध होता है कि श्री पार्श्वनाथ-जीकी विशेष भक्तिको दरशानेवाली यह गुफा है सम्भव है किये

मूर्तिया श्री पार्श्वनाथजीके मुक्ति पधारनेके बाद ही महावीर स्वामीके निर्वाण पहले विराजमान की गई हों। १५ वें तीर्थंकरका आसन एक वेदीसे ढका हुआ है जिसपर तीन पद्मासन सुन्दर मूर्तियां श्री पार्श्वनाथ भगवानकी हैं। इस गुफाकी मूर्तियोंका आकार पहलेकी गुफाओंकी मूर्तियोंके आकारसे सुन्दर है।

फिर बांई तरफ आनेसे ५० या ६० फुट ऊंचा देखनेसे जैन मूर्तियां अंकित हैं—

फिर आगे पश्चिमकी तरफ दो खनकी गुफा है इसको सिंह गुफा या ललतेन्दु केशरी गुफा कहते हैं—

पहले खनके कमरेमें जैन तीर्थंकरकी मूर्तियां अंकित हैं—जिनमें सबसे मुख्य श्री पार्श्वनाथकी है। इसमें यह लेख अंकित है—

१—ॐ श्री उद्योके केशरी भिजय राज्य सम्वत् ५।

२—श्री कुमार पर्वत स्थाने जीर्ण बावि जीर्ण इसान।

३—उद्योतित तस्मिन् थाने चतुर्विंशति तीर्थंकर।

४—स्थाविता प्रतिष्ठा काले हरि ओप जसनंदिकं।

५—क्ष ⋯हु　ति　दुधा ⋯श्री

पार्श्वनाथस्य कर्मक्षयाय।

(नोट—इस लेखमें राजा उद्योत केशरीका नाम व संवत् ५ आया है, तथा खण्डगिरिका नाम कुमार पर्वत लिखा है। यहां जीर्ण मंदिर व वापी पहले थे ऐसा प्रगट है—वहीं २४ तीर्थंकर स्थापित किये गए। प्रतिष्ठाके समयमें यहां श्री यशनंदि आचार्य मौजूद थे।

इसके आगे एक झील है जिसको आकाशगंगा कहते हैं—

अनन्त गुफा—खंडगिरिकी दाहिनी तरह एक लम्बा कमरा है—जो २३ फुट चौडा व २४ फुट लंबा व ६ फुट उंचा है। चार द्वार हैं। पीछेकी भीतपर ७ पवित्र चिह्न अङ्कित हैं। उनमें स्वस्तिक त्रिशूल आदि हैं। पहले स्वस्तिकके नीचे एक छोटी खड्गासन मूर्त्ति है जो अब बहुत घिस गई है यह मूर्त्ति शायद श्रीपार्श्वनाथजीकी होगी।

इसमें कुछ दृश्य भी बने हैं—यहां लेख सन् ई०से पहलेके हैं। (१) "दोहद समनानम् लेनम्" दोहदके साधुओंकी गुफा तथा "दह चार" अर्थ समझमें न आया।

नोट—इस लेखमें जो शिलालेखोंकी नकल दी गई है वह एपिग्रेफिका इण्डिका जिल्द तेरहवीं सन् १९१ से १६ सफा १५९से १६६ तकसे ली गई है। इन लेखोंमें एक गणेश गुफाका लेख भी दिया हुआ है जो नीचे है। यह ८ वीं शताब्दीका है। इसका भाव खुला नहीं।

१—श्री शांतिकर सौराज्याद आचन्द्रार्कम्।

२—गुहे गुहे खुद ? संज्ञे पुनः अंगे भाग।

३—जास्य विाजे जने इज्या गर्भ समुद्।

४—भूतो नन्न तस्य सुतो भिषक भीमतो।

५—याचते वान्य प्रस्थम् सम्वत्सरात् पुनः।

इसी स्थानपर लेख है कि खण्डगिरि उदयगिरिका नाम १० वीं या ११ वीं शताब्दी तक **कुमार कुमारी पर्वत** पसिद्ध था।

त्रिशूल गुफाके ऊपर एक सफेद पुता हुआ जिन मंदिर है जिसकी मिती निश्चित नहीं है। यहांसे दक्षिणकी तरफ पत्थरकी

चट्टानपर ऊपर कई मूर्त्तियां अङ्कित हैं जो इधर उधर पत्थरके गिरनेसे बाहर प्रगट मालूम होती हैं। यहां एक भीतका भाग है जिससे प्रगट है कि यहां एक गुफा थी जिसमें जैन तीर्थंकरोंकी मूर्त्तियां थीं। पर्वतकी चट्टानके मध्यमें एक जैन मंदिर है जिसमें जैन मूर्त्तियां पाच हैं।

खण्डगिरिके दक्षिण पश्चिम निलगिरि है। यहां राधाकुण्ड और श्यामकुण्ड है।

इन गुफाओंमेंसे हाथी गुफाकी मिती सन् ई०से १५८ या १५३ वर्ष पहलेकी है। तथा उदयगिरिकी स्वर्गपुरी, मञ्चपुरी, सर्पगुफा, बाघगुफा, जम्बेश्वर, हरिदास ऐसी ६ गुफाओंमें तथा खंड-गिरिकी तत्त्व गुफा दो और अनन्ता गुफा इस तरह ९ गुफाओंमें शिलालेख ब्राह्मी अक्षरोंमे हैं और खारवेल राजाके समयके अक्षरोंसे मिलते हुए हैं। क्योंकि इन ब्राह्मी अक्षरोंका परिवर्त्तन सन् ई० से पहली शताब्दीसे पहलेके पीछे हुआ है इसलिये इन लेखोंको नियमानुसार इस समयके पीछेका नहीं रक्खा जा सकता है। ये नौ गुफाएं हाथी गुफाके समयके निकटही खोदी गई थीं अर्थात् सन् ई० से दूसरी शताब्दीसे पहले नहीं खोदी गई थीं। तो भी सम्भव है, उनमेंसे कुछ या और दूसरी गुफाएं हाथी गुफसे भी पहलेकी हों क्योंकि राजा खारवेलने अपने बडे लेखके अंकित करनेको यह पहाडी इसी लिये चुनी होगी कि यह पहाडी जैन साधुओंके विराजनेसे पवित्र हो चुकी है। यहाकी स्वाभाविक या कृत्रिम गुफाओंमें जैन साधु अवश्य पहलेसेही विराजते होंगे। कमसे कम आधो शताब्दी तो अवश्य लेना चाहिये कि जब यह पहाडी मुनियोंके विराजनेसे इतनी

पवित्र हो गई थी, कि जिसको पवित्र जानकर राजकुटुम्बने यहां खुदाईमें बहुतसा रूपया खर्च किया था। यहां अवश्य सन् ई० से तीसरी शताब्दीके पहले लेने (गुफाएं) मौजूद थीं। जो कुछ यहां प्रमाण मिलते हैं उनसे यह बात अब मिलती नहीं है, क्योंकि हाथी-गुफाके लेखके १०० वर्ष पहले यह उड़ीसा देश बृहत् मौर्य्य राज्यका एक भाग होगया था। और तब जिस निर्ग्रंथ मतका वर्णन अशोकके शिलालेखोंमें है, उसका प्रभाव अवश्य यहां पड़सक्ता है।

दूसरी शताब्दीमें महायन भागके बौद्धोंके बड़े उपदेशकने कहा जाता है, कि उड़ीसाके राजाको और उसकी बहुतसी प्रजाको बौद्ध कर लिया और तब यह मानना ठीकही है, कि इस समयके पीछे जैन मतका प्रभाव रुक गया, और जैन गुफाओंका खोदना बन्द हो गया। इस सबका सार यह लेना चाहिये कि यहांकी बहुतसी गुफाओंके खुदनेका समय सन् ई०की तीसरी शताब्दीके पहिलेसे लेकर प्रथम शताब्दी पहले तक है।

सबसे बड़ी गुफा रानीकी गुफा है। यह अभाग्यकी बात है कि इस गुफापर कोई शिलालेख नहीं है जिससे इसकी मितीका पता चले। परन्तु इसके लम्बे कमरेकी श्रेणी स्तम्भोंकी बड़ी लाइन तथा चित्रकारी आदि प्रगट करती है कि यह रचना किसी धनाढ्य दातार द्वारा हुई है। शायद किसी बलवान राजासे, और यह सम्भव है कि राजा खारवेल स्वयं ही हो। जिस खारवेलने शिलालेखके अनुसार पातालिका चेटक और वैदूर्य्य गर्भमें अर्हतोंके स्थानके निकट पर्वतकी चोटीपर स्तम्भ और गुफायें चतुर कारीगरोंसे बनवाई। (नोट—ये

पातालिका आदि कौन स्थान हैं, इनका पता लगाना उचित है।

इस समयसे पीछेकी बनावटके चिह्न कुछ गुफाओंमें है जैसे नव मुनि गुफा, छोटी हाथी गुफा, व गणेश गुफाके शिलालेख, और सम्भव है कि खण्डगिरिकी कुछ तीर्थंकरोंकी मूर्त्तियां भी (सिवाय अनन्त गुफाके) ऐसी ही हों।

आठवींसे ११ वीं शताब्दी तक दक्षिणमें जैनी बहुत प्रभावशाली थे (देखो भण्डारकरका दक्षिणका पूर्व इतिहास सन् १८६६ का सफा ५९)। और इन लेखोंके अक्षर इस समयके अक्षरोंसे मिलते हैं। यह जाना नहीं गया कि किस तरह जैनियोंने अपना अधिकार खोया। परन्तु यह मालूम होता है कि वैष्णवोंकी उन्नति होनेसे जैनियोंका प्रभाव घट गया। तथा ताडपत्रोंके लेखोंसे प्रगट है कि ब्राह्मणोंकी प्रेरणासे गङ्ग राजाने जैनियोंको बहुत सताया।

अंग्रेजी राज्यमें कटकके जैन परवारोंने खण्डगिरीके ऊपर एक मन्दिर बनवाया तथा बारह भुजा और त्रिशूल गुफाके बरामदोंको दुरुस्त कराया और इन दोनों गुफाओंके सामने एक छोटा मन्दिर बनवाया (देखो एम० एम० चक्रवर्ती नोट गुफाओं पर सन १९०२)

यहां प्राचीन श्रावक हैं–सफा ८५।

यहां सराक लोग हैं–यह एक प्राचीन जाति है जिसका वर्णन गेट साहबने सन् १९०८ की बंगालकी मनुष्य गणनामें किया है–यह सराक श्रावक शब्दसे निकलता है। श्रावक संस्कृत शब्द है जिसके अर्थ सुननेवालेके हैं।

जैनियोंमें यह शब्द उन गृहस्थियोंके लिये दिया जाता है जो यतियोंसे भिन्न है व जो लौकिक व्यापार करते हैं। और श्रावक लोग अब भी पाए जाते हैं—समय बीतनेसे यहांके सराक लोगोंने आजीविकाके लिये कपड़ा बुननेका पेशा धारण कर लिया, इस उड़ीसाके श्रावकोंका यही व्यवसाय है। ये लोग बहुधा सराकी तांतीके नामसे कहे जाते हैं—

उड़ीसामें इनकी खास वस्ती चार स्थानों पर है—

(१) टाइगरिया राज्यमें ।

(२) बरम्बा राज्यमें ।

(३) कटकके बंकी थानेमें ।

(४) पुरीके पिपली थानेमें ।

पुरीके श्रावकोंका सम्बन्ध दूसरोंसे नहीं है और उनके साथ विवाह सम्बन्ध नहीं होते हैं। यद्यपि उनकी सेवा ब्राह्मण नहीं करते तोभी वे अपनेको हिन्दू कहते हैं। उनको अपनी उत्पत्तिकी कथा मालूम नहीं है। परन्तु दूसरे श्रावकोंकी तरह ये भी पक्के शाकाहारी हैं। ये सराक लोग वर्षमें एक दफे (माघ सप्तमीको) खण्डगिरिके प्रसिद्ध गुफाओंके मन्दिरों पर मूर्तियोंकी वंदनाको जमा होते हैं। और वहां धार्मिक विषयों पर बातें करते हैं। हिन्दू मन्दिरमेंसे केवल जगन्नाथजीके मन्दिरके प्रसादको वे लेते हैं—जो मन्दिर बौद्धोंका मूलमें कहा जाता है।

पीपलीथाना—पुरी और कटकके बीच जगन्नाथ ट्रंक रोडपर

एक ग्राम है जो पुरीसे २५ तथा कटकके २७ मील है-यह चावल और रूईके व्यापारका केन्द्र है।

नोट-जैन शास्त्रोंमें कलिंग देशमे जैनधर्मके प्राचीन अस्तित्वकी बातें पाई जाती हैं-इसलिये यह उडीसा देश श्री पार्श्वनाथ स्वामीके समयमें भी जैन धर्मके प्रभावसे व्याप्त था-यही कारण है जो खण्ड-गिरिकी गुफाओंमें श्री पार्श्वनाथकी मुख्यता पाई जाती है-यहां जैन आचार्य और जैन साधुओंका व श्रावकोंका बराबर प्रचार रहा है। ऐसा नहीं कि राजा चन्द्रगुप्तके समयमें ही यहां जैनधर्म प्रारम्भ हुआ हो-यहां जो प्राचीन मूर्तियां मिलती हैं उन सबसे यहां असल निर्ग्रन्थ मतका ही प्रचार रहा है-जिसको श्री पार्श्वनाथ तथा श्री महावीर या उनके पहलेके तीर्थंकर मानते थे।

इसका दूसरा नाम दिगम्बर जैन मत है। परिग्रह रहित नग्न मूर्त्तियां प्राचीन निर्ग्रंथ या दिगम्बर जैन मतके चिह्न हैं। इस उडीसा प्रदेशमें श्री आदिनाथकी मूर्त्तियां भी बहुत मिलती हैं। जिससे श्री ऋषभदेव या पहले तीर्थंकर आदिनाथकी भी यहां बहुत मान्यता थी। यद्यपि भारतकी सभ्यताको करोडोंसे अधिक वर्षोंका स्वीकार करें तो इस बातके माननेमें कोई विरोध नहीं आता कि इस युगमें श्री आदिनाथजीके समयसे यह धर्म यहां प्रचलित था। वैष्ण-वोंका जोर होनेसे व जैन राजाओंके अजैन होनेसे लाखों आदमियोंने धर्म बदल लिया। जिन्होंने नहीं बदला वे प्राचीन श्रावक पाए जाते हैं जो अपनेको मात्र सराक जातिका कहते हैं। और धर्मोपदशके विना अपने धर्मको बिलकुल भूल गए हैं। इतनी बात महत्वकी है,

जो ये लोग अभी तक शाकाहारी हैं, और मांसाहारी तथा हिंसकोंके मध्यमें रहते हुए भी पूर्ण अहिंसक हैं। इन लोगोंको जैन धर्म समझानेकी जरूरत है।

खण्डगिरिमें पूजाके लिये जो प्राचीन श्रावक आते हैं वे बङ्गलामें श्री पार्श्वनाथ भगवानकी प्रशंसामें एक भजन गाया करते हैं जो इस भांति है।

तुमि देख जिनेन्द्र देखिल पातिक पोलाय ॥
प्रफुल हल काय, सिंहासन छत्र आछे-चामर आछे कोटा।
दिव्य देहके मन आछे किवा शोभाये कोटा ॥ तुमि० ॥
क्रोध मान माया लोममध्ये किछू नाहि।
रागद्वेष मोह नाहि एमन गोसाई ॥ तुमि० ॥
केमन शान्त मूर्ति बटे, बले सकल माया।
केवली रिमुद्रा एखन साक्षात् देखाय ॥ तुमि० ॥
ओर देवेर सेवा हते संसार बाढ़ाय।
पार्श्वनाथ दरशहते मुक्तिपद पाय ॥ तुमि० ॥
कहा केउ ना डाके प्रभु बाटन (रत्न) देवय (देय)।
मुनीश करे कथा किवा इन्द्रकरे कत सेवा ॥ तुमि० ॥
हासि प्रभु देखा पाये, माग्ये करे कति,।
उग्र पुन्य इइते सेवक दर्शन पाति ॥ तुमि० ॥

(१३)

कटक जिला।

(गजेटियर छपा १९०६)

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है.—

उत्तरमें वैतरणी और धर्म नदी, दक्षिणमें पुरी, पूर्वमें बङ्गालकी खाडी, तथा पश्चिममें उडीसाके देशी राज्य। यहां ३६३३ वर्ग-मील जमीन है।

इतिहास—यहां भी उडीसाका इतिहास व राजा खारवेलका महत्त्व वही दिया है, जो पुरीके गेजेटियरमें है। विशेष इतना है, कि हाथी गुफके शिलालेखसे प्रगट है, कि खारवेलका एक नाम भिक्षराज भी था, तथा जो बाघराजका पुत्र और चेटवंशके खेमराजका पोता था। इससे अपने राज्यके प्रथम वर्ष ही में कलिंग नगर और किलेको आधीन किया। दूसरे वर्ष सात करणीजीकी रक्षामें पश्चिममें बडी सेना भेजी। और कुसुम्ब क्षत्रियोंकी सहायतासे मासिक नगरको पकड लिया।

८ वें वर्षमें इसने राजग्रहीके राज्यपर हमला किया तब वह राजा मथुराको भाग गया। इसके दूसरे वर्ष इसने उत्तरके राजाओंको वश किया और अपने १२ वें वर्षके राज्यके समय उसने फिर मगधपर आक्रमण करके वहांके राजाको अपने आधीन बना लिया। उसके सैनिक पराक्रमके सिवाय यह शिलालेख राजाके परोपकार रूप अनेक कामोंका वर्णन करता है।

सतकरणी अन्ध्रदेशका अधिपति था जो गोदावरी और कृष्ण नदीके

मध्यमें है। जब उसकी लड़ाई सुङ्ग महाराज पुष्यमित्रसे सन् ई० से १६४ वर्ष पहले हुई थी तब खारवेलन-सतकरणीको मदद दी थी।

मञ्चपुरीका पहिला शिलालेख उस गुफा निर्माण वाकद्वीप द्वारा बतलाता है जो राजा खारवेलके समान उसका राज्यधिकारी था और दूसरा लेख प्रगट करता है कि यह गुफा कुमार बलभद्र द्वारा बनी जो शायद वाकदेवका पुत्र था।

कटकके प्राचीन स्थान।

आसिया पहाड़ी—जाजपुरमें—यह २१०० फुट ऊँची है। इसको चतुरावोट भी कहते हैं। (नोट—यहां खोज होनेकी जरूरत हैं। यहां जैनका चिह्न मिल सकता है।

छातिया पहाड़ी—यह भी जाजपुरमें है। कटक बालासरकी सड़कपर है। पहाड़ीके पूर्व एक किलेका भाग है जिसको अमरावतीका किला कहते है। इस पहाड़ीके पश्चिम तरफ एक छोटी गुफा है। जिसके आगे बरामदा है। यह शायद जैन साधुओंका स्थान है। इस गुफामें कोई चित्रकारी नहीं है परन्तु इसकी अभी तक अच्छी तरह जांच नहीं हुई है।

चांदवर—विरूप नदीके उत्तर तटपर कटक नगरके सामने यहां प्रचीन किलेके खण्डहर हैं। घेरेके भीतर अब भी कई टीले व कई मंदिर हैं (इसकी भी जांच होनी चाहिये।)

जजपुर—वैतरणी नदीके दाहिने तटपर—जजपुर रोड़ स्टेशनसे १४ मील है, यहां अखंडेश्वरके मंदिरमें अन्य मूर्त्तियोंके मध्यमें एक बहुत ही छोटी नग्न मूर्त्ति है। जिसका मुख अत्यन्त शांत है। यह प्रगट रूपसे जैन तीर्थंकरकी मूर्त्ति है।

रत्नागिरि पहाड़ी—जजपुरमें गोपालपुरसे ४ मील है। यहां बहुतसे प्राचीन टीले हैं जिनकी खुदाईकी जरूरत है। यहां कुछ बुद्ध मूर्त्तियां मिली हैं। (यहां अवश्य कुछ जैन मूर्त्तियां भी मिलेंगी)। **उदयगिरि** पहाडी जजपुरमें है। नोट—यहां भी जांच किये जानेकी जरूरत है।

---

(१४)

बालासर जिला।

(गैजेटियर सन् १९०७)

इसकी चौहद्दी इसप्रकार है—

उत्तरमें मिदनापुर और मयूरभंज, पूर्वमें बङ्गालकी खाडी, दक्षिणमें कटक, पश्चिममें—क्यिूनसर, मयूरभण्डा व नीलगिरि स्टेट। यहां २०६६ वर्गमील स्थान है।

यहांका इतिहास पुरीके सदृश है।

यहांपर तांती नामकी जाति रहती है, जिसकी संख्या ५६००० है. यहां पहले बहुत अच्छा कपड़ा बनता था। परन्तु अंग्रेजी माल आनेसे सब कारीगरी नष्ट होगई। बहुतसोंने बुनना छोड दिया व खेती या मजूरी करने लगे। वे तांती लोग बुननेका काम करते है, इनकी जातियोंमें **अश्विनी** और **गौरिया** तांती जिनको कहा जाता है, कि ये बंगालसे बालासर बढ़िया महीन कपडा बुनना सीखने आए थे।

नोट—मानभूमि गजटियरसे पता चलता है, कि सराक जातिमें अश्विनी तांती भी हैं। इससे बहुत सम्भव है, कि बालासारके अश्विनी तांती प्राचीन श्रावक हो और उनका धर्म जैन हों।

यहां व्यापारियोंमें अगुरी (उग्र क्षत्रिय) जाति है।

ये अनुमानसे अग्रवाल क्षत्रिय मालूम पड़ते हैं ॥

करतसाल—सुवर्णरेखा नदी पर—चालिया पालके पूर्व ७ मील। यहां भाट राजाका प्राचीन किला है, (इसकी जांच होनी चाहिये।)

---

(१५)

मुंगेर जिला।

(गजेटियर छपा १९०९)

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—

उत्तरमें भागलपुर और तिरहुत, दक्षिणमें संथाल पर्गना और हजारीबाग, पूर्वमें भागलपुर, पश्चिममें गया, पटना। यह स्थान ३९२२ वर्ग मील है।

बङ्गाल प्राचीन स्मारक सन् १८९५ से मालूम हुआ कि यहां कवकोल नामकी पहाड़ियां हैं। यहां कुछ मन्दिर हैं, जो पुराने जैन मंदिरोंके भागोंको लेकर बनाए गए हैं, जैन पुजारीके अधिकारमें हैं।

---

(१६)

बंगाल प्रान्त वर्धमान जिला।

(गजेटियर छपा १९१०)

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—

उत्तरमें संथाल पर्गना; वीरभूम, मुरशिदाबाद; दक्षिणमें हुगली, मिदनापुर, बांकुड़ा, पूर्वमें नदिया और पश्चिममें मानभूम। इसमें स्थान २६९७ वर्गमील है।

गजेटियरसे कुछ विशेष विवरण नहीं प्राप्त हुआ। कलकत्ता बंगीय साहित्य सम्मेलन अष्टम अधिवेशन जो वर्द्धमानमें हुआ था उसका विवरण बङ्गला सन् १३२१ का मुद्रित देखनेपर सुप्रसिद्ध विश्वकोषके कर्त्ता श्रीयुत नगेन्द्रनाथ वसु लिखित वर्द्धमानकी प्राचीन कथा है उसमें जो कुछ हाल जैनधर्म सम्बन्धी विदित हुआ है उसका सार नीचे दिया जाता है:—

प्राचीन कालमें वर्द्धमान तथा उसके आस पासके जिलेको राढ़भूमि कहते थे। पूर्व जैन ग्रन्थ आचारांग सूत्रसे जाना जाता है कि वर्द्धमानस्वामीने लाढ़ (राढ़) देशमें वज्रभूमि और शुभ्रभूमिमें १२ वर्ष तक तपस्या करते विहार किया। श्वे० जैनियोंके प्रज्ञापन सूत्रमें भी राढ़ देशका वर्णन है। मारकाण्डेय पुराण और वराहमिहिरकी वृहत् संहितामें भी वर्द्धमान जिलेका वर्णन है। इसका कहीं २ नाम सूक्ष्म भी है। महाभारतके टीकाकार नीलकण्ठने सूक्ष्मको ही राढ देश कहा है। श्री महावीरस्वामीके समयके अनुमानमें सन् ई० से ५००० वर्ष पहले सुक्ष्म अथवा राढ देशको वर्द्धमानके नामसे कहा जाता था क्योंकि २४ वें तीर्थंकर श्री वर्द्धमान स्वामीने इस देशमें १२ वर्ष विहार किया इसलिये जैन समाजने इसको पुण्य क्षेत्र माना और बहुत सम्भव है कि श्री वर्द्धमान स्वामीके पुण्य समागम होनेसे इस स्थानका नाम वर्द्धमान प्रसिद्ध हुआ। यूनानी दूत मेगस्थनीज भारतमें सन् ई० के चौथी शताब्दी पूर्व आए थे, उन्होंने भी इस देशको गंगारिढिके नामसे लिखा है।

यूनान और रोम देशके कवियोंके वर्णनसे मालूम होता है कि

सन् ई०से चौथी शताब्दी पूर्वसे पहली शताब्दीके मध्यमें इस वर्द्धमान देशके अन्तर परतालिस, गंगे और कटादया नामके तीन प्रधान नगर तथा बन्दर थे। फरांसी विद्वान् सेन्ट मार्टिन वर्तमान वर्द्धमानको ही परतालिस कहते हैं। गङ्गा सागर संगमको ही गंगे तथा वर्तमान कांटो या काटदया है। सन् ई०की सातवीं शताब्दीमें चीन यात्री हुइनसांग राढ़ देशमें आया था—इस यात्रीने लिखा है कि उस समय सूक्ष्म, राढ़ अथवा वर्द्धमानको कर्णसुवर्ण कहते थे। यह प्रदेश बहुजन पूर्ण, बहुत धनशाली तथा विद्यानुरागी पुरुषोंका आवास था। राजधानी कर्णसुवर्ण थी, उसमें १० बौद्ध आश्रम तथा ५० अन्य सम्प्रदायोंके देव मंदिर थे। कोई २ वर्त्तमान मुरशिदावाद जिलेके राजाकुमारी व कानसोनाको अथवा कोई वर्द्धमानके निकट कांचन-नगरको कर्णसुवर्ण कहते हैं। ये दोनों ही स्थान राढ़ देशमें बड़े समृद्धिशाली थे। इन दो स्थानोंके सिवाय वर्द्धमान जिलेमें सिंहारण, प्रद्युम्नपुर, शूरनगर, मंदारण्य, मूरसुट आदि अनेक स्थानोंमें प्राचीन सभ्यताके चिह्न दिखलाई पड़ते हैं।

सन् ई० ८ वीं व ९ वीं शताब्दीमें इस राढ़ देशमें शूरवंशीय राजाओंका अधिकार था। उसके पीछे पाल राजाओंके अधिकारमें जो भाग रहा उसको उत्तर राढ़ तथा शूर और पालवन्शके अधिकारमें जो देशका भाग रहा उसको दक्षिण राढ़ कहते हैं। जैन धर्मका अस्तित्व इस देशमें अति प्राचीनकालमें था।

नोट—जब यह कथन है कि श्री महावीर भगवानने केवलज्ञान होनेके पहले १२ वर्ष इस राढ़ देशमें विहार किया तब यहां जैन-धर्म पहलेसे ही फैला हुआ होगा। क्योंकि तपस्वीकी दशामें तीर्थंकर

जैन गृहस्थके घर भोजन लेते हैं। श्री पार्श्वनाथजीसे अथवा उससे भी पहलेसे इस राढ़में जैनधर्म पालनेवालोंका बाहुल्य था। यदि ऐसा न होता तो श्री महावीर भगवान जो केवलज्ञान होने तक मौनी रहते हैं उपदेश नहीं देते, कभी भी विहार न करते। इस वर्द्धमान जिलेमें उग्र क्षत्रियोंकी संख्या अधिक है। सर्व बंगालमें जितने उग्र क्षत्रिय हैं उनमेंसे ११५ सैकड़ा यहां हैं। ये लोग राजा अग्रके वंशके हों ऐसा अनुमान किया जा सक्ता है।

वर्द्धमानमें कुछ प्राप्य जैन चिह्न।

वर्द्धमान जिलेके अन्तर्गत काटोंया महकमेके आधीन मङ्गलकोट थानेके अन्तर्गत परगना आजमतसाहीके मध्यमें उजैनी नगर है। प्राचीनकालमें यह बहुत ही समृद्धिशाली नगर था। मङ्गलकोटसे कुनूर नदी पार कर उत्तर तरफ एक मसजिद भग्न है, उसके पास आड़उयाल नामका ग्राम है उसके मध्यमें वटवृक्षके पीछे एक मङ्गल चण्डीका मन्दिर है। इसके पाससे होकर ग्राममें उत्तर पूर्व कोनेमें लोचनदासका पाट है यह समाधिस्थान है। इस समाधि मन्दिरके बाहर पूर्वभागमें माधवी लताके तले छोटी बड़ी समाधियां हैं। आंगनके दक्षिण भागमें एक छोटा ईंटोंका बना स्थान है इसके तीन अंश हैं। बीचमें खाली है। इस घरकी पूर्वतरफ उदयचन्द महन्तकी समाधि है और पश्चिममें वीरचन्द अवधूत गोसांईका समाधिस्थान है। इन दोनों समाधिस्थानोंके मध्यमें स्थित एक कृष्ण पाषाणकी निर्मित बहुत सुन्दर जैन तीर्थंकरकी प्रतिमा थी। इस मूर्तिको अब कलकत्ता बंगीय साहित्य परिषदके स्थानमें लाकर रक्खा गया है।

इस तीर्थंकर मूर्तिका परिचय।

यह मूर्ति दिगम्बर है—ऊंची २३॥ इंच चौड़ी १४॥ इंच मोटी ३ इंच है। मूर्तिके मस्तक पर छत्र शोभायमान है। उसके दोनों तरफ देव दुन्दुभि शोभनीक हैं—और भी देव देवियोंकी मूर्ति भक्तिरूप हैं। दो चमरेन्द्र चमर ढार रहे हैं। आसनमें मृगका चिन्ह है जिससे यह मूर्ति शांतिनाथ भगवानकी प्रतीत हुई है—

नोट—इस स्थानपर जब इतनी बड़ी मूर्ति मिली है तब यहां अवश्य एक बड़ा जिनमंदिर होगा तथा जैन वस्ती भी होगी। इस वर्द्धमान जिलेमें जो प्राचीन स्थान हैं उनके नामोंसे व वहां खण्डित मन्दिरावशेषोंसे, अवश्य जैनधर्मके चिह्नोंका अनुमान हो सक्ता है। वे प्राचीन स्थान शूर नगर, कांटोया, दांईहाट, केतुग्राम, अग्रद्वीप, देवग्राम, विक्रमपुर हैं। कोई जैनधर्म प्रेमी इस जिलेमें घूमकर खोज करे तो और भी चिह्न जैनधर्म सम्बन्धी मिल सक्ते हैं।

---

(१७)
वीर भूमि जिला।

(गजेटियर छपा १९१०)

इस जिलेकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

उत्तर पश्चिम सन्थल पर्गना, पूर्वमें मुरशिदाबाद और बर्द्धमान, तथा दक्षिणमें वर्द्धमान। यहां १७५६ वर्गमील स्थान है। इसके गेजेटियरमें जैन धर्मके महत्वकी इतनी ही बात मिली है कि यह प्राचीन राढ़ देशका एक भाग है। इसीके एक भागको वज्रभूमि भी

कहते हैं। श्री महावीर भगवानने यहां विहार किया था। यह जिला मौर्य्यवंशी राजाओंके हाथमें था। फिर क्रमसे गुप्तवंशके और शशांक तथा हर्षवर्द्धनके हाथमें रहा।

प्राचीन श्रावक जाति।

यहां रामपुर हाट (जो ईस्ट इण्डिया रेल्वेके निकट है) से पश्चिम खारोना नामका ग्राम है। इस ग्राममें 'सराक' नामकी एक जाति है। इस जातिमें मत्स्य तथा मांसका व्यवहार नहीं है। बालक भी मत्स्य व मांस नहीं खाते। इनके नामोंके आगे उपाधि है–हद, रक्षित, दत्त, प्रामाणिक, सिंह, दास इत्यादि। वर्तमानमें यह जाति शूद्रके समान एक मासका आशौच पालते हैं। हिन्दू धर्मके व्रत नियम करते हैं। इनकी प्रधान जीविका कृषि कर्म है। कोई २ तांत बुनने व दुकान करते हैं। विधवा गण ब्राह्मणोंकी विधवाओंकी तरह एकादशी व्रत करती हैं। नवशाख गणके पुरोहितों द्वारा इनके पूगाव संस्कार होते हैं। इनके गोत्र हैं "गौतमऋषि, अंग्रऋषि, अनन्तऋषि, काश्यप और आदिदेव इत्यादि" इस जातिकी संख्या बहुत अल्प रह गई है। वीरभूममें इस जातिके लोग नलेरपुर, सन्थाल पर्गनाके सादिपुर, शिलाजुड़ि, जयतारा, बासकुलि, बिलकान्दि, हाथजुड़ि आदि स्थानोंमें हैं। अल्प संख्या होनेसे विवाह सम्बन्धकी कठिनता रहती है। यह वर्णन हमने वीरभूम वर्णन बंगला पुस्तक महाराज कुमार श्रीयुक्त महिमा निरञ्जन चक्रवर्ती तत्त्वभूषण महोदय द्वारा सम्पादितसे लिया है तथा आगे जो कुछ लिखेंगे वह इसी पुस्तकके आधारसे लिखेंगे। इस पुस्तक खण्ड २ के सफा १०२ में इस सराक जातिको

बौद्ध कहा है सो ठीक नहीं है। ये गृहस्थ जैन हैं जिनको श्रावक कहते हैं।

वीरभूममें जैन चिह्न।

वीरभूममें भग्न अन्श बहुत स्थल हैं—वीरभूम विवरणमें जो अनुसंधानका वर्णन लिखा है, वह खोज अधिकतर हिन्दू धर्मकी अपेक्षासे हुई है। जैन चिह्नके खोजकी चेष्टा नहीं रक्खी गई है। इससे जैन चिह्नोंका उल्लेख बहुत ही कम मिलता है। जो कुछ कहीं दिया है वह इस तरह है—

मल्लारपुर—ई० इ० रेलवे लूप लाइनके मल्लारपुर स्टेशनसे कुछ दूर दक्षिण पश्चिम मल्लारपुर ग्राम है जो मौहेश्वर थानेके अन्तर्गत है। इस ग्रामके पूर्व शिव पहाडी नामकी एक पहाडी है इसपर बहुतसे भग्न पत्थर हैं तथा यह तपोभूमि मालूम होती है। यहां सिद्धेश्वरी-देवीका मंदिर है। इस मंदिरके बाहर दक्षिण तरफ एक पुरुषाकार मूर्ति है। इसको लेखकने जैन **तीर्थंकर श्री महावीरकी** मूर्ति माना है। पद्मासन आकार है। फोटो सफा १८८ में दिया है वह साफ नहीं है। इससे पद्मासनमें शंका होती है। यहांके लोग बटुक भैरवके नामसे पूजते हैं।

(**नोट**—इसकी जांच होनी चाहिये) लेखक लिखते हैं कि "हमको मालूम होता है कि यदि खोज की जाय तो राढ देशमें जैन स्मारकोंके बहुतसे चिह्न आविष्कारमें आ सकते हैं।"—

मुरशिदाबाद जिलेमें तांतिबिरल गाम (नलहाटी आजिमगञ्ज रेल शाखासे कुछ दूर नहीं है) के पास एक ग्राम है। जिसका नाम

है जिनदीधि । इन दोनों गावोंके मध्यमें एक बडा तालाब है जिसको जिनदीधि कहते हैं। इसके पूर्व ग्रामके पश्चिम एक टीले पर बहुतसे पाषाण खण्ड पडे हैं उनमेंसे एक मूर्तिका आसन मिला है। जिनपर चरणोंका भाग अंकित है तथा नीचे श्रृंगालका चिह्न तथा एक लेख है, जो घिस गया है । केवल श्री चेतनदेवी लिखा है। यह शायद जैन मूर्तिका भाग हो और चेतनदेवी प्रतिष्ठा करानेवाली हो ।

थाना मौड़ेश्वरसे पांच मील उत्तर नन्दी ग्राम है। उसीके आसपास शिवग्राम है। वहां एक मूर्तिका मुख मिला है जिसका फोटो सफा १६१ पर दिया हुआ है। यह निश्चयसे किसी विशाल जैन मूर्तिका ही मस्तक है।

वीरभूममें पता लगानेसे बहुतसे जिन मंदिर व प्रतिमा खंडित तथा अखंडित मिल सकती हैं, क्योंकि यहां जैन धर्म प्राचीन कालसे मौजूद था। तथा वर्तमानमें भी श्रावक जाति पाई जाती है। जैन समाजकी तरफसे अच्छी तरह खोज किये जानेकी जरूरत है। यदि खोज की जायगी तो बहुतसे चिह्न मिलेंगे।

---

(१८)

मुरशिदाबाद जिला।

(गंजेटियर छपा सन् १९१४)

इस जिलेकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

उत्तर पूर्व गंगा या पद्मा नदी नदिया और राजशाहीसे इसे

भिन्न करती है, दक्षिणमें नदिया और वर्द्धमान्, पश्चिममें वीरभूम तथा संथल परगना है। भूमि २१४४ वर्गमील है।

यहां अब भी दि० श्वे० जैन आजमगञ्जमें हैं जो पुराने समयसे बसे हुए हैं। इनकी संख्या ७६५ है। अधिकतर श्वे० हैं। प्राचीन मंदिर एक काशिम बाजारमें है। यह श्री नेमिनाथजीका मंदिर है जिसकी मुरशिदाबादके जैन रक्षा करते हैं। इसमें एक बगलकी कोठरीमें दिगम्बर जैन मूर्तियां भी हैं जिनका हमने स्वयं दर्शन किया है।

जहां अब यह मंदिर है वहां कोई जैनी नहीं है, परन्तु कहते हैं कि यहां जैनियोंकी बहुत बड़ी संख्या रहती थी।

---

(१९)

बांकुरा जिला।

(गजेटियर छपा सन् १९०८)

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

उत्तर पूर्व वर्द्धमान जिला और दामोदर नदी, दक्षिणमें मिदनापुर, पश्चिममें मानभूम है। यहां २६२१ वर्गमील भूमि है—

गजटियरमें जैन सम्बन्धी बहुत ही कम वर्णन है—

केवल बहुलारामें एक बहुत ही सुंदर जैन मंदिरका वर्णन है। जिसमें एक खड्गासन नग्न मूर्ति है। यह स्थान बांकुरासे १ मील दारिकेश्वर नदीके दाहने तटपर है। कनिंघम साहब ८वीं सर्वे रिपोर्टमें लिखते हैं "The Jain image is a clear proof of the existence of the Jain religion in these

parts in old times." यहां यह जैन मूर्ति इस बातको साफर प्रगट करती है कि प्राचीन समयमें इन भागोंमें जैनधर्मका अस्तित्व था।

क्योंकि यह जिला मानभूमके पूर्वमें है अतएव जैसे मानभूममें अनेक भग्न जैन मंदिर हैं व अब भी प्राचीन श्रावक हैं वैसे इस जिलेमें भी होने चाहिये। इस जिलेमें अच्छी तरह खोज किये जानेकी जरूरत है। नकशेसे मालूम होता है कि यहां हदपुर, रतनपुर नामके स्थान हैं जो जैन सरीखी सभ्य जातिके वास्तव्य मालूम पड़ते हैं।

---

(२०)

मिदनापुर जिला।

(गजेटियर छपा सन् १९११)

इस जिलेकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

उत्तरमें बांकुरा, दक्षिणमें बंगालकी खाड़ी, पूर्वमें हुगली और हौड़ा जिला, पश्चिममें बालासोर, मयूरभञ्ज, सिंहभूम और मानभूम। यहां ५१४५ वर्गमील स्थान है।

इस जिलेके गेजेटियरमें सफा २० में जो इतिहास दिया है वह यह है कि महाराज चन्द्रगुप्तके पोते अशोकने सन् ई० से २६१ वर्ष पूर्व जब कलिङ्ग देशको विजय किया तब यह जिला मौर्य्य राज्यका भाग हो गया। बंगालकी खाडी पर ताम्रलिप्त एक मुख्य स्थान था। वहां पर राजा अशोकने एक स्तूप बनवाया था। जब मौर्य्यवंशके अंतिम राजा बृहद्रथको उसके सेनापतिने सन् ई० से १८० वर्ष पूर्व मारडाला, तब मौर्य्य राज्य छिन्न भिन्न होगया। तब कलिङ्ग देश फिर

स्वतन्त्र हो गया। तब मिदनापुर प्रायः कलिङ्ग देशके राजाओंके आधीन हो गया। सन् ४०५-११ में इस प्रान्तका राज्य गुप्तवंशके चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यने किया था।

(**नोट**-मानभूममें विक्रमादित्य कृत किले आदि मिलते हैं।)

हुइनसांग चीनयात्री जो सातवीं सदीमें आया था इस जिलेका वर्णन करता है उसके वाक्योंका सार यह है 'यहांके लोग धनाढ्य तथा उन्नतिशील थे-उनका व्यापार खूब चलता था। जवाहरात व अन्य आश्चर्य-कारी वस्तुओंका बहुत संग्रह था। यह लोग कुछ बौद्ध थे कुछ साधु।"

(**नोट**-जिससे जैन मतधारीका बोध होता है।)

सफा २२० में कथन है—

तामलुक-पासकुए रेलवे ष्टेशनसे १६ मील है। इसकी दूसरी तरफ सामने हौड़ा है बीचमें गंगाकी खाड़ी है ऐसा नकशेसे विदित होता है। इस जिलेमें ऐतिहासिक दृष्टिसे यह एक बहुत ही उपयोगी स्थान है। इसीका प्राचीन नाम **ताम्रलिप्त** है-यह नाम इस राज्यका भी था जिसकी यह राजधानी थी, तथा जिनके अधिकारमें था उन लोगोंको भी ताम्रलिप्त कहते थे। इस ताम्रलिप्तका वर्णन जैन बौद्ध और ब्राह्मणोंके संस्कृत ग्रंथोंमें बहुधा आया है-इससे यह सिद्ध है कि यह ताम्रलिप्त ईसाके जन्मके पहलेसे मौजूद था। दशकुमार चरित्रमें मित्रगुप्तके वर्णनमें दीप लिप्तकी बहुत प्रशंसा की है कि यह समुद्रके निकट है और गंगाजीसे दूर नहीं है।

मानभूमि गजटियरसे मालूम हुआ कि ताम्रलिप्तसे पटने तक घाटाल, विशुनपुर, चातना, रघुनाथपुर, तेलकुपी, झरिया, राजौली

(गया) और राजग्रह होकर एक मार्ग चलता था—दूसरा मार्ग बनारस तक गया था। बीचमें मार्ग पालगंज तक भी गया था जहांसे पालगंजको मार्ग मुड़ा था। उसके मध्यमें कतारासपुर, छर्रा, पार, चचोंगढ और दामोदर नदीके निकटके ग्रामोंमें जैन मंदिरोंके चिह्न हैं—इससे यह बात झलकती हैं कि जैन यात्रीगण बंगालवाले ताम्रलिप्तसे पालगंज तक आते हैं। नकशेसे रास्ता साफ मालूम होता है। ताम्रलिप्तसे श्री सम्मेदशिखाजी अर्थात् पारशनाथ पहाड़की यात्रा करनेको बंगालके वड़ीसाके अनेक श्रावकगण इसी मार्गसे आते थे। इससे मार्गमें जैन मंदिरोंका होना स्वाभाविक है।

यह मार्ग बहुत प्राचीनकालसे जारी था। २००० वर्ष पहले भी श्री शिखरजीकी यात्रा करनेका यह मार्ग था ऐसा झलकनेसे यह बिलकुल निश्चय होजाता है कि इस श्री सम्मेदशिखरजीकी भक्ति सदासे चली आ रही है तथा यही सम्मेदशिखर है दूसरा नहीं है। इस पर्वतका प्रत्येक स्थान पूज्यनीय होनेसे सिवाय २० टोंकोंके जहांसे २० तीर्थंकर इस कालमें मोक्ष गए और अधिक मंदिर व आडम्बर प्राचीन श्रावकोंने बनाना उचित नहीं समझा जिससे यह तपोभूमि पूर्ण शांति और ध्यानके लिये उपयोगी बनी रहे—पहाड़पर नौकर चाकर भी न रहें—मंदिरादि बनते तो नौकरोंको रक्षार्थ रखना उचित था—चरणचिह्नोंकी रक्षार्थ खुली हुई घुमटियोंकी रक्षाके लिये किसी आदमीकी जरूरत नहीं पड़ती है।

ऐसी दशामें ताम्रलिप्त अवश्य जैन श्रावकोंसे अधिक बसा हुआ होगा व मुनियोंके भी दर्शन होते होंगे—ताम्रलिप्तसे सीधा मार्ग

श्री शिखरजी होकर बनारस तक गया है। बीचमें राजगृह आदि भी आ जाते हैं।

ताम्र लिप्तका वर्णन जैन पुराणोंमें—

श्रीयुत आचार्य विद्यानंदिके शिष्य मल्लिभूषण इनके शिष्य ब्रह्मनेमिदत्तने **आराधना कथाकोश** संस्कृतमें रचा है। यह ग्रन्थ जैनमित्र कार्यालय हीराबाग बम्बईने वीर सं० २४४० में प्रकाशित कराया है। इसमें दसवीं कथा श्री **जिनेन्द्रभक्त** सेठकी है। यह सेठ बडा पक्का जैनी था, धनी था, यह **ताम्रलिप्त** नगरमें रहता था। जैसा कहा है—" अथास्ति **गौड़ देशे च ताम्रलिप्ता** मिधापुरी यत्र संतिष्ठते लक्ष्मीर्दान पूजा यशस्करी " ॥ ६ ॥

इस सेठके घरमें चैत्यालय था, जिसमें रत्नमई प्रतिमा थी जैसा कहा है—" श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रस्य महायत्नेन रक्षिता छत्रत्रयेण संयुक्त प्रतिमारत्न निर्मिता " ॥ ११ ॥

यह सेठ श्रीपार्श्वनाथके निर्वाणके पीछे और श्रीमहावीरस्वामीके समयमें या कुछ पहले हुआ है जिससे प्रगट है कि २५००-२६०० वर्ष पहले यह **ताम्रलिप्त** जैनियोंसे भरपूर था। दूसरी कथा नं० ६८ श्री विद्युच्चर मुनिकी है। यह मुनि दक्षिणके अभीरदेशके बेना नदी पर बसेवेना तट नगरके राजा जितशत्रु व रानी जयवतीका पुत्र था। कारण पा मुनि हो विहार करते २ **ताम्रलिप्त**में आए। यहां एक देवीके उपसर्गको सहकर ऐसा ध्यान किया कि इसी **ताम्रलिप्त**में विद्युच्चरने केवलज्ञान पाकर मोक्ष पाई। जिसके श्लोक ये हैं:—

तत्र वैराग्यभावेन संप्रविश्य स्वमंदिरम् सुधीविद्युच्चरः सोपि जैन-

तत्व विदाम्बरः ॥ ३५ ॥ राज्य दत्वा स्वपुत्राय जिनस्नपन पूर्वकम्। भूरिराज सुतैः सार्द्धमुनिर्भूताविचक्षणः ॥ ३६ ॥ मुनि पञ्चशतं युक्तं विरक्तोमदनादिषु ताम्रलिप्त पुरीं प्राप्तो मोह कर्दमैः ॥ ३८ ॥ शुक्लध्यानप्रभावेन हत्वा कर्मारी रुञ्चयम् केवलज्ञानमुत्पाद्य संप्राप्तो मोक्षमक्षयम् ॥ ४४ ॥

यह तामलुकका स्थान सिद्धक्षेत्र है, क्योंकि यहांसे साधुओंने मोक्ष पाई है। यह विद्युच्चर भी श्री पार्श्वनाथ और महावीरस्वामीके मध्यमें हुआ झलकता है।

---

(२१)

हुगली जिला।

(गै० छपा १९१२)

इस जिलेकी चौहद्दी इस प्रकार है—

उत्तरमें वर्द्धमान, दक्षिणमें हौडा, पूर्वमें हुगली नदी, पश्चिममें वर्द्धमान। यहां भूमि १२२३ वर्गमील हैं।

इस जिलेके गजेटियरमें सफा २६ पर यह कथन है—यहां निर्ग्रंथ अर्थात् जैन अवश्य वास करते थे। इस जिलेमें नीचे लिखे स्थान प्राचीन हैं। इनमें मन्दिर अवश्य होने चाहिये। पाण्डुआ, नयासराय, त्रिवेणी सातगांव, मन्दारन तथा कटसी माल।

चिन्सुरामें अभीतक एक प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है जिसकी पूजाका प्रबन्ध कलकत्तेके जैनियों द्वारा पुजारीसे कराया जाता है। हुगली जिलेके प्राचीन स्थानोंकी खोज की जानी चाहिये।

कोन नगरमें कलकत्तासे १० मील हुगली नदीके दाहिनी तट पर एक मूर्ति श्री पार्श्वनाथजीकी मिली थी जो एक फुटके अनुमान ऊँची है। पद्मासन पाषाणकी है। सात फणका मंडप है। यह कलकत्ता अजायबघरमें बिराजमान है। बाबू बिहारीलाल बोस द्वारा म्यूजियममें दी गई। नं० Cr. l. a है (अब यह मिलती नहीं है।)

---

(२२)

खुलना जिला।

(गैज० छपा १९०८)

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—

उत्तरमें जेसोर, दक्षिणमें सुन्दर बेन्स, पूर्वमें बाकर गंज, पश्चिममें २४ पर्गना। यहां भूमि २०७७ वर्ग मील है।

जैन मतके सम्बन्धमें गजटियरमें इस तरह वर्णन है कि सातवीं शताब्दीमें हुईनसांग चीन यात्री आया था उसने इस जिलेके सम्बन्धमें लिखा है कि यहां इस समय ३० बौद्धोंके मठ है जिनमें करीब २००० पुजारी रहते हैं। तथा १०० हिन्दुओंके मंदिर है जब कि नग्न मुनिगण भी जिनको निर्ग्रन्थ कहते हैं बहुत हैं "while the naked ascetics called the Nirgranthas are also numerous."

कपिलमुनि कबदक नदीके तट पर तालाके दक्षिण ६ मील यह ग्राम है। इसका सम्बन्ध इ. बी. एस. रेलवेके झींगर गात्रा स्टेशनसे है। यहां एक अगरा स्थान है जहां दो तीन टीले हैं तथा तला और चान्द खालीके मध्यमें बहुतसे टीले हैं जो १४ मिलके मध्यमें है

इस दूरीमें प्राचीन निवासियोंके स्थान हैं। वास्तवमें यहां प्राचीन वसनेवाले थे जो अब बिलकुल लुप्त होगए।

नोट—अवश्य यहां इशारा जैन लोगोंसे है जो पहले यहां वास करते थे।

जब सातवीं शताब्दीमें अनेक निर्ग्रन्थ मुनि विहार करते थे तब यहां जैन जाति व जैनधर्मका कैसा चमत्कार होगा सो ध्यानमें लेने योग्य है। इस जिलेमें भी खोज किये जानेकी आवश्यक्ता है।

---

(२३)

जेस्सोर जिला।

(गजे० छपा १९१२)

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

उत्तर पश्चिम नदिया जिला, दक्षिणमें खूलना, पूर्वमें फरीदपुर है–स्थान यहां २९०९ वर्ग मील है।

इस जिलेके गेजेटियर सफा २१ में जो इतिहास दिया हुआ है उससे प्रगट होता है कि सन् ई० ६३९ में हुइनसांग चीन यात्री आया था। वह इस ओर दो बडे राज्योंका वर्णन करता है–समतत और ताम्र लिप्त। समततको बङ्ग भी कहते हैं। इसकी राजधानी जेसोर थी। समततके संबंधमें वह लिखता है कि यहांकी आबोहवा कोमल है। लोगोंकी आदतें योग्य हैं। लोग काले वर्णके छोटे कदके हैं परन्तु स्वभावके दृढ़ तथा विद्याकी प्राप्तिमें चतुर हैं। तथा यहां बहुतसे निर्ग्रंथ नग्न साधू पाए जाते हैं।

---

(२४)

मालदा जिला।

(गजेटियर छपा सन् १९१८)

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

उत्तरमें पुरनिया, उत्तर पूर्व दैनाजपुर, दक्षिण पूर्व राजशाही, पश्चिममें गङ्गा नदी और मुरशिदाबाद। स्थान १८९९ वर्गमील है।

इस जिलेके इतिहास सफा ११ में यह वर्णन है कि यह जिला प्राचीन पाण्डुआ और गौड प्रांतोंकी हद है। सेन वंशका राज्य वरेन्द्रभूम कहलाता था उसीमें पाण्डुआ पड़ता है। यह प्राचीन इतिहासमें पौण्ड्रवर्द्धन राज्यका भाग था। जिसका मुख्य नगर पौंड्र नगर था। हुइनसांग चीन यात्री इस पौंड्र नगरका घेरा ५ मीलका बताते हैं तथा पौंड्रवर्द्धन राज्यका घेर ७०० मीलमें लिखते हैं।

नोट-कथा ग्रंथोंमें कई स्थलोंमें पौंड्रवर्द्धनका वर्णन आया है इससे वहां प्राचीन कालमें जैनियोंका होना सम्भव है। इस जिलेमें भी खोज करनेकी जरूरत है।

महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य्य सन् ई० ३५० वर्ष हुए हैं उन्हींके समयमें पौंडवर्द्धन देशमें भद्रबाहु पञ्चम श्रुत केवलीका जन्म हुआ था। ऐसा ब्रह्म नेमिदत्त कृत आराधना कथाकोशकी ६१ वीं कथामें वर्णित है।

जैसे—पुड्रू वर्द्धन सद्देशेकोटी मुनि सन्नगरे वरे राजा पद्मरथो धीमान् सोमशर्मा पुरोहितः ॥ २ ॥ श्री देवी भामिनी तस्य तयो पुत्रो वभूव च। भद्रबाहु गुणैर्भद्रो भद्रमूर्ति भवोत्तमः ॥ ३ ॥ गोवर्द्धन मुनेः

पार्श्वमुपागत्य द्रुतं सुधीः। दीक्षामादाय जैनेन्द्रीं स्वर्गमोक्षसुखप्रदाम् ॥ १२-१३ ॥ भाव यह है कि पौंड्रवर्द्धन देशके कोटीपुरमें राजा पद्मरथके पुरोहित सोमशर्माके पुत्र भद्रबाहुजीने बाल्यावस्थामें गोवर्द्धन गुरुके शिष्य हो जैनेन्द्री दीक्षा मुनिकी ली।

इसी देशके सम्बन्धकी ८६ वीं कथा सोमशर्म और विष्णुदत्त मुनियोंकी है। इसी देशके कोटीपुरमें सोमशर्म ब्राह्मण थे। विष्णुदत्तने ब्राह्मणसे कर्ज लिया था उसे न चुका करके ही वैराग्य आनेसे मुनि हो गये थे। एक दिन तपस्या कर रहे थे। विष्णुदत्तने पिछला कर्जा मांगा तब अपने गुरु वीरभद्राचार्यसे आज्ञा लेकर मसानमें तप करने लगे उस समय एक देवीने उनसे धर्म सुन कर कहा कि आपके दीक्षाके लोचके बालोंको मैं कर्जमें देती हूं, देवीने उनको रत्न बना लिया, विष्णुदत्त इस प्रभावको देखकर स्वयं मुनि हो गया तथा जो रत्न देवीने दिये थे, उसके धनसे कोटि तीर्थ नामका एक बड़ा ही सुन्दर जिनमन्दिर बनवाया गया। इस जिनमंदिरका पता मालदा या राजशाहीमें लगना चाहिये। कुछ संस्कृत श्लोक ये हैं—

अथात्र भरते क्षेत्रे पुन्ड्राख्य विषये शुभे देवीकोट्ट पुरे जातो ब्राह्मण. सोमशर्म वाक् ॥ २ ॥ तद्धनै श्रावकैश्चापि कोटि तीर्था-भिधानकः चैत्यालयो जिनेन्द्राणां कारितः शर्मदायकः ॥ २४ ॥

विदित होता है, कि यह देश श्रावकोंके प्रभावसे दीप्तमान था। श्री महावीर स्वामीके पहलेसे ७०० ई० तक तो जैनियोंका प्रभाव बराबर बना रहा ऐसा झलकता है।

कनिंघमसाहबने एक प्राचीन भूगोल Ancient geography

पुस्तक बनाई हैं, जो सन् १८७१ में छपी है, उसमें चीन यात्री हुईनसांगकी यात्राका वर्णन है, जो उसने सन् ई० ६८९ से ६९५ तककी थी। मंदारगिरि और चम्पासे नदी पार कर उत्तरकी तरफ वह पोंड्रवर्द्धन देशमें गया। तथा फिर कामरूपया उसीमें होकर लौटा है, तब समतत (जेसोर) और ताम्र लुक (ताम्रलिप्त) होकर वह उदया उड़ीसामें गया।

---

(२५)

राजशाही जिला।

(गेजेटियर छपा सन् १९१६)

इस जिलेकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

उत्तरमें दैनाजपुर और वोगरा, उत्तर पूर्व वोगरा और पवन, पश्चिममें मालदा, दक्षिणमें गङ्गा जो इसको मुरशिदाबादसे जुदा करती है। स्थान यहां २२३४ वर्ग मील है।

इसका प्राचीन इतिहास यह है, कि यहां भी पौंड्रवर्द्धन राज्यके चिह्न हैं। बौद्धोंके **अशोक अवादान** ग्रन्थमें लिखा है, कि राजा अशोकने नग्न साधुओंको (प्रायः ये जैन होंगे) पौंड्रवर्द्धनमें इसलिये मरवा डाला कि उन्होंने बौद्धोंकी पूजामें झगड़ा किया था।

(नोट—राजा अशोक पहले जैन थे फिर बौद्ध हुए, संभव है ऐसा किया हो अथवा उनकी प्रशंसामें बौद्धने ऐसा लिख दिया हो)

हुइनसांग चीन यात्रीने इस प्रदेशको सन् ई० ६४० में देखा था। वह लिखता है कि यह प्रदेश ऐश्वर्य्यवान, लोगोंसे भर

पूर है—यहां बहुत सरोवर तथा बाग फैले हुए हैं। आबोहवा साधारण उचित है। भूमि नीची तथा तर है। फसलें खूब फलती है। यहांके निवासी विद्याकी प्रतिष्ठा करते है और तीनों धर्मों (जैन बौद्ध और हिन्दू) में बटे हुए हैं।

The early jains called Digamber Nirgranthas were very numerous"

प्राचीन जैन जिनको दिगम्बर निर्ग्रन्थ कहते हैं यहां बहुत बड़ी संख्यामें है। यहां १०० देवमंदिर हैं इसमें कुछ शैव और शाक्तोंके हैं। २० बौद्ध मठ हैं जिसमें अनुमान २००० साधु हैं। कनिङ्गम साहबने इसकी राजधानी महास्थानको बोगरासे उत्तर ७ मील पर माना है।

सफा ४६ पर यहांकी प्राचीनताका वर्णन जैनमत सम्बन्धी यह दिया हुआ है कि यहां वरेन्द्र रिचर्स सोसायटी है जिसने बहुत बढ़िया पाषाणकी कलाके नमूने ढूंढे हैं जिनको कि रामपुर बोलियाकी पबलिक लाइब्रेरीमें देखा जा सक्ता है, इनहीमें जैनियोंके १६ वें तीर्थंकर श्री शांतिनाथ भगवानकी एक मूर्ति भी है जिसको मन्दैल स्थानपर खोदनेसे पाया गया है-

नोट—इस मूर्तिका फोटो मंगाया गया है। यह मूर्ति खड्गासन २ फुटकी बहुत ही मनोज्ञ अखण्डित है। दोनों ओर चौवीसी भी अङ्कित है।

अन्य बहुतसे पाषाण ८०० ई० से १२०० ई० तकके हैं। जब इस देशमें पाल और सेन वंश राज्य कर रहे थे।

प्राचीन स्मारकोंके खोजका सबसे बढ़िया स्थान वरिन्द है, जहां बहुतसे मध्यकालीन पाषाणके स्मारक मिले हैं—इस जिलेका इतिहास अभी तक अप्रगट है। यह बात निश्चित है कि किसी समय यह एक बहुत उन्नतिशील देश था, और बहुत ही ऊंचे चारित्रके लोग रहते थे। हमने वरेन्द्र रिचर्स सोसायटीके मन्त्रीसे पत्र व्यवहार किया तो मालूम हुआ कि यह शातिनाथ स्वामीकी मूर्ति मन्दैल पोष्ट गौदावरीमें सन् १९१० में एक वृक्षकी जड़मेंसे खोदकर निकाली गई थी—यह मूर्ति बिलकुल अखण्डित है—उसीके पास एक प्राचीन तालावके खोदनेसे भी कुछ मूर्तियां मिली हैं, इनमें दो जैन मूर्तियां हैं—यह स्थान पौंड्रवर्द्धन देशमें शामिल था इससे यहां और भी जैन स्थान मिल सक्ते हैं।

तथा यह मालूम हुआ कि प्राचीन वरेन्द्रको अब वरिन्द कहते हैं—यहां एक प्रान्त है जो गङ्गाजीके उत्तरमें है। पश्चिममें नदी महानन्द है, पूर्वमें नदी करतेय है—कुल राजशाही इसमें गर्भित है—यहां टीलोंकी शकलमें बहुतसे प्राचीन स्थान हैं—आसपास जो पत्थर मिले हैं उनमें जैन, बौद्ध, हिन्दू तीनोंके चिह्न हैं। प्राचीन स्मारकोंको सरकारने रक्षित कर लिया है। उन प्राचीन स्थानोंमेंसे एक पहाड़पुर है जो सबसे ऊंचा टीला है। इसके खुदवानेके लिये १००००) दस हजार रुपया खर्च करनेका प्रबन्ध हुआ है।

अन्य दो मूर्तियां—राजशाहीकी सोसाइटीसे अन्य पाषाण-मूर्तियोंके फोटो आए हैं जिनका वर्णन इस प्रकार है—

(१) नं० ३२६—बहुत ही मनोज्ञ एक पाषाण पट, नीचे या तो पिता माता हैं या इन्द्र इन्द्राणी हैं गोदमें तीर्थंकर हैं, यह जन्मका दृश्य है। ऊपर मस्तक पर पद्मासन ध्यानाकार भगवान चमरेन्द्रो सहित विराजमान है, यह तप या ज्ञान अवस्थाका दृश्य है। नीचे आसन पर ७ मूर्तियें देवों या मनुष्योंकी हैं सबसे नीचे कुछ लेख हैं।

(२) नं० ३२७—यह उसी जातिका वैसा ही पाषाण बड़ा है, ऊपरका प्रतिमाका भाग टूट गया है, बीचमें माता पिता या इन्द्र इन्द्राणी बहुत ही सुन्दर रचित हैं।

---

(२६)

रंगपुर जिला।

(गेजेटियर छपा सन् १९०८)

इस जिलेकी चौहद्दी इस प्रकार है—

उत्तर पूर्वमें जलपाइ गुरी, उत्तर पश्चिम कूचविहार, दक्षिणमें बोगरा, पूर्वमें ब्रह्मपुत्र नदी। यह स्थान ३४८६ वर्ग मील है।

यहांके गजेटियरमें एक प्राचीन जैन मन्दिरका वर्णन सफा १४८ पर है। यह मन्दिर महीगञ्जमें है जो सबसे पुरानी जगह समझी जाती है। यह मंदिर ताजहाट जमीदारके मकानके निकट है, इसका प्रबन्ध पत्र द्वारा पूछनेसे मालूम हुआ कि मुरशिदाबादके जैनियोंके द्वारा होता है।

---

(२७)

चटगांव जिला ।

(गेजेटियर छपा सन् १९०८)

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—

उत्तरमें टिपरा स्टेट, दक्षिणमें अराकान, पश्चिममें बङ्गालकी खाडी, पूर्वमें चटगांव पहाडी, यह स्थान २५६७ वर्ग मील है।

यहां **सीताकुण्ड**—चटगांवसे उत्तर २४ मील बहुत ही पवित्र स्थान माना जाता है। यहां सम्भवनाथ और चन्द्रनाथकी टोंके पहाडी पर हैं, तथा चरण पादुकाएं हैं, जिनके सम्बन्धमें लिखा है, कि बौद्ध लोग पूजा करते हैं। ये दोनों जैन तीर्थङ्कर मालूम होते हैं इससे इस स्थानकी खोज की जानी चाहिये। शायद यह जैनियोंका पवित्र स्थान हो।

श्री खंडगिरि उदयगिरिकी हाथी गुफाके शिलालेखकी नकल।

इस लेखका सार यह है कि-इन दोनों पर्वतोंको पहले कुमारी और कुमार कहते थे। तथा राजा खारवेल जिसका नाम भिक्षुराज भी प्रसिद्ध था, इस देशमें बहुत प्रसिद्ध होगया है। यह बड़ा शूरवीर, युद्धकुशल, दानवीर और धर्मवीर था। यह अपनी प्रजाका बड़ा हितैषी व समदृष्टि था। जैनधर्ममें गाढ़ श्रद्धा थी। राजगृहमें जाकर ऋषभदेव भगवानकी मूर्तिकी प्रतिष्ठा की थी। इसका नाम महा-मेघवाहन भी प्रसिद्ध था। यह कलिङ्ग देशका अधिपति भी कहलाता

था । यह सन् ईसवीके दोसौ वर्ष पहले हुआ ऐसा श्री केशवलाल हर्षदराय ध्रुव महाकविका मत है । राजा खारवेलका जीवनचरित्र जो उदयगिरिकी हाथीगुफामें है, उन अक्षरोंमें परन्तु प्राकृत भाषामें खुदा हुआ है जो सन् ईसवीके पहले जारी थे । नीचे हम इस लेखकी प्राकृत नकल और हिन्दी अनुवाद देते हैं जिससे हमारे पाठकोंको एक जैन क्षत्रिय राजाका सच्चा और निर्बाध जीवनचरित्र मालूम हो ।

राजा खारवेल अर्थात् भिक्षुराजाका चारित्र सच्चा जीता जागता जैन क्षत्रिय राजाका कर्तव्य कर्म है । इस क्षत्रिय राजाने इस खण्डगिरी पर्वतपर एक जैन साधुओंकी परिषद बुलाकर जैनधर्मकी प्रभावनाका बड़ा भारी कार्य किया था ।

हाथीगुफाके लेखमें १७ लाइनें हैं । नीचे एक २ लाइनका प्राकृत देकर नीचे उसका अर्थ दिया जाता है—

(१) नमो अरहन्तानं नमो सवसिधानं वेरेन महाराजेन महा मेघवाहनेन चेतराजवसवधेन पसथसुलभलखने (न) चतुरन्तलठान-गुनोपगतेन कलिङ्गाधिपतिना सिरिखारवेलेन—

भावार्थ—अर्हंतोंको नमस्कार, सर्व सिद्धोंको नमस्कार, वीर महाराज महा मेघवाहन, चैत्रराज वंश वर्धन, प्रशस्त शुभ लक्षण, (चतुरन्तरस्थान गुणोपगतेन, (अर्थ स्पष्ट नहीं) कलिङ्ग देशके अधिपति श्रीखारवेल ने—

(२) पन्दर सवसानि सिरि कुमारसरीरवता कीडिताकुमार-कीडका ततो लेखरूपगणनाववहारविधिविसारदेन सवविजावदातेन नव-

-वसानि योवराजं पसासितं संपुणचतुविसतिवसो च दानवधमेन सेसयो-चनाभिविजयवत्तिये।

भावार्थ—पन्द्रह (१५) वर्ष श्रीकुमार शरीरने कामक्रीड़ामें विताए, फिर लेखन (लिपि विद्या) गणना (गणित) व्यवहार विधिमें विशारद व सर्व विद्याओंमें कुशल होकर नौ (९) वर्षतक युवराज पदमें प्रशंसा पाई। पूरे चौवीस वर्षके होनेपर दान और धर्मसे शेष यौवनके आधिपत्य और वृत्तिके लिये—

(३) कलिङ्गराजवंसपुरिसयुगे महाराजाभिसेचनं पापुनाति भिसितमतो च पधमवसे वातविहगोपुरपाकारनिवेसनं पटिसंखारयति कलिंगनगरिं खिबीर च सीतलतडागपाडियो च बधापयति सवुयान-पतिसंठापनं च।

भावार्थ—कलिङ्गके राजवंशके पुरुष युगमें महाराजपदके अभिषेकसे (उक्तराजा) पवित्र हुए। अभिषेक होनेके पहले ही वर्षमें हवासे टूटे हुए कोटद्वार, महल तथा मकानोंको सुधराया तथा कलिङ्ग नगरीकी छावनी और तालावकी रक्षिका बंधाई तथा सर्व बागोंकी स्थापना।

(४) कारयति। पनतीसाहि सतसहसेहि पकातिये रजयति दितिये च वसे अभितयिता सातकणि पछिमदिसं हयगजनर रधवहुलं दंड पठापयति कुसंबानं खतियं च सहायवता पतं मसिकनगरं (?) ततिये च पुन वसे।

भावार्थ—कराई ३५ लाखसे, (इस तरह) लोगोंको प्रसन्न किया। दूसरे वर्ष रक्षा करनेके लिये शतकर्णीके पास हाथी, घोड़े,

मनुष्य, रथसे भरी हुई सेना पश्चिम दिशाको भेजी तथा कौसाम्बीके (पयागके पास जहां श्री पद्मप्रभुका जन्म हुआ है) क्षत्रियोंकी सहायतासे मासिकनगर (यहां ध्रुव महाशयने नासिकनगर लिखा है) को प्राप्त किया। और फिर तीसरे वर्षमें।

(५) गन्धर्ववेदबुधो दंपनतगीतवादितसंदसनाहि उसवसमाजकारापनाहि च कीडापयति नगरीं इथ चवुथे वसे विजाधराधिवास अहतं पुवं कलिङ्ग पुवराजनमंसितं··· धमकूटस·· (पू) जित च निखितछत—

भावार्थ—गांधर्व विद्या (गानविद्या) में प्रवीण होकर गीत नृत्य वादित्र दिखलाकर तथा उत्सवके समाज कराकर नगरीमें क्रीडा कराई। इसी तरह चौथे वर्षमें विद्याधरोंसे सेवित तथा (पूर्वमें) कलिङ्गके राजयोंसे वन्दनीय···· धर्मकूट (यह किसी जिन मंदिरका नाम है) की पूजाकी तथा चढाए हुए छत्र—

(६) भिंगारेहि तिरतन सपतयो सबरठिकभो जकेसादेवे दसयपति पंचमें च दानि वसे नदराजतिवससतं ओघाटितं तनसुलीयटावाठी पनाडि नगरं पवेस · ···राजसेयसं दंसणतो सवकरावणं—

भावार्थ—और भृङ्गारोंसे सर्व राष्ट्रके सरदारोंको मानों तीन रत्न (सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र) की श्रद्धा प्रदर्शित कराई, फिर पांचवें वर्ष नन्दराजाका त्रिवर्ष–सत्र (यह या तो कोई दानघर हो जहां तीन वर्ष तक दान मिलता था। या कोई तालाब हो जहां तीन वर्ष तकका पानी रह सके) उद्घाटित किया (खोला)। तनसुलियाके रास्तेसे

एक नहर नगरमें प्रवेश कराई।.........राजेके ऐश्वर्य प्रदर्शनार्थ उत्सव किया।

(७) अनुगहअनेकानि सत सहसानि विसजति पोरजानपदं सतमं च बसं पसासतो च......सवोतुकुल......अठमे च वसे...

भावार्थ—अनेक लाखों अनुग्रह शहर और गांवके लोगोंपर किये, सातवें वर्षमें राज्य किया.........आठवें वर्षमें... .....

(८) घातापयिता राजगहनपं पीडापयति एतिनं च कमपदान पनादेनसवत सेनवाहने विपमुचितु मधुरं अपयातो नवमे च (वसे?) ....पवरको

भावार्थ—मार करके राजग्रहीके राजाको पीड़ा उपजाई। इनके (हाथी घोड़ोंके) पगके पड़नेके शब्दसे उसका लश्कर सर्व ठिकाने सेनाके वाहनोंको छोड़कर मथुरामें चला गया तथा नवमें वर्ग .... एक सुन्दर

(९) कपरुखो हयगजरथसह यत सवं घरावसध ' ' यस वागहनं च कारयितुं बमणानं रढिमारं ददाति अरजम्हि——

भावार्थ—कल्पवृक्ष (का दान किया) घोड़े, हाथी, रथोंके साथ तथा हावसथों'' '''जिसका ग्रहण करानेमें ब्राह्मणोंको जिसमें बहुत ऋद्धि दी (पहले जैन ब्राह्मण बहुत ते अब भी दक्षिणमें हैं) अरहन्त—

(१०) ....(निवा) सं महाविजयपासादं कारयति अठतिससतसहसेहि दसमें च वसे....मारघवसपठान '''कारापयति'''' उयतानं च मनोरधानि उपलभता,

भावार्थ—· · · का निवास महाविजय नामका मन्दिर कराया। अड़तीस (३८) लाख रुपयोंसे। और दसमें वर्षमें·········भारत-वर्षकी यात्राको निकला। ·····बनवाया। जो तय्यार थे उनके मनोरथको जानकर—

(११)···ल पुवराजनिवेसितं पाथुडं गदंभनगले नकासयति जनपदभावनं च तेरस वससताक दमामरदेहसंघातं वारसमं च व (सं) ·हस ···हि वितासयन्तो उतरापथराजानो

भावार्थ—गर्दभ नगरमें पूर्व राजाओंसे नियत किये हुए मार्गकारको और जनपद भावन (?) को जो तेरह सौ वर्षसे था दूर किया। और बारह वर्षमें उत्तरके मार्गके राजाओंको त्रास देनेवाले—

(१२) मगधानं च विपुलं भयं जनेतो हथिसगङ्गायं पाययति मगधं च राजानं बहु पटिसासिता पादे वन्दापयति नन्दराज नितस अगजिनस ··गहरतन पडिहारहिस मगधं वसिवु नयरि,

भावार्थ—मगधके लोगोंको बहुत भय उत्पन्न कराके हाथियोंको गङ्गाका पानी पिलाया और मगधके राजाको कड़ी शिक्षा देकर अपने पैरों नवाया। नन्दराजासे ली हुई पथम जिन (ऋषभदेव) · ··· मगधमें एक नगर बसाकर—

(१३)·· विजाधरु लेखिलं वरानि सिहरानि निवेसयति सतवसदान परिहारेन अमूतमकरियं च हथी नादानपरिहार · ·· आहरापयति इधं सतस—

भावार्थ—··· ·· विद्याधरोंसे कोरे हुए आकाशको छूनेवाले

शिखर हैं जिसमें उसको स्थापित किया। सातवर्षके दानका त्यागकर व अद्भुत और पहले नहीं कभी किया ऐसा हाथियोंका दान किया··· · लिवाया इस प्रकार सौ · ··

(१४)· ··सिनोवसिकरोति तेरेसमे वसे सुपवतवि जयिचको केमारी पवते अरहतोप। (निवासे) वाहिकाय निसिदियायं यपजके ·· ·· कालेरिखिता–

भावार्थ– ·· रहनेवालोंको वश किया। तेरहवें वर्षमें अपने विजयी राजचक्रको बढाया। कुमारी पर्वत (खण्डगिरि) के उपर अर्हत मंदिरके बाहरकी निषद्या (नसिया) में....काले रक्ष्य—

(१५) .(स) कतसमायो सुविहितान च सबदिसानं (यानिनं) तापसा (नं ?). संहतानं (?) अरहन्तनिषिदियासमीपे पभारे वरकारुसमथ (थ) पतिहि अनेकयोजनाहि.... .

भावार्थ–........सर्व दिशाओंके महा विद्वानों और तपस्वी साधुओंका समाज एकत्र किया था।........अर्हतकी निषद्याके पास पर्वतके शिखर ऊपर समर्थ कारीगरोंके हाथोंसे.......

(१६)....पटालके चेतके च वेडुरियगभे थमे पतिठापयति पनंतरिय सठि वस सते राजमुरिय काले वोछिने च चोयठअगसतिकुतरियं चुपादयति खेमराजा वधराजा स भिखुराजा इ (ना) मराजा पसन्तो सनतो अनुभवतो (क) लाणानि–

भावार्थ—पतालक, चेतक और वैडूर्यगर्भमें स्तम्भ स्थापित कराये। मौर्य्य राज्य कालके (१६५) एकसौ ६५ वें वर्षमें एकसौ चौसठ बीतनेपर क्षेमराजका पुत्र वृद्धिराज उसका पुत्र भिक्षुराज नामका राजा शासन करता हुआ व कल्याणोंको अनुभव करता हुआ (उसने यह) कराया।

(१७) गुणविसेस कुसलो सवपासण्डपूजको ..तानसक्कारकारको (अ) पतिहतचकिवाहनवलो चकघरो गुतचको पसन्तचको राजसिवंसकुलविनिगतो महाविजयो राजा खारवेलसिरि ॥

भावार्थ—गुण विशेषोंमें, कुशल, सर्व पाषण्ड पूजक (यहां पाषण्ड शायद मुनिभेषको लिया है) का संस्कार करानेवाला जिसका वाहन और बल अजेय्य है, चक्रका धारी है, तथा शांत राज्यका भोक्ता, राज्य राजर्षिके वंशके कुलमें उत्पन्न हुआ, महा विजयी राजा खारवेलश्री।

नोट—यह लेख हमको "प्राचीन जैन संग्रह" प्रथम भागसे प्राप्त हुआ जिसको गुजराती भाषा तथा बालबोध लिपिमें श्वे० मुनि जिनविजयजीने बड़े परिश्रमसे संग्रह करके लिखा था। यह "पुस्तक" आत्मानन्द जैन सभा भावनगरसे ।।) में प्राप्त होती है। इस पुस्तकमें फोटो लिया हुआ लेख भी है, इस लेखमें स्वस्तिकका भी चिह्न है। इस पुस्तकमें इन्हीं खण्डगिरि उदयगिरिके और भी कई छोटे २ शिलालेखोंका उल्लेख है तथा इस बड़े लेखकी संस्कृत छाया व बहुत कुछ ऐतिहासिक वर्णन है।

उड़ीसा देशके श्रावकोंकी खोज।

ज्योतिप्रसादजी जैनी उपदेशक सुनपत निवासी द्वारा उड़ीसा देशमें मालूम हुआ कि बंकी थानेमें रङ्गनी तांती नामसे प्रसिद्ध श्रावक हैं। यह सब शाकाहारी हैं। ये इधरके ब्राह्मणोंके हाथका पानी भी नहीं पीते हैं, इनकी संख्याका नकशा आगे दिया है। दूसरी जाति सराक तांती है। ये केवल कपड़ा बुननेका काम करते हैं। कोई २ खेती भी करते हैं। इनमें दो भेद हैं, एक वे जो अपने हाथसे खेती नहीं करते, दूसरे वे जो स्वयं खेती करते हैं। ये सब लोग गूलर आदि कीड़ेवाले फल तथा गोभी व आलू नहीं खाते हैं। प्याज नहीं खाते हैं; इनके बड़े श्रीखण्डगिरिकी यात्राको जाते थे। इनमें उड़िया भाषाके विद्वान भी हैं। एक दलके यहां आचार्य भी हैं। ये लोग कहते हैं कि हम वर्द्धमान (बंगाल) से आकर बसे हैं। जिनमें आचार्य नहीं है, वे लोग स्वयं विवाह करलेते हैं, इनके पास एक विवाह कांड एक शुद्धि क्रिया दो छोटे २ ग्रन्थ हैं, जिनकी नकल करानेका उद्योग किया जा रहा है। इन दोनो पक्षोंमें परस्पर बेटी सम्बन्ध नहीं है। ये लोग भी काटा शब्द सुनकर भोजन छोड़ देते हैं। इन सबकी सूची नीचे प्रमाण है।

उड़ीसाके श्रावकोंकी संख्याका नक्शा।

नंबर	नाम ग्राम	पोष्ट	जिला	घर संख्या	श्रावक	मुख्याओंके नाम।
						यह लोग अपने हाथसे खेती नहीं करते आचार्य भी नहीं हैं
१	रुगडी	जाकी	कटक	५०	२००	हरी महापात्र, अनादिपात्र, उच्छे दत्त।
२	नुवापटना	तिगरपा	कटक	५०	२००	जगन्नाथ महापात्र, होडा सातो, रम्मे पात्र साधो वरधन।
३	मानयाबन्ध	बडम्बा	कटक	३००	२०००	रघुनाथ महात्र, राजू महापात्र, नटोवर अहिबुधी, वालूकिङ्कर सामन्त्री,
४	जरीपाटना	बडम्बा	कटक	७	४०	कुर्शण देवता, राम पात्र,
५	वाली विसाई	तेडाकुण्डा	कटक	१००	४००	उदयनाथ पात्र, गया प्रमानिक धुर्व पात्र,

नोट—इनसे नीचे लिखे हुए श्रावकोंके आचार्य भी है और वह लोग खेतीवाडी भी अपने हाथसे करते हैं।

नंबर	नाम ग्राम	पोष्ट	जिला	घर संख्या	श्रावक	मुख्याओंके नाम।
६	ताराबोई	खुर्दा	पुरी	२५	१७०	भगवत आचार्य कान्हू बहरा बन्सी बहरा
७	मंगलपुर	पिपली	,,	५०	३००	माधो आचाज, हरी बहरा, सत्यवादी, दास अति बहरा

८	ओचिन्हा पाटना	पीपली	पुरी	१७	९० अनन्त दास, यादी साओ, भगवान दास,
९	रायेगपुर	पीपली	,,	१	५ अनन्तपुरुष्टी,
१०	गिरिमा	पीपली (पोहराज पुर)	,,	१८	१०० कङ्काली आचार्ज, गोरङ्गपुरष्टी, लोकनाथ साओ।
११	काजी साई	पीपली	,,	४	२० निम्ही वहरा, वनमाली मोहता,
१२	नुवागढ़ (रथपुर स्थमपुर)	पीपली	,,	२२	१२५ गोदई मोहला, गोदई बहरा, गोविन्द बहरा, सुवल मोहला,
१३	चुटया नागपुर	पीपली	,,	१८	१०० चिन्तामणि मोहला, चक्र मोहला, फकोरी
१४	मोलागां	गोप	,,	१५	८० अनन्त बहरा, रघु साओ, शत्तुघश साओ,
१५	मीहटी	वाली पाटना	,,	२०	१०० ओचित पुरशटी, वामन पुरशटी, कोंठरी दास;
१६	कालथी पीटा	,,	,,	२	५ भगवत मोहल, मोरगी मोहला,
१७	ओदला वाद	,,	,,	१	५ वानगी साओ
१८	वनमाली पुर	,,	,,	१	५ बाजौ बहरा
१९	पधान पटना	,,	,,	८	५० कूर्शण आचार्ज, सत्यवादी दास, सिन्धुदास, वांछानिधि दास,

२०	पतित पावन पटना	बाली पाटना	पुरी	१०	६०	गोपीदास, बांछानिधी दास, भीमोदास
२१	उमृतमुन्दी पटना	,,	,,	७	३०	आनन्दो साओ, कुशण वहरा, किनई येसाखे
२२	होडामाई	,,	,,	१	५	कुशण मोहला,
२३	दियान पटना	,,	,,	४	२०	आनन्दो साओ, वीनो साओ, वानगी साओ
२४	लक्ष्मी जना रघन पटना	,,	,,	५	३०	वांछानिधि पुरशटी, नौली पुरशटी, भीमो पुरशटी

नोट—नीचे रंगूनी तातीकी खानापूरी लिखी है। आकोंकी पूरी हो गई है।

नंबर	नाम ग्राम	पोस्ट	जिला	घर	संख्या	रंगूनी तांतीके मुख्याओंके नाम।
१	तुलसीपुर	वांकी	कटक	३२	१५०	थन्नी काओ, नीलो वहरा, कपलो राउत
२	पोगडीह	वाघमारी	कटक	२०	७०	नाहौ वहरा, भीको साओ, गणेश मौहला, मौघो
३	वाली पहाड़	वद्धीशवर	कटक	६०	२५०	वेशनओवहरा, आनन्दो साओ, ईश्वर साओ
४	वद्दी शवर	खास	कटक	१०	५०	लक्खनसाओ गिरधारी वहरा खेतरावहरा
५	काला पत्थर	वद्दीशवर	कटक	१५	७०	उच्छौ वहरा, हाडूदास, दीनबन्धु साओ,
६	धौला पत्थर	वेगुन्पा	पुरी	२५	१२५	गिरधारी साव, कपलो साव, विघोधरसाव

७	कोंई फुलया	खंडपुडा	कटक	२००	९००	भागवत साओ, दाडूनायक, इशवर नायक
८	जामूं साई	खंडपुडा	कटक	४०	१७५	वनमाली निसंकर, कपलो महापात्र,
९	कांकड़ा जोडी	वडमवा	कटक	२५	१००	घन्नौ सांत्रा, दासो सांत्रा
१०	कानपुर	वडमवा	कटक	१२	५०	सर्न वहरा, खाली साओ, बांके चौधरी,
११	विनदानीमां	तिगरया	कटक	४०	२००	घनो साओ, गोरङ्ग सुदी
१२	अढाई गुडी	वडमवा	कटक	२५	१४०	
१३	तराबोई	खुरदा	पुरी	६०	३५०	तिगराजसेनेपती, वांछानिधि दास, आनन्दो साओ।
१४	चन्द्रकोट	सत्यवादी	,,	२	१०	भोजी वहरा, लोकनाथ वहरा,
१५	कविराज पुर	,,	,,	४	२०	मोहन वहरा, बन्धू वहरा, मदन वहरा,
१६	वालीसाई	,,	,,	२	१०	आनन्दो साओ, नियानन्द साओ,
१७	सत्यवादी	खास	,,	१३	६७	मनसा साओ, भीकोउच्छो, पुरशटी
१८	मुकमा	सत्यवादी	,,	४	२५	आनन्दो साओ, राजन पुरशटी
१९	बालकाटी	खास	,,	२२	१२५	कृपासिंधु पुरशठो, नाथो साओ
२०	रथजमा	बालकाटी	,,	१६	९०	जगन्नाथ साओ, भवानीपुरशटी

२१	हीरापुर	बालकाटी	पुरी	४	२०	कुर्शण नाइक, गोदइ वहरा
२२	वारोमाण	बालकांटो	,,	१५	८०	दीनबन्धु, सेनापाली, बोन्धु साओ
२३	वनमालीपुर	वाली पटना	,,	१५	८०	आनन्दो, पुरशटी, वनमाली, दास
२४	मोधूवन	बालचन्द्रपुर	कटक	२०	१००	आनन्दो, साओ, भवानीसाओ
२५	काकुडकूद	वोरवां	,,	२५	१००	गोपीनाथ नायक
२६	मालदा	कोविलपुर	,,	१००	४५०	मोनीसाओ,
२७	नाहङ्गपाटना	धर्मशाला	,,	५०	३००	साधूसाओ
२८	खमान	धर्मशाला	,,	४	२०	सपनी तेनापति
२९	वाली विपई	खास	,,	३६०	२०००	वरोगीसेनापती, कर्ण पुरशटी

नोट—इन लोगोंमें गोत्र चार हैं—अनन्त देव, खेमदेव, काश्यप, कृष्णदेव, परन्तु यह इन सबको मालूम नहीं है। सराकतांती और रंगूनीतांतीका आपसमें बेटी व्यवहार नहीं होता। ये लोग अपने हाथसे खेती नहीं करते, आचार्य भी नहीं है।

संग्रहकर्ता—ज्योतिप्रसाद जैन सिंहल।